RAHE ILM (HINDI)

हुसूले इल्मे दीन में मसरूफ़ त़ालिबे इल्मों के लिये एक रहनुमा तह़रीर

تعلیم المتعلم طریق التعلم

तर्जमा बनाम

राहे इल्म

मुअल्लिफ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی

(अल मुतवफ़्फ़ा 610 हिजरी)

المدینۃ العلمیۃ

(دعوتِ اسلامی)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सत्र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = ثھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

हुसूले इ़ल्मे दीन में मसरूफ़ त़ालिबे इ़ल्मों के लिये एक रहनुमा तह़रीर

تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم

तर्जमा बनाम

राहे इ़ल्म

: मुअल्लिफ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى
(अल मुतवफ़्फ़ा 610 हिजरी)

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए तराजिमे कुतुब

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना देहली-6

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

नाम किताब : تَعۡلِیۡمُ الۡمُتَعَلِّم طَرِیۡقَ التَّعَلُّم

तर्जमा बनाम : राहे इल्म

मुअल्लिफ़ : हज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَلِی

मुतर्जिम : मौलाना अ़ली असग़र अल अ़त्तारिय्युल मदनी مَدَّظِلُّہُ الۡعَالِی

इशाअ़ते अव्वल : जनवरी, 2017

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 6 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम, 1430 हि. ह़वाला : 165

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصۡحَابِہٖ اَجۡمَعِیۡنَ

तस्दीक़ की जाती है कि किताब تَعۡلِیۡمُ الۡمُتَعَلِّم طَرِیۡقَ التَّعَلُّم

"राहे इल्म" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

24-11-2009

E mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

नम्बर	उ़नवान	सफ़्हा
1	इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	3
2	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	4
3	पहले इसे पढ़ लीजिये	6
4	इ़ल्मो फ़िक़्ह की ता'रीफ़ और इस के फ़ज़ाइल का बयान	11
5	इ़ल्म की ता'रीफ़	16
6	फ़िक़्ह की ता'रीफ़	16
7	दौराने ता'लीम कैफ़िय्यते निय्यत का बयान	17
8	इ़ल्म, असातिज़ा और शुरका का इन्तिख़ाब और साबित क़दमी इख़्तियार करने का बयान	22
9	इ़ल्म का इन्तिख़ाब	22
10	उस्ताज़ का इन्तिख़ाब	23
11	साबित क़दमी	25
12	शरीके दर्स का इन्तिख़ाब	27
13	इ़ल्म व अहले इ़ल्म की ता'ज़ीम का बयान	29
14	ता'ज़ीमे उस्ताज़	29
15	ता'ज़ीमे किताब	33
16	ता'ज़ीमे शुरका	35
17	मेहनत, मुवाज़बत और कुव्वते इरादा का बयान	37
18	बलग़म कम करने के अस्बाब	51
19	सबक़ को शुरूअ़ करने के त़रीक़े, सबक़ की तरतीब और इस की मिक़्दार का बयान	54
20	अहम्मिय्यते तवक्कुल का बयान	69

www.dawateislami.net

21	तह़सीले इल्म के मौज़ूं औक़ात का बयान	73
22	शफ़्क़त व नसीह़त की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत का बयान	73
23	त़रीक़ए इस्तिफ़ादा का बयान	78
24	दौराने ता'लीम अहम्मिय्यते परहेज़गारी का बयान	81
25	क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा को बढ़ाने वाली अश्या का बयान	85
26	इल्म को भूल जाने के अस्बाब में से चन्द येह हैं	88
27	रिज़्क़ को ह़ासिल करने और रोकने और इसे बढ़ाने और घटाने वाली अश्या का बयान	89
28	रिज़्क़ में तंगी लाने वाले अस्बाब	89
29	रिज़्क़ में कमी करने वाले अस्बाब में येह अफ़्आ़ल भी शामिल हैं	90
30	रिज़्क़ में इज़ाफ़ा करने वाले अस्बाब	91
31	वोह वज़ाइफ़ जो रिज़्क़ को बढ़ाते हैं उन में से चन्द एक येह हैं	93
32	उ़म्र में इज़ाफ़ा करने वाले अस्बाब	95
33	मआख़िज़ो मराजेअ़	96
34	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब का तआ़रुफ़	97

इल्म सीखने से आता है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह गौ़रो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।"

(المعجم الكبير،الحديث:٧٣١٢،ج١٩،ص٥١١)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

“राहे इल्म राहे नजात है” के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की “14 निय्यतें”

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ

या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :-

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ कुरआनी आयात और ﴾6﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾7﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾8﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾9﴿ जहां जहां “**अल्लाह**” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां “**सरकार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾11﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾12﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾13﴿ इस ह़दीसे पाक **تَهَادَوْا تَحَابُّوْا** एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۷، الحدیث:۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरजए ज़ैल **छे**[1] **शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

---

1 .....ता दमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) **10** शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّه (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम । (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह़ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक **1425** हि.

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

ज़ेरे नज़र किताब تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم हज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की मुख़्तसर व जामेअ़ तस्नीफ़ है जो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इल्मे दीन के मौज़ूअ़ पर मुरत्तब फ़रमाई । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तुरकिस्तान के मश्हूर शहर **"ज़रनूज"** में पैदा हुवे, इसी वज्ह से ज़रनूजी कहलाए। ज़रनूज, ख़ूजन्द के बा'द मावराउन्नहर के क़रीब वाक़ेअ़ है। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शख़्सिय्यत इल्मो फ़ज़्ल, ज़ोह्दो तक़्वा से इबारत थी । उ़लमाए अह्नाफ़ में यगानए रोज़गार शुमार किये जाते थे । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को साहिबे हिदाया शैख़ुल इस्लाम बुरहानुद्दीन अबुल ह़सन अ़ली बिन अबू बक्र मुरग़ीनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى से शरफ़े तलम्मुज़ ह़ासिल था । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल तक़रीबन 610 हिजरी में हुवा ।

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी इस किताब में **"एक त़ालिबे इल्म को कैसा होना चाहिये"** और त़लबे इल्म में त़लबा को किन किन मुश्किलात व मसाइब का सामना हो सकता है और इन मुश्किलात व मसाइब से किस त़रह़ बराअत मिल सकती है इन का बयान किया है । त़लबा परहेज़गारी, सलीक़ा शिआ़री और क़नाअ़त पसन्दी और इल्मे दीन के ह़ुसूल में साबित क़दमी कैसे ह़ासिल कर सकते हैं इन उमूर को भी ज़िक्र किया है क्यूंकि शुरूअ़ में जब त़लबा जामिआ़त में दाख़िला लेते हैं तो बहुत अच्छी अच्छी निय्यतों और ढेर सारे जज़्बात के साथ इल्मे दीन ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो जाते हैं मगर आह ! आहिस्ता आहिस्ता इन निय्यतों और जज़्बात में शैत़ान त़ालिबे इल्म को सुस्ती

www.dawateislami.net

दिलाना शुरूअ़ करता है जिस की वज्ह से बा'ज़ त़लबा को इल्मे दीन के हुसूल में साबित क़दमी नहीं रहती और यूं वोह इल्मे दीन से दूरी इख़्तियार करने लगते हैं। मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी इस किताब में शैत़ान के इन वारों से किस त़रह़ नजात मिले उन बातों को भी ज़िक्र किया है। नीज़ आप इस किताब में बे शुमार नसीह़तों और हुसूले इल्म के सुनह़री उसूलों को पाएंगे اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ। इस किताब की इफ़ादियत के पेशे नज़र शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हर ख़ासो आ़म को इस के मुत़ालए की अक्सर तरग़ीब देते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهعَزَّوَجَلَّ मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने अकाबिरीन व बुज़ुर्गाने अहले सुन्नत की माया नाज़ कुतुब को ह़त्तल मक़्दूर जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ शाएअ़ करने का अ़ज़्म किया है। चुनान्चे, इस किताब का तर्जमा भी इस्तिफ़ादए आ़म्मा की ग़रज़ से पेश किया जा रहा है। येह किताब नई कम्पोज़िंग, अह़ादीस की ह़त्तल मक़्दूर तख़रीज, अ़रबी व फ़ारसी इबारात और अश्आ़र की दुरुस्ती, नीज़ मआख़िज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त के साथ मुज़य्यन है। **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** के मदनी उ़लमाए किराम की येह मेह़नत क़ाबिले सताइश व लाइक़े तह़सीन है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की येह पेशकश क़बूल फ़रमा कर जज़ाए जज़ील अ़त़ा फ़रमाए, इन्हें मज़ीद हिम्मत और लगन के साथ दीन की ख़िदमत का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए।

آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُلِلّٰہِ الَّذِیۡ فَضَّلَ بَنِیۡ آدَمَ بِالۡعِلۡمِ وَالۡعَمَلِ عَلٰی جَمِیۡعِ الۡعَالَمِ،وَالصَّلَاۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِالۡعَرَبِ وَالۡعَجَمِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصۡحَابِہٖ یَنَابِیۡعُ الۡعُلُوۡمِ وَالۡحِکَمِ.

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने इल्मो अ़मल के सबब बनी आदम को तमाम आ़लम पर फ़ज़ीलत दी । दुरूदो सलाम हो अ़रबो अ़जम के सरदार मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की आल और अस्ह़ाब رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن पर जो कि इल्मो ह़िक्मत के सरचश्मे हैं ।

मैं ने अपने ज़माने के बहुत से त़लबा को देखा जो इल्म ह़ासिल करने के लिये कोशिश तो करते हैं लेकिन मक़्सूद तक नहीं पहुंच पाते और यूं वोह इल्म के फ़वाइदो समरात से मह़रूम रह जाते हैं । इस का सबब येह होता है कि वोह तह़सीले इल्म के त़रीक़ों में ग़लती कर जाते हैं और इन की शराइत़ को छोड़ बैठते हैं और वोह शख़्स जो रास्ता अपनाने ही में ग़लती कर बैठे वोह भटक जाता है और मक़्सूद ख़्वाह थोड़ा हो या ज़ियादा उस तक नहीं पहुंच सकता ।

पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिख़ारा करने के बा'द मैं ने इरादा किया और मुनासिब समझा कि मैं त़लबा के लिये तह़सीले इल्म के उन त़रीक़ों को बयान करूं जो मुख़्तलिफ़ किताबों में मेरी नज़र से गुज़रे हैं या जिन को मैं ने अपने क़ाबिल असातिज़ा से सुना है इस उम्मीद पर कि इल्म की त़रफ़ रग़बत करने वाले मुख़्लिस त़लबा मेरे लिये क़ियामत के दिन कामयाबी व नजात की दुआ करेंगे ।

www.dawateislami.net

चुनान्चे, मैं ने इस किताब का नाम भी تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم रखा है। "या'नी त़लबा को त़रीक़ए ता'लीम सिखाना।" इस सिलसिले में मैं ने इस किताब को चन्द फ़ुसूल पर तक़्सीम किया है। जिन की इजमाली तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

﴿1﴾.....فَصْلٌ فِیْ مَاهِيَةِ الْعِلْمِ وَالْفِقْهِ وَفَضْلِه

(इल्मो फ़िक़्ह की ह़क़ीक़त और इस के फ़ज़ाइल का बयान)

﴿2﴾.....فَصْلٌ فِی النِّيَّةِ فِیْ حَالِ التَّعَلُّم

(दौराने ता'लीम कैफ़िय्यते निय्यत का बयान)

﴿3﴾.....فَصْلٌ فِیْ اِخْتِيَارِ الْعِلْمِ وَالْاُسْتَاذِ وَالشَّرِيْكِ وَالثَّبَات

(इल्म, असातिज़ा, शुरकाए दर्स और साबित क़दमी के इख़्तियार करने का बयान)

﴿4﴾.....فَصْلٌ فِیْ تَعْظِيْمِ الْعِلْمِ وَاَهْلِه

(इल्म व अहले इल्म के एह़तिरामो ता'ज़ीम का बयान)

﴿5﴾.....فَصْلٌ فِی الْجِدِّ وَالْمُوَاظَبَةِ وَالْهِمَّة

(मेह़नत, मुवाज़बत और कुव्वते इरादा का बयान)

﴿6﴾.....فَصْلٌ فِیْ بِدَايَةِ السَّبَقِ وَتَرْتِيْبِهٖ وَقَدْرِه

(सबक़ को शुरूअ़ करने के त़रीक़े, सबक़ की तरतीब और इस की मिक़्दार का बयान)

﴿7﴾.....فَصْلٌ فِی التَّوَكُّل

(अहम्मिय्यते तवक्कुल का बयान)

﴿8﴾.....فَصْلٌ فِیْ وَقْتِ التَّحْصِيْل

(तह़सीले इल्म के मौज़ूं औक़ात का बयान)

www.dawateislami.net

﴾9﴿......فَصْلٌ فِی الشَّفْقَةِ وَالنَّصِیْحَة

(शफ़्क़त व नसीहत की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत का बयान)

﴾10﴿......فَصْلٌ فِی الْاِسْتِفَادَة

(त़रीक़ए इस्तिफ़ादा का बयान)

﴾11﴿......فَصْلٌ فِی الْوَرَعِ حَالَ التَّعَلُّم

(दौराने ता'लीम परहेज़गारी का बयान)

﴾12﴿......فَصْلٌ فِی مَایُوْرِثُ الْحِفْظَ وَفِی مَایُوْرِثُ النِّسْیَان

(क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा को बढ़ाने और निस्यान पैदा करने वाली अश्या का बयान)

﴾13﴿......فَصْلٌ فِی مَایَجْلِبُ الرِّزْقَ وَمَایَمْنَعُهٗ وَمَایَزِیْدُ فِی الْعُمْرِ وَمَا یَنْقُص

(रिज़्क़ को ह़ासिल करने और रोकने और इसे बढ़ाने, ख़त्म करने और घटाने वाली अश्या का बयान)

وَمَاتَوْفِیْقِی اِلَّابِاللّٰہِ عَلَیْہِ تَوَکَّلْتُ وَاِلَیْہِ اُنِیْب

मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है, मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं।

ता'रीफ़ और सआ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दतमन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیرالبیضاوی،پ۲۲،الاحزاب،تحت الآیۃ:۷۱،ج۴،ص۳۸۸)

www.dawateislami.net

इल्मो फ़िक़्ह की ता'रीफ़ और इस के फ़ज़ाइल का बयान

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ وَّمُسْلِمَةٍ या'नी इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है।"(1)

ऐ अ़ज़ीज़ ता़लिबे इल्म ! तुझे मा'लूम होना चाहिये कि हर मुसलमान पर तमाम उ़लूम का ह़ासिल करना फ़र्ज़ नहीं है बल्कि एक मुसलमान पर उन उमूर के मुतअ़ल्लिक़ दीनी मा'लूमात ह़ासिल करना फ़र्ज़ है जिन से उस का वासिता़ पड़ता है। इसी वज्ह से तो कहा जाता है : اَفْضَلُ الْعِلْمِ عِلْمُ الْحَالِ وَاَفْضَلُ الْعَمَلِ حِفْظُ الْحَالِ "या'नी अफ़्ज़ल तरीन इल्म मौजूदा दरपेश उमूर से आगाही ह़ासिल करना है और अफ़्ज़ल तरीन अ़मल अपने अह़वाल की ह़िफ़ाज़त करना है।"

पस एक मुसलमान पर उन उ़लूम का जानना बहुत ज़रूरी है जिन की ज़रूरत उस को अपनी ज़िन्दगी में पड़ती है ख़्वाह किसी भी शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखता हो। एक मुसलमान के लिये पहला फ़र्ज़ तो नमाज़ ही है। लिहाज़ा हर मुसलमान पर नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ इतने मसाइल का जानना फ़र्ज़ है कि जिन से उस का फ़र्ज़ अदा हो सके और इतने मसाइल का इ़ल्म ह़ासिल करना वाजिब है जिन की आगाही से वोह वाजिबाते नमाज़ को अदा कर सके क्यूंकि ज़ाबिता़ येह है कि वोह मा'लूमात जो अदाएगिये फ़र्ज़ का सबब बनें उन्हें ह़ासिल करना फ़र्ज़ है और वोह मा'लूमात जो अदाएगिये वाजिब का ज़रीआ़ बनें उन्हें ह़ासिल करना वाजिब है। इसी त़रह़ रोज़े से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने का मुआ़मला है नीज़ अगर साह़िबे माल है तो ज़कात का भी

1 .....سنن ابن ماجه، كتاب المقدمة، باب فضل العلماء، الحديث: ٢٢٤، ج١، ص١٤٦۔
شرح الشفا للقاري، القسم الثالث، الباب الثالث، ٢/ ٥٢١۔

www.dawateislami.net

येही ज़ाबिता है और अगर कोई ताजिर है तो मसाइले ख़रीदो फ़रोख़्त जानने के मुतअ़ल्लिक़ भी येही हुक्म है कि इतने मसाइल का जानना फ़र्ज़ है जिन से फ़र्ज़ अदा हो सके और इतने मसाइल का इल्म ह़ासिल करना वाजिब है कि जिन से वाजिब अदा हो सके।

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد की बारगाह में अ़र्ज़ की गई कि "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "ज़ोह्द" के उ़नवान पर कोई किताब तस्नीफ़ क्यूं नहीं फ़रमाते?" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल से मुतअ़ल्लिक़ एक किताब तस्नीफ़ कर चुका हूं।"

मत़लब येह है कि ज़ाहिद वोही है जो तिजारत करते वक़्त अपने आप को मकरूहात व शुब्हात से बचाए और इसी त़रह़ तमाम मुआ़मलात और सन्अ़त व ह़िरफ़त में मकरूहात व शुब्हात से बचना ही तो ज़ोह्द है। जब एक शख़्स किसी काम में मश्ग़ूल हो जाता है तो उस पर इतने इल्म का ह़ासिल करना फ़र्ज़ हो जाता है कि जिस के ज़रीए़ वोह उस फ़े'ल में ह़राम के इरतिकाब से बच सके। नीज़ ज़ाहिरी मुआ़मलात की त़रह़ ही बात़िनी अह़वाल या'नी तवक्कुल, तौबा, ख़ौफ़े ख़ुदा, रिज़ाए इलाही वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने का हुक्म है। क्यूंकि बन्दे को मज़कूरा क़ल्बी उमूर से भी हर वक़्त वासित़ा पड़ता रहता है। लिहाज़ा इस पर अह़वाले क़ल्ब से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल का इल्म ह़ासिल करना भी फ़र्ज़ है।

इल्म की अ़ज़मत और इस का शरफ़ किसी पर भी मख़्फ़ी नहीं क्यूंकि इल्म एक ऐसी सिफ़त है जो इन्सान के साथ ख़ास है और इल्म के इलावा दूसरी ख़स्लतें मसलन जुरअत, शुजाअ़त, सख़ावत, कुव्वत और शफ़्क़त वग़ैरा इन्सान व ह़ैवान दोनों में पाई जाती हैं और इल्म ही वोह सिफ़त है जिस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को तमाम फ़िरिश्तों पर फ़ज़ीलत बख़्शी और मलाइका को आप عَلَیْہِ السَّلَام के सामने सजदए ता'ज़ीमी करने का हुक्म दिया।

इल्म को इस वज्ह से शराफ़त व अ़ज़मत हासिल है कि इल्म तक़्वा तक पहुंचने का वसीला है और तक़्वा की वज्ह से बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर बुज़ुर्गी और अबदी सआ़दत का मुस्तहिक़ हो जाता है। इस ह़क़ीक़त को किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुख़ातब कर के इन अश्आ़र में बयान किया।

تَعَلَّمْ فَاِنَّ الْعِلْمَ زَیْنٌ لِاَھْلِہٖ وَفَضْلٌ وَّعُنْوَانٌ لِّکُلِّ الْمَحَامِد
وَکُنْ مُسْتَفِیْدًا کُلَّ یَوْمٍ زِیَادَۃً مِنَ الْعِلْمِ وَاسْبَحْ فِیْ بُحُوْرِ الْفَوَائِد
تَفَقَّہْ فَاِنَّ الْفِقْہَ اَفْضَلُ قَائِدٍ اِلَی الْبِرِّ وَالتَّقْوٰی وَاَعْدَلُ قَاصِد
ھُوَ الْعِلْمُ الْھَادِیْ اِلٰی سُنَنِ الْھُدٰی ھُوَ الْحِصْنُ یُنْجِیْ مِنْ جَمِیْعِ الشَّدَائِد
فَاِنَّ فَقِیْھًا وَّاحِدًا مُتَوَرِّعًا اَشَدُّ عَلَی الشَّیْطَانِ مِنْ اَلْفِ عَابِد

तर्जमा : (1).....इल्म ह़ासिल करो क्यूंकि इल्म अहले इल्म के लिये ज़ीनत है और इल्म उस के लिये फ़ज़ीलत और इस बात पर दलील है कि अहले इल्म ख़िसाले महमूदा का मालिक है।

(2).....हर रोज़ इल्म से ज़ियादा से ज़ियादा फ़ाएदा ह़ासिल करो और फ़वाइद के समुन्दरों में तैरते रहो।

(3).....और फ़िक़्ह ह़ासिल करो क्यूंकि फ़िक़्ह ही नेकी और तक़्वा की राह दिखाने वाला सब से बेहतरीन रहनुमा और येही क़रीब तरीन रास्ता है।

(4).....येही वोह इल्म है कि जो रुश्दो हिदायत की राह दिखाता है। येह वोह क़ल्आ़ है जो तमाम मसाइब से नजात देता है।

(5).....बेशक एक परहेज़गार फ़क़ीह, शैत़ान पर एक हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा भारी है।

www.dawateislami.net

इल्म जिस त़रह़ तक़्वा तक पहुंचने का ज़रीआ़ है इसी त़रह़ बाक़ी औसाफ़ मसलन सख़ावत, बुख़्ल, बुज़दिली, बहादुरी, तकब्बुर, आ़जिज़ी, इफ़्फ़त, कन्जूसी और इसराफ़ वग़ैरा की पहचान और इन में तमीज़ करने का ज़रीआ़ भी इल्म ही है । मज़कूरा अख़्लाक़ में से तकब्बुर, बुख़्ल, बुज़दिली और इसराफ़ ह़राम व ममनूअ़ हैं । लिहाज़ा इन अश्या के मुस्बत और मन्फ़ी पहलूओं से आगाही पर ही इन अश्या से बचा जा सकता है । पस हर इन्सान पर इन अश्या के मुतअ़ल्लिक़ इल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है ।

इमामे अजल्ल ह़ज़रते सय्यिदुना शहीद नासिरुद्दीन अबू क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अख़्लाक़ के मौज़ूअ़ पर एक बहुत बेहतरीन किताब तस्नीफ़ की है । हर मुसलमान के लिये इस का मुत़ालआ़ करना और इस के मज़ामीन को याद रखना बहुत ज़रूरी है ।(1)

वोह अश्या जिन से कभी कभार वासित़ा पड़ता है उन के मुतअ़ल्लिक़ आगाही ह़ासिल करना फ़र्ज़े किफ़ाया है । अगर एक शहर के बा'ज़ अफ़राद ने उन से मुतअ़ल्लिक़ इल्म ह़ासिल कर लिया तो बाक़ी अफ़राद से फ़र्ज़ साक़ित़ हो जाता है और अगर पूरे शहर में से किसी ने भी इन से मुतअ़ल्लिक़ इल्म ह़ासिल नहीं किया तो तमाम शहर वाले गुनहगार होंगे । पस ह़ाकिमे वक़्त पर वाजिब है कि वोह शहर के लोगों को इन अश्या से मुतअ़ल्लिक़ इल्म ह़ासिल करने का हुक्म दे और उन्हें इस पर मजबूर करे ।

---

(1).....मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة की ज़िक्रकर्दा किताब "**किताबुल अख़्लाक़**" आज कल नापैद है। लेकिन अगर कोई तवाज़ोअ़, तकब्बुर, ज़िल्लते नफ़्स और दीगर क़ल्बी उमूर के बारे में आगाही चाहता है तो उसे चाहिये कि बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस्लाही बयानात की केसिटें और कुतुबो रसाइल से इस्तिफ़ादा करे जिन में अख़्लाक़िय्यात पर सेर ह़ासिल गुफ़्तगू है । नीज़ ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की कुतुब मसलन "इह़याउल उ़लूम" और "कीमियाए सआ़दत" वग़ैरा में भी इन उमूर पर तफ़्सीली मवाद मौजूद है ।

www.dawateislami.net

इल्म की ज़रूरत और अहम्मिय्यत को बयान करने के लिये एक मिसाल दी जाती है कि वोह इल्म जिस से हर वक़्त वासिता पड़ता है उस की मिसाल ग़िज़ा की तरह है। लिहाज़ा जिस तरह एक इन्सान के लिये ग़िज़ा लाज़िमी जुज़ है इसी तरह इस इल्म का हासिल करना भी ज़रूरी है और वोह इल्म जिस से कभी कभार वासिता पड़ता है उस की मिसाल दवा की सी है कि सिर्फ़ हालते मरज़ ही में दवा की ज़रूरत पड़ती है। लिहाज़ा चन्द ऐसे अफ़राद का होना ज़रूरी है जो इल्मे तिब्ब से आगाही रखते हों। पस इसी तरह वोह इल्म जिस से कभी कभार वासिता पड़ता है उस इल्म को जानने वाले चन्द अफ़राद का होना ज़रूरी है और इल्मे नुजूम की मिसाल मरज़ की तरह है। लिहाज़ा इस का सीखना (बिग़ैर किसी ग़रज़े सहीह के) हराम है क्यूंकि इस का सीखना कोई नफ़्अ व नुक़्सान नहीं दे सकता इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ज़ा व क़दर से फ़िरार किसी सूरत मुमकिन नहीं।

हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वोह हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर ज़िक्रो दुआ, तिलावते क़ुरआन और सदक़ा देने में लगा रहे जो कि दाफ़ेए बला है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से गुनाहों की मुआफ़ी तलब करता रहे और दुन्या व आख़िरत के लिये आफ़िय्यत का तलबगार रहे ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बलाओं और आफ़ात से महफ़ूज़ रखे क्यूंकि येह बात तो अज़हर मिनश्शम्स है कि :

مَنْ رُّزِقَ الدُّعَاءَ لَمْ يُحْرَمِ الْإِجَابَةَ

तर्जमा : जिसे दुआ की तौफ़ीक़ दी गई वोह क़बूलिय्यत से हरगिज़ महरूम न किया जाएगा।

लेकिन अगर तक़्दीर में किसी मुसीबत का पहुंचना लिखा है तो ज़रूर पहुंचेगी। अलबत्ता दुआ की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में तख़्फ़ीफ़ फ़रमा देगा और उसे सब्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा।

www.dawateislami.net

हां अगर कोई शख़्स इतनी मिक़्दार में इल्मे नुजूम को सीखना चाहे कि जिस के ज़रीए क़िब्ला और औक़ाते नमाज़ की मा'रिफ़त से आगाही हो सके तो जाइज़ है। इल्मे तिब्ब का सीखना भी जाइज़ है क्यूंकि दूसरे अस्बाबे ज़रूरिया की तरह येह भी एक सबब है और दीगर ज़रूरी अस्बाब की तरह इस का सीखना भी जाइज़ है। खुद सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इलाजो मुआलजा करना साबित है। हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का क़ौल है कि "**सीखने के क़ाबिल तो दो ही इल्म हैं : पहला इल्मे फ़िक़्ह,** अहवाले दीनिया की पहचान के लिये और **दूसरा, इल्मे तिब्ब,** बदने इन्सानी की पहचान के लिये। इन के इलावा जो दूसरे उलूम हैं वोह तो मजलिस का तोशा हैं।"

इल्म की ता'रीफ़ :

أَمَّا تَفْسِيْرُ الْعِلْمِ: فَهُوَ صِفَةٌ يَّتَجَلَّى بِهَا لِمَنْ قَامَتْ هِيَ بِهِ الْمَذْكُوْرُ كَمَا هُوَ

या'नी : इल्म एक ऐसी सिफ़त है कि जिस में येह सिफ़त पाई जाए उस पर हर वोह चीज़ जिसे येह सीखना और जानना चाहता है अपनी हक़ीक़त के मुताबिक़ इयां हो जाए।

फ़िक़्ह की ता'रीफ़ :

اَلْفِقْهُ: مَعْرِفَةُ دَقَائِقِ الْعِلْمِ مَعَ نَوْعِ عِلَاجٍ.

या'नी : इल्म की बारीकियों को मुख़्तलिफ़ मश्क़ों से जानने का नाम फ़िक़्ह है।

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़िक़्ह की ता'रीफ़ इन अल्फ़ाज़ में की है : اَلْفِقْهُ: مَعْرِفَةُ النَّفْسِ مَالَهَا وَمَا عَلَيْهَا या'नी : नफ़्स का अपने नफ़्अ व नुक़्सान को पहचानने का नाम फ़िक़्ह है। नीज़ फ़रमाया : "तहसीले इल्म का मक़्सद तो उस पर अमल करना

www.dawateislami.net

है और अ़मल दुन्या को आख़िरत के लिये तर्क कर देने का नाम है। पस इन्सान को चाहिये कि वोह अपने आप से बे ख़बर न रहे और वोह चीज़ें जो इसे दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ़ या नुक़्सान दे सकती हैं उन के मुआ़मले में ज़र्रा भर ग़फ़्लत न करे। पस जो चीज़ें इसे दुन्या व आख़िरत में फ़ाएदा दे सकती हैं उन को अपनाए और जो चीज़ें उसे दुन्या व आख़िरत में नुक़्सान दे सकती हैं उन से इजतिनाब करे क्यूंकि ऐसा न हो कि येह इल्म ही उस पर बरोज़े क़ियामत हुज्जत बन जाए और इस सबब से उस पर अ़ज़ाब में और ज़ियादती हो जाए।''

نَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ سُخْطِهٖ وَعِقَابِهٖ

(हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस के ग़ज़ब और उस की पकड़ से पनाह त़लब करते हैं)

इल्म के फ़ज़ाइलो मनाक़िब में बहुत सी आयात व अह़ादीसे सह़ीह़ा मश्हूरा वारिद हैं हम त़वालत के ख़ौफ़ से इन को ज़िक्र करने से एह़तिराज़ करते हैं।

दौराने ता'लीम कैफ़िय्यते निय्यत का बयान

तह़सीले इल्म के दौर में त़ालिबे इल्म का हुसूले इल्म से कोई न कोई मक़्सद ज़रूर होना चाहिये इस लिये कि निय्यत तमाम अह़वाल की अस्ल है क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّمَاالْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ ''या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।[1]

एक और ह़दीसे मुबारक में है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

1 .....صحيح البخارى، كتاب بدء الوحى، باب كيف كان بدء الوحى.....الخ، الحديث: ١، ج١، ص٥.

www.dawateislami.net

كَمْ مِّنْ عَمَلٍ يُّتَصَوَّرُبِصُوْرَةِ اَعْمَالِ الدُّنْيَا وَيَصِيْرُبِحُسْنِ النِّيَّةِ مِنْ اَعْمَالِ الْاٰخِرَةِ وَكَمْ مِّنْ عَمَلٍ يُّتَصَوَّرُبِصُوْرَةِ اَعْمَالِ الْاٰخِرَةِ ثُمَّ يَصِيْرُمِنْ اَعْمَالِ الدُّنْيَابِسُوْءِ النِّيَّةِ

"या'नी बहुत से आ'माल ज़ाहिरी तौ़र पर दुन्यावी नज़र आते हैं लेकिन हुस्ने निय्यत की वज्ह से वोह आ'माले आख़िरत बन जाते हैं और बहुत से आ'माल ज़ाहिरी तौ़र पर आख़िरत के लिये तसव्वुर किये जाते हैं मगर निय्यते बद की वज्ह से वोह आ'माले दुन्या में शुमार होते हैं।"

लिहाज़ा तालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह तह़सीले इल्म से रिज़ाए इलाही, आख़िरत की कामयाबी, ख़ुद से और तमाम जाहिलों से जह्ल को दूर करने, दीन को ज़िन्दा रखने और इस्लाम को बाक़ी रखने की निय्यत करे क्यूंकि इस्लाम की बक़ा सिर्फ़ इल्म ही के साथ मुमकिन है और ज़ोह्दो तक़्वा को भी जहालत की ह़ालत में इख़्तियार नहीं किया जा सकता।

हमारे उस्ताज़े मोह़तरम साह़िबे हिदाया ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बुरहानुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने हमें एक शाइ़र के येह अश्आ़र सुनाए :

فَسَادٌكَبِيْرٌعَالِمٌ مُّتَهَتِّكٌ وَاَكْبَرُمِنْهُ جَاهِلٌ مُّتَنَسِّكُ

هُمَافِتْنَةٌ فِي الْعَالَمَيْنَ عَظِيْمَةٌ لِمَنْ بِهِمَافِيْ دِيْنِهٖ يَتَمَسَّكُ

तर्जमा : (1).....बे अ़मल आ़लिम एक बहुत बड़ा फ़साद और जाहिल इबादत गुज़ार इस से बड़ा फ़साद है।

(2).....येह दोनों उस शख़्स के लिये दोनों जहां में बहुत बड़ा फ़ितना हैं जो दीन में इन की पैरवी करे।

नीज़ तालिबे इल्म को चाहिये कि वोह फ़ह्मो ज़कावत और सिह्ह़त व तन्दुरुस्ती पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता रहे और लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने और दुन्या का माल ह़ासिल करने की निय्यत हरगिज़ हरगिज़ न करे और न ही अरबाबे इक़्तिदार की नज़र में इ़ज़्ज़त व वक़ार ह़ासिल करने की निय्यत करे।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं कि لَوْ كَانَ النَّاسُ كُلُّهُمْ عَبِيْدِيْ لَاَعْتَقْتُهُمْ وَتَبَرَّأْتُ عَنْ وَّلَائِهِمْ ''या'नी अगर दुन्या के सारे लोग मेरे ग़ुलाम हो जाएं तो मैं उन सब को आज़ाद कर दूं और उन की विलायत से बरी हो जाऊंगा।'' इस की वज्ह येह है कि जिस शख़्स को इल्मो अ़मल की लज़्ज़त ह़ासिल हो जाए तो फिर वोह दुन्या की लज़्ज़तों और लोगों के ए'ज़ाज़ो इकराम पर बिल्कुल नज़र नहीं रखता।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम क़वामुद्दीन ह़म्माद बिन इब्राहीम बिन इस्माईल सफ़्फ़ार अन्सारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मन्क़ूल येह शे'र हमें सुनाया :

مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ لِلْمَعَادِ فَازَ بِفَضْلٍ مِّنَ الرَّشَاد

فَيَالِلْخُسْرَانِ طَالِبِيْهِ لِنَيْلِ فَضْلٍ مِّنَ الْعِبَاد

तर्जमा : (1).....जिस ने आख़िरत के लिये इल्म ह़ासिल किया उस ने फ़ज़्ल या'नी हिदायत को पा लिया।

(2).....लेकिन घाटा तो उस त़ालिबे इल्म के लिये है जो इल्म को लोगों से फ़ाएदा ह़ासिल करने के लिये त़लब करे।

येह बात मुसल्लम है कि इल्म को दुन्यावी इ़ज़्ज़त व मन्सब के लिये ह़ासिल नहीं करना चाहिये मगर जब दुन्यावी मन्सब को इस लिये त़लब किया कि اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَرِ (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना) आसानी से कर सके और ह़क़ को नाफ़िज़ कर सके, नीज़ दीन की सरबुलन्दी कर सके और बुलन्द मन्सब की त़लब में ख़्वाहिशे नफ़्स शामिल न हो तो फिर इस क़दर मन्सबो जाह ह़ासिल करना जाइज़ है कि जिस के साथ اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَرِ किया जा सके।

www.dawateislami.net

तालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह अपनी निय्यत के बारे में सोच बिचार करता रहे और इस में ग़फ़्लत न करे कि एक तालिबे इल्म, इल्म को बहुत मेहनतो मशक़्क़त करने के बा'द हासिल कर पाता है। लिहाज़ा इस इल्म को फ़ानी, क़लील और हक़ीर दुन्या के हुसूल के लिये हरगिज़ ख़र्च नहीं करना चाहिये :

هِیَ الدُّنْیَا اَقَلُّ مِنَ الْقَلِیْلِ وَعَاشِقُهَا اَذَلُّ مِنَ الذَّلِیْلِ

تُصِمُّ بِسِحْرِهَا قَوْمًا وَّتُعْمِی فَهُمْ مُتَحَیِّرُوْنَ بِلَا دَلِیْلِ

तर्जमा : (1).....दुन्या आख़िरत के मुक़ाबले में क़लील तरीन शै है और इस का चाहने वाला निहायत ही ज़लील है।

(2).....येह दुन्या अपने सेहर से किसी क़ौम को बहरा बना देती है तो किसी को अन्धा वोह लोग जो दुन्या के सेहर में मुब्तला हैं हैरानो शशदर हैं।

लिहाज़ा एक तालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह बे फ़ाएदा अश्या की तम्अ कर के अपने आप को ज़लील न करे और वोह काम जो कि इल्म और अहले इल्म के लिये बदनामी का बाइस बन सकते हों उन से बचता रहे नीज़ एक तालिबे इल्म को मुतवाज़ेअ होना चाहिये और तवाज़ोअ, तकब्बुर व ज़िल्लते नफ़्स के दरमियानी रास्ते का नाम है और इन बातों की तफ़्सील **''किताबुल अख़्लाक़''** में देखी जा सकती हैं।

तवाज़ोअ के बारे में हज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम रुक्नुल इस्लाम उर्फ़ अदीब मुख़्तार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने मुझे अपने येह अश्आर सुनाए :

www.dawateislami.net

اِنَّ التَّوَاضُعَ مِنْ خِصَالِ الْمُتَّقِیْ وَبِهِ التَّقِیُّ اِلَی الْمَعَالِیْ یَرْتَقِیْ
وَمِنَ الْعَجَائِبِ عُجْبُ مَنْ هُوَجَاهِلٌ فِیْ حَالِهٖ أَهُوَالسَّعِیْدُأَمِ الشَّقِیْ
أَمْ كَیْفَ یُخْتَمُ عُمْرُهُ اَوْرُوْحُهُ یَوْمَ النَّوَی مُتَسَفِّلٌ اَوْمُرْتَقِیْ
وَالْكِبْرِیَاءُ لِرَبِّنَاصِفَةٌ بِهٖ مَخْصُوْصَةٌ فَتَجَنَّبْهَاوَاتَّقِیْ

तर्जमा : (1).....तवाज़ोअ़, मुत्तक़ी व परहेज़गार लोगों की एक सिफ़त है इसी के ज़रीए़ नेक लोग सरबुलन्द होते हैं।

(2).....और अ़जीब तरीन है वोह शख़्स जो तकब्बुर करने के बाइ़स अपने आप को नहीं पहचानता आया कि वोह ख़ुश बख़्त है या कि बद बख़्त।

(3).....और इस बात को भी नहीं जानता कि उस की उ़म्र व रूह़ का इख़्तिताम किस ह़ालत में होगा और यौमे विसाल वोह इ़ल्लिय्यीन में होगा या कि साफ़िलीन में से।

(4).....किब्रियाई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त है और उस के साथ मख़्सूस है। पस ऐ बन्दए ख़ुदा ! तू उस चीज़ से बच और तक़्वा इख़्तियार कर।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : عَظِّمُوْاعَمَائِمَكُمْ وَوَسِّعُوْاكُمَامَكُمْ "या'नी अपने इमामों को बड़ा और आस्तीनों को वसीअ़ करो।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह बात इस लिये इरशाद फ़रमाई कि "कोई शख़्स इ़ल्म और अहले इ़ल्म को ह़क़ीर न जाने।"

त़ालिबे इ़ल्म के लिये येह मुनासिब है कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की "**किताबुल वसिय्यत**" ग़ौर से पढ़े, जो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन ख़ालिद समती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی के लिये उस वक़्त लिखी थी जब वोह घर वापस जा रहे थे। يَجِدُهُ مَنْ يَطْلُبُهُ या'नी : जो इसे तलाश करेगा वोह ज़रूर इसे पा लेगा।

www.dawateislami.net

जब मैं अपने घर लौट रहा था तो हमारे उस्ताज़े मोह़तरम शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना बुरहानुल अइम्मा अ़ली बिन अबू बक्र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझे भी इस वसिय्यत के लिखने का हुक्म फ़रमाया था और मैं ने भी उन के हुक्म की ता'मील करते हुवे येह वसिय्यत लिखी थी नीज़ अ़वाम के साथ मुआ़मलात के सिलसिले में एक मुदर्रिस और मुफ़्ती के लिये भी इस वसिय्यत का मुत़ालआ़ निहायत ज़रूरी है।

इल्म, असातिज़ा और शुरका का इन्तिख़ाब और साबित क़दमी इख़्तियार करने का बयान

इल्म का इन्तिख़ाब :

त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह तमाम उ़लूम में से उस इल्म को ह़ासिल करे जो अह़सनुल उ़लूम हो और फ़िलह़ाल उस इल्म की दीनी मुआ़मलात में शदीद ज़रूरत हो। फिर वोह उसे सीखे जिस की उसे बा'द में ज़रूरत पड़े। लिहाज़ा इल्मे तौह़ीद और मा'रिफ़ते ख़ुदावन्दी के सीखने को मुक़द्दम रखे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को दलील के साथ पहचाने क्यूंकि मुक़ल्लिद का ईमान अगर्चे हमारे नज़दीक मो'तबर है लेकिन उस के लिये भी ज़रूरी है कि वोह दलाइल के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पहचाने वरना वोह ख़त़ाकार ठहरेगा और पुरानी रिवायात को इख़्तियार करे और नई से बचे कि उ़लमा फ़रमाते हैं : عَلَيْكُمْ بِالْعَتِيْقِ وَاِيَّاكُمْ وَالْمُحْدَثَاتِ "या'नी पुरानी रिवायात को मज़बूती से थाम लो और नई नई रिवायात से परहेज़ करो।"

त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह मह़ज़ इख़्तिलाफ़ी मसाइल ही के सीखने पर तवज्जोह न दे जो कि अकाबिर उ़लमा के दुन्या से उठ जाने के बा'द हुवे कि येह चीज़ उसे फ़िक़्ह से बहुत दूर कर देगी और

www.dawateislami.net

उस की सारी उम्र ज़ाएअ करने के साथ साथ दिलों में वहशत और अदावत को पैदा करेगी जो कि क़ियामत की निशानियों में से है और इस के सबब इल्म व फ़िक़्ह उठ जाएगा जैसा की हदीस शरीफ़ में वारिद है।[1]

उस्ताज़ का इन्तिख़ाब :

तालिबे इल्म को चाहिये कि वोह ऐसे शख़्स को अपना उस्ताज़ बनाए जो सब से ज़ियादा परहेज़गार और उम्र दराज़ हो जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان को ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र के बा'द अपना उस्ताज़ मुन्तख़ब किया था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का अपने उस्ताज़ के बारे में फ़रमान है कि ثَبَتُّ عِنْدَ حَمَّادِ بْنِ سُلَيْمَانَ فَنَمَيْتُ "या'नी मैं अपने उस्ताज़ हम्माद बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के पास मुस्तक़िल मिज़ाजी से पढ़ता रहा इसी वज्ह से मेरा इल्मी मक़ाम नश्वो नुमा पाता रहा।"

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया कि मैं ने समरक़न्द के एक हकीम को फ़रमाते सुना कि "एक तालिबे इल्म जो तलबे इल्म के लिये बुख़ारा जाने का इरादा रखता था उस ने इस सिलसिले में मुझ से मश्वरा तलब किया।"

---

1 .....يُشِيْرُ اِلٰى مَارَوَاهُ الدَّيْلَمِيُّ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ قَالَ تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ قَبْلَ اَنْ يُّرْفَعَ، فَاِنَّ اَحَدَكُمْ لَايَدْرِىْ مَتٰى يُفْتَقَرُ اِلٰى مَاعِنْدَهٗ وَعَلَيْكُمْ بِالْعِلْمِ، وَاِيَّاكُمْ وَالتَّنَطُّعَ وَالتَّبَدُّعَ وَالتَّعَمُّقَ وَعَلَيْكُمْ بِالْعَتِيْقِ

या'नी हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इल्म हासिल करो क़ब्ल इस के कि वोह उठा लिया जाए क्यूंकि तुम में से कोई नहीं जानता कि उसे कब उस की ज़रूरत पड़े जो उस के पास है (लिहाज़ा) तुम पर इल्म हासिल करना लाज़िम है और ख़्वाहिशात की पैरवी करने और बिदअत इख़्तियार करने से बचो और किसी की टोह में न पड़ो और पुरानी (दीनी मुसल्लमा) रिवायात को मज़बूती से थाम लो।"

(کنزالعمال، کتاب العلم، الباب الاول، الحدیث: ۲۸۸۶۱، ج ۱۰، ص ۷۲)

www.dawateislami.net

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! जिस त़रह़ उस त़ालिबे इ़ल्म ने मश्वरा त़लब किया उसी त़रह़ हर त़ालिबे इ़ल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह हर काम में मश्वरा ज़रूर किया करे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम उमूर में मश्वरा करने का हुक्म फ़रमाया ह़ालांकि कोई शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा ज़हीनो फ़त़ीन नहीं हो सकता लेकिन इस के बा वुजूद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मश्वरा करने का हुक्म दिया गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम कामों में ह़त्ता कि घरेलू ज़रूरिय्यात तक में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से मश्वरा किया करते थे।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "कोई शख़्स मश्वरा करने से हलाक नहीं हुवा।"

कहा जाता है कि "इन्सान तीन अक़्साम के हैं : (1) मर्दे कामिल (2) निस्फ़ मर्द और (3) नामर्द। पस मर्दे कामिल और मुकम्मल इन्सान वोह है जो साह़िबुर्राए है और मश्वरा भी करता है। निस्फ़ मर्द वोह है जो साह़िबुर्राए तो है लेकिन मश्वरा नहीं करता या मश्वरा करता है मगर साह़िबुर्राए नहीं और नामर्द वोह है जो न तो साह़िबुर्राए है और न ही मश्वरा करता है।"

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से फ़रमाया कि "अपने मुआ़मलात में उन लोगों से मश्वरा त़लब करो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखते हैं।"

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! इ़ल्म का त़लब करना तो तमाम उमूर से अफ़्ज़लो आ'ला और सख़्त मुश्किल काम है। लिहाज़ा इस के मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा करना भी निहायत ज़रूरी होगा। उस दाना शख़्स ने

www.dawateislami.net

तालिबे इल्म को जिस ने उन से मश्वरा तलब किया था मश्वरा देते हुवे फ़रमाया कि "जब तुम बुख़ारा जाओ तो अइम्मा के पास आने जाने में जल्दी न करना बल्कि ख़ूब सोच बिचार के साथ कम अज़ कम दो महीने तक सूरते हाल देख कर किसी को अपना उस्ताज़ बनाना क्यूंकि अगर तुम ने बिग़ैर सोचे समझे किसी उस्ताज़ से सबक़ लेना शुरूअ़ कर दिया तो हो सकता है कि कुछ दिन बा'द तुम्हें उन का तरीक़ए ता'लीम पसन्द न आए और तुम उसे छोड़ कर किसी और के पास चले जाओ तो इस तरह़ तुम्हारे इल्म में बरकत नहीं रहेगी। लिहाज़ा पहले दो महीने तक किसी उस्ताज़ के मुन्तख़ब करने के बारे में सोच बिचार कर लो और इस बारे में किसी से मश्वरा भी करना कि बा'द में उन से ए'राज़ की नौबत न आए और तुम्हारे इल्म में भी बरकत हो और तुम अपने इल्म से दूसरों को भी फ़ाएदा पहुंचा सको।"

साबित क़दमी

ऐ अ़ज़ीज़ तालिबे इल्म ! तुझे मा'लूम होना चाहिये कि साबित क़दमी तमाम कामों की अस्ल है लेकिन येह बहुत मुश्किल अ़मल है जैसा कि किसी शाइ़र ने कहा कि :

لِكُلِّ اِلٰى شَأْوِالْعُلَاحَرَكَاتُ وَلٰكِنْ عَزِيْزٌفِى الرِّجَالِ ثَبَاتُ

तर्जमा : बुलन्दियों तक पहुंचने की ख़्वाहिश में तो हर इन्सान ह़रकत कर सकता है लेकिन लोगों के लिये साबित क़दमी बहुत मुश्किल चीज़ है।

किसी ने कहा कि एक घड़ी सब्र कर लेना सब से बड़ी बहादुरी है। लिहाज़ा एक तालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह सब्रो इस्तिक़्लाल के साथ एक उस्ताज़ के पास पढ़ता रहे और अपनी किताबों को साबित क़दमी से पढ़े। किसी भी किताब को अधूरा न छोड़े। जिस फ़न को भी इख़्तियार करे उस में साबित क़दमी का मुज़ाहरा करे और किसी दूसरे

www.dawateislami.net

फ़न को उस वक़्त तक हाथ न लगाए जब तक कि पहले फ़न में पुख़्तगी पैदा न हो जाए। जब त़ालिबे इल्म तह़सीले इल्म के लिये किसी शहर में मुक़ीम हो तो उसे चाहिये कि बिग़ैर किसी ज़रूरत के शहर से बाहर न जाए क्यूंकि येह तमाम चीज़ें तह़सीले इल्म में ख़लल पैदा करती हैं और त़ालिबे इल्म के दिल को न सिर्फ़ ग़ैर ज़रूरी चीज़ों में मश्ग़ूल कर देंगी बल्कि औक़ात को ज़ाएअ़ करने के साथ साथ उस्ताज़ की अज़िय्यत का सबब भी बनेंगी। लिहाज़ा एक त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह अपने नफ़्स की चाहतों पर अ़मल पैरा होने के बजाए उन पर सब्र करे।

एक शाइ़र कहता है कि :

اِنَّ الْهَوٰى لَهُوَالْهَوَانُ بِعَيْنِهٖ وَصَرِيْعُ كُلِّ هَوًى صَرِيْعُ هَوَانِ

तर्जमा : ख़्वाहिशे नफ़्स वोह तो बज़ाते ख़ुद ह़क़ारत आमेज़ चीज़ है और हर वोह कि जिस पर ख़्वाहिशात का ग़लबा हो उस पर ज़िल्लत व ह़क़ारत भी ग़ालिब होंगी।

इसी त़रह़ एक त़ालिबे इल्म को राहे इल्मे दीन में आने वाली आज़माइशों और आफ़ात पर भी सब्र करना चाहिये किसी ने कहा है कि : خَزَائِنُ الْمِنَنِ عَلٰى قَنَاطِرِ الْمِحَنِ या'नी बख़्शिश और एह़सानों के ख़ज़ाने आज़माइशों के पुल से गुज़र कर ही ह़ासिल किये जा सकते हैं।

एक शाइ़र ने कहा है कि :

اَلَا لَا تَنَالُ الْعِلْمَ اِلَّا بِسِتَّةٍ سَأُنْبِيْكَ عَنْ مَّجْمُوْعِهَا بِبَيَانِ

ذَكَاءٌ وَّحِرْصٌ وَّاصْطِبَارٌ وَّبُلْغَةٌ وَ اِرْشَادُ اُسْتَاذٍ وَّطُوْلُ زَمَانِ

तर्जमा : (1).....जान लो तुम इल्म ह़ासिल नहीं कर सकते मगर छे चीज़ों के साथ मैं तुम्हें उन तमाम के बारे में आगाह करता हूं।

(2).....वोह छे चीज़ें येह हैं : ज़कावत, ह़िर्से इल्म, सब्र, ब क़दरे किफ़ायत माल, उस्ताज़ की रहनुमाई और एक त़वील ज़माना।

www.dawateislami.net

शरीके दर्स का इन्तिख़ाब करना

त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह किसी ऐसे शख़्स को अपना रफ़ीक़ बनाए जो सख़्त मेहनती, परहेज़गार और मुस्तक़ीमुत्तबअ़ हो। काहिल व बेकार और ज़ियादा बोलने वाले, फ़सादी और फ़ितना परवर से दूर रहे। एक शाइ़र ने कहा है कि :

عَنِ الْمَرْءِ لَاتَسْأَلْ وَاَبْصِرْقَرِيْنَه فَكُلُّ قَرِيْنٍ بِالْمَقَارِنِ يَقْتَدِى

فَاِنْ كَانَ ذَا شَرٍّفَجَانِبْهُ سُرْعَةً وَاِنْ كَانَ ذَاخَيْرٍفَقَارِنْهُ تَهْتَدِى

لَاتَصْحَبِ الْكَسْلَانَ فِىْ حَالَاتِهٖ كَمْ صَالِحٍ بِفَسَادآخَرَيَفْسُدُ

عَدْوَى الْبَلِيْدِاِلَى الْجَلِيْدِسَرِيْعَةً كَالْجَمْرِيُوْضَعُ فِى الرَّمَادِفَيَخْمِدُ

तर्जमा : (1).....जब तू किसी के अह़वाल जानना चाहे तो लोगों से उस के अह़वाल पूछने के बजाए उस के दोस्त के अह़वाल पर नज़र रख क्यूंकि हर शख़्स अपने रफ़ीक़ का पैरूकार होता है।

(2).....पस अगर वोह बुरा हो तो फ़ौरन उस से किनारा कशी इख़्तियार कर ले और अगर अच्छा हो तो उसे रफ़ीक़ बना ले ताकि तुझे उस से रहनुमाई मिले।

(3).....काहिल की सोह़बत मत इख़्तियार कर कि बहुत से नेक लोग गुमराह लोगों की सोह़बत की वज्ह से गुमराह हो गए।

(4).....कुंद ज़ेह्न की ग़लत़ आ़दतें ज़हीनो फ़त़ीन की ज़कावत पर बहुत जल्दी असर अन्दाज़ होती हैं बिल्कुल ऐसे ही जैसे अंगारे को राख में रख दिया जाए तो वोह ठन्डा हो जाता है।

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : كُلُّ مَوْلُوْدٍيُّوْلَدُعَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ اِلَّا اَنَّ اَبَوَيْهِ يُهَوِّدَانِهٖ اَوْ يُنَصِّرَانِهٖ اَوْيُمَجِّسَانِهٖ

www.dawateislami.net

"या'नी हर बच्चा फ़ितरते इस्लाम ही पर पैदा होता है मगर उस के वालिदैन अपनी सोहबत से उसे यहूदी, नसरानी या मजूसी बना देते हैं।"[1]

किसी फ़ारसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

یــاربــدبــدتــربــودازمــاربــد　　حق ذات پـاک اللّٰہ الصمد

یـاربـدآردتـراسوی جحیم　　یــارنیـکـوگیـرتـایـابی نعیم

तर्जमा : (1).....बुरा दोस्त ख़त़रनाक सांप से भी बदतर है ह़क़ तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की ज़ात है जो कि बे नियाज़ है।

(2).....बुरा दोस्त तुझे जहन्नम की त़रफ़ ले जाता है नेक दोस्त इख़्तियार कर ताकि तू जन्नत ह़ासिल कर ले।

एक और शाइर ने कहा है कि :

اِنْ كُنْتَ تَبْغِي الْعِلْمَ مِنْ اَهْلِهٖ　　اَوْشَــاهِـدًايُـخْـبِـرُعَنْ غَـائِـبٖ

فَـاعْتَبِـرِالْاَرْضَ بِـأَسْمَـائِهَـا　　وَاعْتَبِـرِالـصَّـاحِبَ بِالصَّاحِبٖ

तर्जमा : (1).....अगर तुम इल्म को उस के अहल से त़लब करना चाहते हो या किसी ऐसे शाहिद की तलाश है जो ग़ाइब की इत्त़िलाअ़ देता है।

(2).....तो ज़मीनों के ह़ालात वहां के नामों से मा'लूम करो और किसी शख़्स का ह़ाल उस के दोस्त को देख कर मा'लूम करो।

۞۞۞۞۞۞۞

1 ......صحيح البخاری، کتاب الجنائز،باب ماقيل فی اولاد المشركين، الحديث:١٣٨٥، ج ١،ص٤٦٦،بتغيرٍقليلٍ.

www.dawateislami.net

इल्म और अहले इल्म की ता'ज़ीम का बयान

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! त़ालिबे इल्म उस वक़्त तक न तो इल्म ह़ासिल कर सकता है और न ही उस से नफ़्अ़ उठा सकता है जब तक कि वोह इल्म, अहले इल्म और अपने उस्ताज़ की ता'ज़ीमो तौक़ीर न करता हो । किसी ने कहा है कि : مَاوَصَلَ مَنْ وَّصَلَ اِلَّابِالْحُرْمَةِ وَمَا سَقَطَ مَنْ سَقَطَ اِلَّابِتَرْكِ الْحُرْمَةِ "या'नी जिस ने जो कुछ पाया अदबो एह़तिराम करने के सबब ही से पाया और जिस ने जो कुछ खोया वोह अदबो एह़तिराम न करने के सबब ही खोया ।"

कहा जाता है कि : اَلْحُرْمَةُ خَيْرٌمِّنَ الطَّاعَةِ "या'नी अदबो एह़तिराम करना इत़ाअ़त करने से ज़ियादा बेहतर है ।"

आप देख लीजिये कि इन्सान गुनाह करने की वज्ह से कभी काफ़िर नहीं होता बल्कि उसे हल्का समझने की वज्ह से काफ़िर हो जाता है ।

ता'ज़ीमे उस्ताज़

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! उस्ताज़ की ता'ज़ीम करना भी इल्म ही की ता'ज़ीम है । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि اَنَاعَبْدُمَنْ عَلَّمَنِىْ حَرْفًاوَّاحِدًااِنْ شَآءَ بَاعَ وَاِنْ شَآءَ اَعْتَقَ وَاِنْ شَاءَ اسْتَرَقَّ "या'नी जिस ने मुझे एक ह़र्फ़ सिखाया मैं उस का ग़ुलाम हूं चाहे अब वोह मुझे फ़रोख़्त कर दे, चाहे तो आज़ाद कर दे और चाहे तो ग़ुलाम बना कर रखे ।"

इसी बात पर मैं ने येह अश्आ़र कहे हैं :

رَأَيْتُ اَحَقَّ الْحَقِّ حَقَّ الْمُعَلِّمِ وَاُوْجِبُهُ حِفْظًاعَلٰى كُلِّ مُسْلِمِ

لَقَدْحَقَّ اَنْ يُّهْدٰى اِلَيْهِ كَرَامَةً لِتَعْلِيْمِ حَرْفٍ وَّاحِدٍاَلْفُ دِرْهَمِ

www.dawateislami.net

तर्जमा : (1).....मैं उस्ताज़ के ह़क़ को तमाम हुक़ूक़ से मुक़द्दम समझता हूं और हर मुसलमान पर इस की रिआ़यत वाजिब मानता हूं।

(2).....ह़क़ तो येह है कि उस्ताज़ की त़रफ़ एक ह़र्फ़ सिखाने पर ता'ज़ीमन एक हज़ार दिरहम का तोह़्फ़ा भेजा जाए।

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! बेशक जिस ने तुझे दीनी ज़रूरिय्यात में से एक ह़र्फ़ भी सिखाया वोह शख़्स तुम्हारा दीनी बाप है। हमारे उस्ताज़ शैख़ सदीदुद्दीन शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي अपने मशाइख़ के ह़वाले से फ़रमाया करते थे कि जो शख़्स येह चाहता है कि उस का बेटा आ़लिम बने उसे चाहिये कि तंगदस्त फ़ुक़हा की देख भाल करे, उन की इ़ज़्ज़त व तकरीम करे, उन की ज़रूरिय्यात पूरी करने के लिये कुछ न कुछ उन्हें देता रहे। फिर भी अगर उस का बेटा आ़लिम न बना तो उस का पोता ज़रूर आ़लिम बनेगा। उस्ताज़ की इ़ज़्ज़तो तकरीम में येह बातें भी शामिल हैं कि त़ालिबे इल्म को चाहिये कि कभी उस्ताज़ के आगे न चले। न उस की निशस्त गाह पर बैठे। न तो बिग़ैर इजाज़त कलाम में इब्तिदा और न ही बिग़ैर इजाज़त उस्ताज़ के सामने ज़ियादा कलाम करे। जब वोह परेशान हो तो कोई सुवाल न करे बल्कि वक़्त का लिह़ाज़ रखे और न ही उस्ताज़ के दरवाज़े को खटखटाए बल्कि उसे चाहिये कि वोह सब्र से काम ले और उस्ताज़ के बाहर आने का इन्तिज़ार करे।

अल ग़रज़ त़ालिबे इल्म को चाहिये कि हर वक़्त उस्ताज़ की रिज़ा को पेशे नज़र रखे और उस की नाराज़ी से बचे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी वाले कामों के इलावा हर मुआ़मले में उस्ताज़ के हुक्म की ता'मील करे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में मख़्लूक़ की फ़रमां बरदारी जाइज़ नहीं जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

اِنَّ شَرَّالنَّاسِ مَنْ يُّذْهِبُ دِيْنَهٗ لِدُنْيَاغَيْرِهٖ ''या'नी लोगों में से बदतरीन शख़्स वोह है जो किसी की दुन्या संवारते संवारते अपने दीन को बरबाद कर डाले।''

उस्ताज़ की औलाद और उस के रिश्तेदारों की ता'ज़ीमो तौक़ीर भी उस्ताज़ ही की ता'ज़ीमो तौक़ीर का एक हिस्सा है। हमारे उस्ताज़े मोहतरम साहिबे हिदाया शैख़ुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना बुरहानुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने येह हिकायत बयान की, कि बुख़ारा के बुलन्द पाया अइम्मा में से एक इमाम का वाक़िआ है कि एक मरतबा वोह इल्मे दीन की मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे कि यकायक उन्हों ने बार बार खड़ा होना शुरूअ कर दिया लोगों ने उन से इस की वज्ह पूछी तो फ़रमाया कि ''मेरे उस्ताज़े मोहतरम का साहिबज़ादा बच्चों के साथ गली में खेल रहा था कभी कभी खेलता हुवा वोह मस्जिद की तरफ़ आ निकलता, पस जब मेरी नज़र उस पर पड़ती तो मैं अपने उस्ताज़ की ता'ज़ीम में उस की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाता।''

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन अरसाबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मर्व शहर में रईसुल अइम्मा के मक़ाम पर फ़ाइज़ थे और सुल्ताने वक़्त आप का बेहद अदबो एहतिराम किया करता था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि ''मुझे येह मन्सब अपने उस्ताज़ की ख़िदमत करने की वज्ह से मिला है कि मैं अपने उस्ताज़ की ख़िदमत किया करता था यहां तक कि मैं ने उन का 3 साल तक खाना पकाया और उस्ताज़ की अज़मत को मल्हूज़ रखते हुवे मैं ने कभी भी उस में से कुछ न खाया।''

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना शैख़ शम्सुल अइम्मा हल्वानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى को कोई हादिसा पेश आया जिस की वज्ह से वोह बुख़ारा से निकल कर एक गाऊं में सुकूनत पज़ीर हो गए। इस अर्से में उन के शागिर्द मुलाक़ात और ज़ियारत के लिये हाज़िर होते रहते मगर उन के

www.dawateislami.net

एक शागिर्द हज़रते सय्यिदुना शैख़ शम्सुल अइम्मा ज़रन्जी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى मुलाक़ात के लिये हाज़िर न हो सके। जब हज़रते सय्यिदुना शैख़ शम्सुल अइम्मा हल्वानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى की उन से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने पूछा कि "वोह मुलाक़ात के लिये क्यूं नहीं आए।" तो उन्हों ने अर्ज़ की : "आलीजाह ! दर अस्ल मैं अपनी वालिदा की ख़िदमत में मश्ग़ूल था इस लिये हाज़िर न हो सका।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि "तुम्हें उम्र दराज़ी तो हासिल होगी मगर रौनक़े दर्स न पा सकोगे और ऐसा ही हुवा कि उन का अक्सर वक़्त दीहातों में गुज़रा और येह कहीं भी दर्सो तदरीस का इन्तिज़ाम न कर सके क्यूंकि जो शख़्स अपने उस्ताज़ के लिये अज़िय्यत व तक्लीफ़ का बाइस बनता है वोह इल्म की बरकतों से महरूम हो जाता है और इल्म से कमाहक़्क़ुहू फ़ाएदा नहीं उठा सकता जैसा कि किसी शाइर ने कहा है कि :

اِنَّ الْمُعَلِّمَ وَالطَّبِيْبَ كِلَاهُمَا   اَيَنْصِحَانِ اِذَاهُمَا لَمْ يُكْرَمَا

فَاصْبِرْ لِدَائِكَ اِنْ جَفَوْتَ طَبِيْبَهُ   وَاقْنَعْ بِجَهْلِكَ اِنْ جَفَوْتَ مُعَلِّمَا

तर्जमा : (1).....उस्ताज़ हो या तबीब दोनों ही उस वक़्त तक नसीहत नहीं करते जब तक उन की इ़ज़्ज़त व तकरीम न की जाए।

(2).....अगर तू तबीब से बद सुलूकी करता है तो फिर अपनी बीमारी पर सब्र करने के लिये तय्यार हो जा और अगर अपने उस्ताज़ से बद सुलूकी करता है तो फिर अपनी जहालत पर क़नाअत कर।

हिकायत बयान की जाती है कि ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने अपने लड़के को इमामुल लुग़त अस्मई के पास इल्म हासिल करने के लिये भेजा एक दिन हारूनुर्रशीद ने देखा कि अस्मई वुज़ू में अपना पैर धो रहे हैं और ख़लीफ़ा का लड़का पानी डाल रहा है येह देख कर ख़लीफ़ा ने अस्मई से शिक्वा करते हुवे कहा कि "मैं ने अपने लड़के को आप के

www.dawateislami.net

पास इस लिये भेजा था कि आप इसे इ़ल्मो अदब सिखाएं फिर आप ने वुज़ू करते वक़्त इसे एक हाथ से पानी डालने और दूसरे हाथ से पाउं धोने का हुक्म क्यूं नहीं दिया ?''

ता'ज़ीमे किताब

ता'ज़ीमे इ़ल्म में किताब की ता'ज़ीम करना भी शामिल है। लिहाज़ा त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि कभी भी बिग़ैर त़हारत के किताब को हाथ न लगाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शम्सुल अइम्मा ह़ल्वानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی से ह़िकायत नक़्ल की जाती है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि ''मैं ने इ़ल्म के ख़ज़ानों को ता'ज़ीमो तकरीम करने के सबब ह़ासिल किया वोह इस त़रह़ कि मैं ने कभी भी बिग़ैर वुज़ू काग़ज़ को हाथ नहीं लगाया।''

शम्सुल अइम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सरख़सी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ القَوِی का वाक़िआ़ है कि एक मरतबा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का पेट ख़राब हो गया। आप की आ़दत थी कि रात के वक़्त किताबों की तकरार और बह़सो मुबाह़सा किया करते थे। पस उस रात पेट ख़राब होने की वज्ह से आप को 17 बार वुज़ू करना पड़ा क्यूंकि आप बिग़ैर वुज़ू तकरार नहीं किया करते थे।

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن को वुज़ू से इस वज्ह से मह़ब्बत थी कि इ़ल्म नूर है और वुज़ू भी नूर। पस वुज़ू करने से इ़ल्म की नूरानिय्यत मज़ीद बढ़ जाती है।

त़ालिबे इ़ल्म के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह किताबों की त़रफ़ पाउं न करे। कुतुबे तफ़ासीर को ता'ज़ीमन तमाम कुतुब के ऊपर रखे और किताब के ऊपर कोई दूसरी चीज़ हरगिज़ न रखी जाए।

www.dawateislami.net

हमारे उस्ताज़े मोह़तरम शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن अपने मशाइख़ में से किसी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ह़िकायत बयान करते थे कि एक फ़क़ीह की आ़दत थी कि दवात को किताब के ऊपर ही रख दिया करते थे तो शैख़ ने उन से फ़ारसी में फ़रमाया : **برنیابی** "या'नी तुम अपने इ़ल्म से फ़ाएदा नहीं उठा सकते।"

हमारे उस्ताज़े मोह़तरम इमामे अजल्ल फ़ख़रुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाया करते थे कि "किताबों पर दवात वग़ैरा रखते वक़्त अगर तह़क़ीरे इ़ल्म की निय्यत न हो तो ऐसा करना जाइज़ है मगर औला येह है कि इस से बचा जाए।"

त़ालिबे इ़ल्म के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह अपनी लिखाई को उ़म्दा और ख़ुशख़त़ बनाए बिल्कुल बारीक और छोटा छोटा कर के न लिखे और बिला ज़रूरत ह़ाशिया की जगह तर्क न करे।

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने एक शख़्स को देखा जो बहुत बारीक बारीक कर के लिख रहा था आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से फ़रमाया : "अपने ख़त़ को इस क़दर बे ढंगा बना कर क्यूं लिख रहे हो अगर तुम ज़िन्दा रहे तो इस लिखाई की वज्ह से नदामत उठाओगे और अगर मर गए तो तुम्हारे बा'द तुम्हें बुरा भला कहा जाएगा और जब तुम बूढ़े हो जाओगे और तुम्हारी आंखें कमज़ोर हो जाएंगी तो तुम ख़ुद अपने इस फ़े'ल पर नादिम व शर्मिन्दा होगे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मजदुद्दीन सरह़की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से ह़िकायत है कि उन्हों ने फ़रमाया : "जब भी हम ने बे एह़तियात़ी के साथ बारीक बारीक और छोटा छोटा कर के लिखा तो सिवाए शर्मिन्दगी के कुछ हाथ न आया। जब कभी हम ने त़वील कलाम से सिर्फ़ थोड़ा सा ह़िस्सा मुन्तख़ब कर के पेश किया तब भी शर्मिन्दगी उठानी पड़ी

www.dawateislami.net

और जब हम ने किसी तहरीर का मुक़ाबला अस्ल नुस्ख़े से नहीं किया हम उस वक़्त भी शर्मिन्दा व नादिम हुवे।"

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! मुनासिब येह है कि किताब वग़ैरा का साइज़ मुरब्बअ़ हो क्यूंकि येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का पसन्दीदा साइज़ है कि ऐसी किताब के उठाने, रखने और मुत़ालआ़ करने में सहूलत रहती है। नीज़ एक त़ालिबे इल्म को सुर्ख़ सियाही का इस्ति'माल भी नहीं करना चाहिये कि सुर्ख़ सियाही इस्ति'माल करना बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का नहीं बल्कि फ़लासिफ़ा का त़रीक़एकार है और हमारे मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام में से बा'ज़ तो सुर्ख़ सियाही के इस्ति'माल को मकरूह जानते थे।

ता'ज़ीमे शुरका

शरीके दर्स इस्लामी भाइयों की ता'ज़ीमो तकरीम भी ता'ज़ीमे इल्म ही का ह़िस्सा है। याद रहे कि चापलूसी और ख़ुशामद करना एक मज़मूम काम है मगर इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये अगर ख़ुशामद की ज़रूरत पेश आए तो त़ालिबे इल्म को चाहिये कि अपने उस्ताज़ और त़ालिबे इल्म इस्लामी भाइयों की ख़ुशामद करे ताकि उन से इल्मी त़ौर पर मुस्तफ़ीद हुवा जा सके।

त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह ह़िक्मत की बातें अदबो एह़तिराम के साथ सुने अगर्चे वोह एक मस्अले या एक कलिमे को हज़ार बार पहले भी सुन चुका हो।

किसी दाना का क़ौल है कि "जिस ने किसी इल्मी बात को हज़ार बार सुनने के बा'द उस की ऐसी ता'ज़ीम नहीं की जैसी ता'ज़ीम उस ने उस मस्अले को पहली मरतबा सुनते वक़्त की थी तो ऐसा शख़्स इल्म का अहल नहीं।"

www.dawateislami.net

अगर कोई त़ालिबे इल्म किसी नए फ़न को सीखना चाहता है तो उसे चाहिये कि उस फ़न का इन्तिख़ाब ख़ुद अपनी राए से न करे बल्कि इस मुआ़मले को अपने उस्ताज़ के सिपुर्द कर दे क्यूंकि एक उस्ताज़ उन कामों में बहुत तजरिबा रखता है वोह जानता है कि कौन सा काम किस के लिये मुनासिब है और उस काम के लिये कौन ज़ियादा लाइक़ है।

हमारे उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बुरहानुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाया करते थे कि "पहले ज़माने के त़ालिबे इल्म अपने ता'लीमी उमूर को अपने असातिज़ा के सिपुर्द कर दिया करते थे। इसी वज्ह से वोह लोग अपनी मुराद को भी पहुंच जाते थे और अपने मक़ासिद भी ह़ासिल कर लिया करते थे लेकिन आज कल के त़लबा उस्ताज़ की रहनुमाई के बिग़ैर मुराद को पहुंचने की कोशिश करते हैं। लिहाज़ा ऐसे त़ालिबे इल्म न तो अपने मक़्सूद तक पहुंचते हैं और न ही उन्हें इल्म व फ़िक़्ह से कोई आगाही होती है।"

ह़िकायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवे और फ़िक़्ह में किताबुस्सलात सीखने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد ने जब इन की त़बीअ़त में फ़िक़्ह में अ़दम दिलचस्पी और इल्मे ह़दीस की त़रफ़ रग़बत देखी तो उन से फ़रमाया : "तुम जाओ और इल्मे ह़दीस ह़ासिल करो।" क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अन्दाज़ा लगा लिया था कि उन की त़बीअ़त इल्मे ह़दीस की त़रफ़ ज़ियादा माइल है। पस जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने अपने उस्ताज़ का मश्वरा क़बूल किया और इल्मे ह़दीस ह़ासिल करना शुरूअ़ किया तो देखने वालों ने देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तमाम अइम्मए ह़दीस से सबक़त ले गए।

www.dawateislami.net

एक तालिबे इल्म को चाहिये कि दौराने सबक़ बिला ज़रूरत उस्ताज़ के बिल्कुल क़रीब न बैठे बल्कि उस्ताज़ और तालिबे इल्म के दरमियान कम अज़ कम एक कमान का फ़ासिला होना चाहिये कि इस तरह बैठने में अदब का पहलू ग़ालिब रहता है।

एक तालिबे इल्म को अख़्लाक़े ज़मीमा (बुरे अख़्लाक़) से एहतिराज़ करना चाहिये क्यूंकि अख़्लाक़े ज़मीमा की मिसाल मा'नवी तौर पर कुत्ते की तरह है और सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَاتَدْخُلُ الْمَلٰئِكَةُ بَيْتًا فِيْهِ كَلْبٌ اَوْصُوْرَةٌ "या'नी रहमत के फ़िरिश्ते ऐसे घर में दाख़िल नहीं होते कि जहां कुत्ता या तस्वीर हो।"(1)

लिहाज़ा अख़्लाक़े ज़मीमा से एहतिराज़ करना ज़रूरी है कि इन्सान इल्म को फ़िरिश्ते ही के ज़रीए सीखता है। बुरे अख़्लाक़ को जानने के लिये "किताबुल अख़्लाक़" का मुतालआ किया जाए कि इस मुख़्तसर सी किताब में अख़्लाक़े ज़मीमा की तफ़्सील बयान नहीं की जा सकती। लिहाज़ा एक तालिबे इल्म को ख़ुसूसन तकब्बुर से ज़रूर बचना चाहिये कि तकब्बुर के साथ इल्म हासिल नहीं हो सकता।

जैसा कि एक शाइर कहता है :

اَلْعِلْمُ حَرْبٌ لِلْفَتَى الْمُتَعَالِى كَالسَّيْلِ حَرْبٌ لِلْمَكَانِ الْعَالِى

तर्जमा : (1).....बुलन्दी के ख़ूगर नौजवान के लिये इल्म उसी तरह मुसीबत है जिस तरह सैलाब ऊंची जगह के लिये मुसीबत होता है।

मेहनत, मुवाज़बत और क़ुव्वते इरादा का बयान

इसी तरह एक तालिबे इल्म को ख़ूब मेहनत करनी चाहिये। चुनान्चे, एक शाइर कहता है कि :

1 .....صحيح مسلم،باب تحريم التصوير،الحديث:٢١٠٦،ص١١٦٥.

www.dawateislami.net

بِــجِـدِّیْ لَابِـجِـدِّ کُـلِّ مَـجْـدِ   فَهَـلْ جَـدٌّ بِلَاجِـدٍّ بِـمَـجْـدِی

فَـکَـمْ عَبْـدٍ یَّقُـوْمُ مَـقَـامَ حُـرٍّ   وَکَــمْ حُــرٍّ یَّـقُـوْمُ مَـقَـامَ عَبْـدِ

तर्जमा : (1).....मैं बुलन्दियों तक अपनी मेह्‌नत व कोशिश से पहुंचा हूं किसी और की मेह्‌नत से नहीं तो क्या उस वक़्त मेरे लिये कोई ख़ुश बख़्ती होती या उन अ़ज़्मतों में कोई हि़स्सा होता अगर मेरी मेह्‌नत उन में शामिल न होती।

(2).....बहुत से ग़ुलाम अपनी मेह्‌नत व कोशिश से आज़ाद लोगों के बराबर हो गए और कितने आज़ाद अपनी सुस्ती और काहिली के सबब ग़ुलाम बन कर रह गए हैं।

एक त़ालिब के लिये सख़्त मेह्‌नत करना और इस पर पाबन्दी करना और साबित क़दमी रखना बहुत ज़रूरी है। जैसा कि इस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन आयात में इशारा किया है :

وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ

(پ۲۱،العنکبوت:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।*

इसी त़रह़ येह फ़रमाया :

یٰیَحْیٰی خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ

(پ۱۶،مریم:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ यह़्या किताब मज़्बूत़ थाम।*

मश्हूर मक़ूला है कि : مَنْ طَلَبَ شَیْئًا وَّجَدَّ وَجَدَ وَمَنْ قَرَعَ الْبَابَ وَلَجَّ وَلَجَ "या'नी जो किसी चीज़ की त़लब में मेह्‌नत व कोशिश करता रहा वोह उसे एक दिन ज़रूर पा लेगा और जो किसी दरवाज़े को खटखटाए और मुसलसल खटखटाता ही चला जाए तो एक दिन वोह उस के अन्दर ज़रूर दाख़िल हो जाएगा।"

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ एक और दाना का क़ौल है कि بِقَدْرِمَا تَتَمَنّٰى تَنَالُ مَا تَتَمَنّٰى "या'नी तू जितना कुछ ह़ासिल करना चाहता है उतना ज़रूर ह़ासिल करेगा।"

कहा जाता है कि "कुछ सीखने और समझने के लिये तीन अफ़राद की कोशिश व मेह़नत का होना ज़रूरी है। वोह तीन अफ़राद येह हैं : (1) त़ालिबे इल्म (2) उस्ताज़ और (3) बाप (अगर ज़िन्दा हो तो)।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सदीदुद्दीन शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने एक मरतबा मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के लिखे हुवे येह सबक़ आमोज़ अश्आ़र सुनाए :

اَلْجِدُّيُدْنِىْ كُلَّ اَمْرٍ شَاسِعٍ وَالْجِدُّيَفْتَحُ كُلَّ بَابٍ مُّغْلَقِ

وَاَحَقُّ خَلْقِ اللّٰهِ بِالْهَمِّ امْرُؤٌ ذُوْهِمَّةٍ يُبْلَى بِعَيْشٍ ضَيِّقِ

وَمِنَ الدَّلِيْلِ عَلَى الْقَضَاءِ وَحُكْمِهٖ بُؤْسُ اللَّبِيْبِ وَطِيْبُ عَيْشِ الْاَحْمَقِ

لٰكِنْ مِّنْ رُّزِقَ الْحِجَى حُرِمَ الْغِنٰى ضِدَّانِ يَفْتَرِقَانِ اَىَّ تَفَرُّقِ

तर्जमा : (1).....मेह़नत व कोशिश हर बईदुल ह़ुसूल चीज़ को क़रीब कर देती है, मेह़नत व कोशिश हर बन्द दरवाज़े को खोल देती है।

(2).....मख़्लूक़े इलाही में ह़ुज़्नो ग़म से दो चार और तंग ज़िन्दगी में वोही रहता है जो मेह़नती और बा ह़ौसला हो।

(3).....अ़क़्लमन्द की बदह़ाली और अह़मक़ की ख़ुशह़ाली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ज़ा व ह़ुक्म पर दलील है।

(4).....जिसे अ़क़्ल व ज़कावत दी गई उसे ऐ़शो इ़शरत से मह़रूम कर दिया जाता है क्यूंकि दो ज़िद्दैन कभी भी जम्अ़ नहीं हो सकतीं।

www.dawateislami.net

एक और शाइ़र कहता है :

تَمَنَّيْتَ اَنْ تُمْسِی فَقِيْهًا مُّنَاظِرًا بِغَيْرِ عَنَاءٍ وَّالْجُنُوْنُ فُنُوْنُ

وَلَيْسَ اكْتِسَابُ الْمَالِ دُوْنَ مَشَقَّةٍ تُحَمِّلُهَا فَالْعِلْمُ كَيْفَ يَكُوْنُ

तर्जमा : (1).....अगर तू बिग़ैर मेह़नत व मशक़्क़त से फ़क़ीह और मुनाज़िर बनना चाहता है तो फिर येह तेरा जुनून है।

(2).....जब माल मशक़्क़त के बिग़ैर ह़ासिल नहीं किया जा सकता कि उस के कमाने के लिये मशक़्क़त उठाता है तो फिर इल्म को जो कि आ'ज़मुल उमूर है तू बिग़ैर मेह़नत व मशक़्क़त के कैसे ह़ासिल कर सकता है !

अबू त़य्यिब कहता है कि :

وَلَمْ اَرَ فِی عُيُوْبِ النَّاسِ عَيْبًا كَنَقْصِ الْقَادِرِيْنَ عَلَى التَّمَامِ

तर्जमा : लोगों में पाए जाने वाले उ़यूब में से मैं ने इस से बड़ा कोई ऐ़ब नहीं देखा कि बा वुजूदे क़ुदरत होने के किसी काम को अधूरा छोड़ दिया जाए।

एक त़ालिबे इल्म के लिये रातों को बेदारी भी एक लाज़िमी चीज़ है जैसा कि एक शाइ़र कहता है :

بِقَدْرِ الْكَدِّ تَكْتَسِبُ الْمَعَالِی وَمَنْ طَلَبَ الْعُلَا سَهِرَ اللَّيَالِی

تَرُوْمُ الْعِزَّ ثُمَّ تَنَامُ لَيْلًا يَغُوْصُ الْبَحْرَ مَنْ طَلَبَ اللَّآلِی

عُلُوُّ الْكَعْبِ بِالْهِمَمِ الْعَوَالِی وَعِزُّ الْمَرْءِ فِی سَهَرِ اللَّيَالِی

وَمَنْ رَّامَ الْعُلَا مِنْ غَيْرِ كَدٍّ اَضَاعَ الْعُمْرَ فِی طَلَبِ الْمُحَالِ

تَرَكْتُ النَّوْمَ رَبِّی فِی اللَّيَالِی لِاَجْلِ رِضَاكَ يَا مَوْلَى الْمَوَالِی

فَوَفِّقْنِی اِلٰى تَحْصِيْلِ عِلْمٍ وَبَلِّغْنِی اِلٰى اَقْصَى الْمَعَالِی

www.dawateislami.net

तर्जमा : (1).....तुम अपनी मेह़नत व लगन के ए'तिबार से तरक़्क़ी पाओगे जो बुलन्दियों को छूना चाहता है वोह रातों को जागता है।

(2).....तू इ़ज़्ज़त का त़लबगार है और फिर रात को सो भी जाता है अरे ग़ाफ़िल मोती ह़ासिल करने के लिये पहले समुन्दर में ग़ौत़े लगाने पड़ते हैं।

(3).....रिफ़्अ़त व बरतरी के लिये मज़बूत़ इरादों की ज़रूरत है और बन्दे को इ़ज़्ज़त का मक़ाम ह़ासिल करने के लिये अपनी रातों को बे ख़्वाब बनाना पड़ता है।

(4).....जो बिग़ैर मेह़नत व मशक़्क़त के बुलन्दियों को छूना चाहता है ऐसा शख़्स अपनी उ़म्र को एक मुह़ाल काम के लिये ज़ाएअ़ कर रहा है।

(5).....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी रिज़ा की ख़ात़िर मैं ने रातों में सोना तर्क कर दिया है।

(6).....पस मुझे तह़सीले इ़ल्म की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और मुझे इ़ल्मो कमाल की आ'ला तरीन बुलन्दियों पर फ़ाइज़ फ़रमा।

एक दाना का क़ौल है कि اِتَّخِذِاللَّيلَ جَمَلًا تُدْرِکْ بِہٖ اَمَلًا "या'नी सारी सारी रात काम में मसरूफ़ रहा करो मक़्सूद को जल्द पा लोगे।"

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इ़ल्म ! ख़ुद मुझे भी इस मौज़ूअ़ पर येह नज़्म लिखने का इत्तिफ़ाक़ हुवा है :

مَنْ شَاءَ اَنْ یَّحْتَوِی اٰمَالَہُ جَمَلًا　　فَلْیَتَّخِذْلَیْلَہُ فِی دَرْکِھَا جَمَلًا

اَقْلِلْ طَعَامَکَ کَیْ تَحْظٰی بِہٖ ثَمَرًا　　اِنْ شِئْتَ یَاصَاحِبِیْ اَنْ تَبْلُغَ الْکَمَلًا

तर्जमा : (1).....जो येह चाहता है कि उस की तमाम ख़्वाहिशें पूरी हो जाएं उसे चाहिये कि उन ख़्वाहिशात की तह़सील के लिये रात भर अपने काम में मसरूफ़ रहे।

(2).....ऐ मेरे दोस्त ! अगर तू फ़ज़्लो कमाल की मन्ज़िल

www.dawateislami.net

तक पहुंचना चाहता है तो अपने खाने को कम कर ताकि तू फ़वाइदो समरात में हिस्सा पा सके।

किसी दाना का क़ौल है कि مَنْ اَسْهَرَنَفْسَهٗ بِاللَّيْلِ فَقَدْفَرِحَ قَلْبُهٗ بِالنَّهَارِ "या'नी जो रातों को जागता है उस का दिन मसर्रत व ख़ुशी से गुज़रता है।"

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! इल्म के लिये रात के अव्वल हिस्से और आख़िरी हिस्से में मुत़ालआ़ करना निहायत ज़रूरी है क्यूंकि मग़रिब व इ़शा के दरमियान का वक़्त और सह़री का वक़्त दोनों बहुत ही मुबारक औक़ात हैं। एक शाइ़र कहता है :

يَاطَالِبَ الْعِلْمِ بَاشِرِالْوَرَعَا وَجَنِّبِ النَّوْمَ وَاتْرُكِ الشِّبَعَا

دَاوِمْ عَلَى الدَّرْسِ لَاتُفَارِقْهُ فَالْعِلْمُ بِالدَّرْسِ قَامَ وَارْتَفَعَا

तर्जमा : (1).....ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! तक़्वा और परहेज़गारी को लाज़िम पकड़, नींद से किनारा कर और शिकम सेर होना छोड़ दे।

(2).....दर्स व तकरार पर मुदावमत इख़्तियार कर कभी इस में नाग़ा मत करना कि इल्म का पौदा दर्स व तकरार ही से खड़ा रहता है और मज़ीद फलता फूलता रहता है।

अल ग़रज़ एक त़ालिबे इल्म को आग़ाज़े जवानी और नौउ़म्री से फ़ाएदा उठाना चाहिये जैसा कि एक शाइ़र कहता है कि :

بِقَدْرِالْكَدِّ تُعْطَى مَاتَرُوْمُ فَمَنْ رَامَ الْمُنٰى لَيْلًا يَّقُوْمُ

وَاَيَّامَ الْحَدَاثَةِ فَاغْتَنِمْهَا اَلَااِنَّ الْحَدَاثَةَ لَا تَدُوْمُ

तर्जमा : (1).....तू अपनी तमन्नाओं को ब क़दरे मेहनत ही ह़ासिल कर सकता है जो ढेरों मक़ासिद ह़ासिल करना चाहता हो उसे चाहिये कि रातों को क़ियाम करे।

(2).....ज़िन्दगी के येह दिन तो आ़रिज़ी हैं इन्हें ग़नीमत जान कर इन से फ़ाएदा उठा लो क्यूंकि आ़रिज़ी चीज़ हमेशा नहीं रहती।

www.dawateislami.net

तालिबे इल्म को चाहिये कि अपने आप को ज़ियादा मेहनत व मशक़्क़त में भी न डाले और अपनी जान पर इतना बोझ भी न डाले कि बन्दा अमल करने से लाचार हो जाए बल्कि इस मुआमले में नर्मी से काम ले कि नर्मी तमाम अश्या की अस्ल है।

मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلَآ اِنَّ هٰذَاالدِّيْنَ مَتِيْنٌ فَاَوْغِلْ فِيْهِ بِرِفْقٍ وَّلَا تُبَغِّضْ اِلٰى نَفْسِكَ عِبَادَةَ اللّٰهِ تَعَالٰى فَاِنَّ الْمُنْبَتَّ لَاارْضًاقَطَعَ وَلَاظَهْرًاابْقٰى

"या'नी बेशक येह दीन पुख़्ता व पाएदार है पस इस में नर्मी के साथ बढ़ते रहो और अपने लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत को नापसन्द न बनाओ क्यूंकि तेज़ी से सफ़र करने वाला मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचता है न ही सुवारी बाक़ी छोड़ता है[1]।"[2]

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : نَفْسُكَ مَطِيَّتُكَ فَارْفُقْ بِهَا "या'नी तेरा नफ़्स तेरी सुवारी है पस इस के साथ नर्मी से पेश आओ।"[3]

एक तालिबे इल्म को तहसीले इल्म के लिये पुख़्ता और मज़बूत इरादों की बहुत सख़्त ज़रूरत होती है कि जिस तरह एक चिड़िया अपने परों की मदद से ही फ़ज़ा में उड़ सकती है बिल्कुल उसी तरह एक इन्सान को बुलन्द परवाज़ के लिये बुलन्द हिम्मतों की ज़रूरत होती है।

---

1 .....इस हदीसे पाक की मज़ीद वज़ाहत के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ़ 868 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लाहे आ'माल, जिल्द अव्वल, सफ़हा 684**" का मुतालआ़ कीजिये।

2 .....كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب الاقتصاد والرفق، الحديث: ٥٣٧٤، ج٣، ص ٢٠.

3 .....بريقه محموديه، الخلق السابع من آفات القلب، ٢/ ٩٧، پشاور

www.dawateislami.net

अबू त़य्यिब कहता है :

عَلٰى قَدْرِ اَهْلِ الْعَزْمِ تَاْتِى الْعَزَائِمُ وَتَاْتِى عَلٰى قَدْرِ الْكِرَامِ الْمَكَارِمُ

وَتَعْظُمُ فِىْ عَيْنِ الصَّغِيْرِ صِغَارُهَا وَتَصْغُرُ فِىْ عَيْنِ الْعَظِيْمِ الْعَظَائِمُ

तर्जमा : (1).....हर बन्दा अपने इरादे के मुत़ाबिक़ ही बड़े बड़े उमूर तक पहुंचता है जिस में जितनी बुज़ुर्गी होगी वोह उसी क़दर बुलन्द मर्तबे को पहुंचेगा।

(2).....छोटे छोटे कम हिम्मत अफ़राद को छोटे छोटे काम भी बहुत बड़े मा'लूम होते हैं और बा हिम्मत अफ़राद की नज़र में बड़े से बड़ा काम कोई वुक़्अ़त नहीं रखता।

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! हर काम के ह़ासिल करने के लिये बुलन्द हिम्मत और सख़्त मेह़नत बुन्यादी चीज़ है पस अगर कोई शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد की तमाम किताबों को याद करने की हिम्मत रखता हो और सख़्त मेह़नत और मुस्तक़िल मिज़ाजी भी उस का साथ दे तो येह एक यक़ीनी अम्र है कि अगर वोह ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ याद न कर सका तो उन का अक्सर या कम अज़ कम निस्फ़ तो याद कर ही लेगा। इस के ब ख़िलाफ़ अगर कोई इरादे तो बड़े बड़े रखता है लेकिन अपने इरादों की तक्मील के लिये मेह़नत बिल्कुल न करता हो या मेह़नत तो करता हो लेकिन उस के सामने मक़्सद कोई न हो तो येह दोनों अफ़राद सिवाए थोड़ा सा इल्म ह़ासिल करने के मज़ीद कुछ ह़ासिल नहीं कर सकेंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ रज़ियुद्दीन नैशापुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपनी किताब "मकारिमुल अख़्लाक़" में येह वाक़िआ़ नक़्ल करते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मशरिक़ से ले कर मग़रिब तक अपना तसल्लुत़ क़ाइम करने के लिये सफ़र करने

www.dawateislami.net

का इरादा किया। चुनान्चे, उन्हों ने हुकमा से मश्वरा किया कि इस सिलसिले में मुझे क्या करना चाहिये और कहा कि "मैं समझता हूं कि मैं ख़्वाह म ख़्वाह इस थोड़ी सी ममलकत के लिये सफ़र करूं क्यूंकि येह दुन्या तो क़लील, फ़ानी और हक़ीर शै है इस दुन्या को हासिल कर लेना न तो कोई भारी काम है और न ही येह हुसूल बुलन्द पाया उमूर में से है।" पस हुकमा ने मश्वरा दिया कि "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ए'लाए कलिमए हक़ के लिये येह सफ़र ज़रूर इख़्तियार करना चाहिये कि इस तरह आप को दुन्या व आख़िरत दोनों में हिस्सा नसीब होगा।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "येह तजवीज़ वाक़ेई अहसन है।"

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُحِبُّ مَعَالِى الْاُمُوْرِ وَيَكْرَهُ سَفْسَافَهَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बुलन्द पाया कामों को पसन्द करता है और हक़ीर व रद्दी कामों को नापसन्द फ़रमाता है।"(1)

एक शाइर कहता है कि :

فَلَا تَعْجَلْ بِاَمْرِكَ وَاسْتَدِمْهُ فَمَاصَلَّى عَصَاكَ كَمُسْتَدِيْم

तर्जमा : तुम अपने काम में उ़जलत न करो बस इस के हुसूल के लिये मुदावमत बरतो क्यूंकि पाबन्दी और इस्तिमरार ही से लाठी की कजी दूर होती है।

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से फ़रमाया कि "तुम तो बहुत कुंद ज़ेहन थे मगर तुम्हारी कोशिश और मुदावमत ने तुम्हें आगे बढ़ाया। लिहाज़ा हमेशा सुस्ती से बचते रहना कि सुस्ती बहुत बड़ी आफ़त और मन्हूस चीज़ है।"

1 .....المعجم الكبير،الحديث:٢٨٩٤،ج٣،ص١٣١.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम अबू नस्र सफ़्फ़ार अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى अपने शे'र में कुछ यूं फ़रमाते हैं :

يَانَفْسِ يَانَفْسِ لَاتُرخِىْ عَنِ الْعَمَلِ فِى الْبِرِّوَالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ فِىْ مَهَلِ

لَكُلُّ ذِىْ عَمَلٍ فِى الْخَيْرِمُغْتَبِطٌ وَفِىْ بَلَاءٍ وَّشُؤْمٍ كُلُّ ذِىْ كَسَلِ

तर्जमा : (1).....ऐ नफ़्स ! फ़ुरसत के वक़्त अ़मल के मुआ़मले में सुस्ती न कर ख़्वाह नेकी हो अ़द्ल हो या एहसान।

(2).....हर अच्छा काम करने वाले पर रश्क किया जाता है जब कि सुस्त लोग बलाओं और नुहूसतों में घिरे रहते हैं।

मुझे भी इस सिलसिले में चन्द अश्आ़र कहने का इत्तिफ़ाक़ हुवा है :

دَعِى نَفْسِى التَّكَاسُلَ وَالتَّوَانِى وَاِلَّافَاثْبُتِىْ فِىْ ذِى الْهَوَانِ

فَلَمْ اَرَ لِلْكُسَالَى الْحَظَّ يُعْطِى سِوَى نَدَمٍ وَّحِرْمَانِ الْاَمَانِ

तर्जमा : (1).....ऐ मेरे नफ़्स ! सुस्ती और काहिली छोड़ दे वरना रुस्वाई ही तेरा मुक़द्दर होगी।

(2).....मैं ने आज तक नहीं देखा कि काहिलों को कुछ मिला हो सिवाए ज़िल्लत व रुस्वाई और महरूमिये अमान के।

एक और शाइ़र कहता है :

كَمْ مِّنْ حَيَاءٍ وَّكَمْ عَجْزٍوَّكَمْ نَدَمٍ جَمٍّ تَوَلَّدَلِلْاِنْسَانِ مِنْ كَسَلِ

اِيَّاكَ عَنْ كَسَلٍ فِى الْبَحْثِ عَنْ شُبَهٍ فَمَاعَلِمْتَ وَمَاقَدْشَذَّعَنْكَ سَل

तर्जमा : (1).....शर्मिन्दगी, उ़ज्ज़ पन और नदामत जैसी बहुत सी ख़ामियां इन्सान को अपनी सुस्ती की बदौलत मिलती हैं।

www.dawateislami.net

(2).....बह्सो मबाहि़स में दरपेश शुब्हात के मुआ़मले में सुस्ती से काम मत लो लिहाज़ा जो जानते हो या जो तुम्हारी फ़ह्म से दूर हो दोनों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करो।

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं कि "इ़ल्म के फ़ज़ाइलो मनाक़िब में ग़ौरो फ़िक्र न करने से सुस्ती व काहिली पैदा हो जाती है। लिहाज़ा एक त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि मेह़नत व कोशिश और मुवाज़बत के साथ साथ इ़ल्म के फ़ज़ाइलो मनाक़िब में ग़ौरो फ़िक्र करता रहे कि मा'लूमात का बाक़ी रहना ही इ़ल्म की बक़ा है।"

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इ़ल्म ! माल तो फ़ना होने वाली चीज़ है जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं :

رَضِيْنَا قِسْمَةَ الْجَبَّارِ فِيْنَا لَنَا عِلْمٌ وَّلِلْاَعْدَاءِ مَالُ

فَاِنَّ الْمَالَ يَفْنٰى عَنْ قَرِيْبٍ وَاِنَّ الْعِلْمَ يَبْقٰى لَايَزَالُ

तर्जमा : (1).....हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस तक़्सीम पर राज़ी हैं कि हमारे ह़िस्से में इ़ल्म आया और दुश्मनों के ह़िस्से में माल।

(2).....क्यूंकि माल अ़न क़रीब फ़ना हो जाएगा जब कि इ़ल्म हमेशा हमेशा बाक़ी रहेगा।

माल के मुक़ाबले में इ़ल्मे नाफ़ेअ़ के ज़रीए़ बन्दे को नेकनामी ह़ासिल होती है और येह नेकनामी उस की मौत के बा'द भी बाक़ी रहती है और येह ही ह़याते अबदी है।

मुफ़्तियुल अइम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ज़हीरुद्दीन ह़सन बिन अ़ली उ़र्फ़ मुरग़ीनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं :

اَلْجَاهِلُوْنَ فَمَوْتٰى قَبْلَ مَوْتِهِمْ وَالْعَالِمُوْنَ وَاِنْ مَّاتُوْا فَاَحْيَاءُ

www.dawateislami.net

तर्जमा : जुहला मरने से पहले भी गोया मुर्दे हैं जब कि उ़लमा अगर्चे दुन्या से तशरीफ़ ले जाएं वोह ज़िक्रे ख़ैर के सबब ज़िन्दा रहते हैं।

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना बुरहानुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं :

وَفِى الْجَهْلِ قَبْلَ الْمَوْتِ مَوْتٌ لِّاَهْلِهٖ فَاَجْسَامُهُمْ قَبْلَ الْقُبُوْرِ قُبُوْرُ

وَاِنَّ امْرَأً لَّمْ يَحْىَ بِالْعِلْمِ مَيِّتٌ وَلَيْسَ لَهٗ حِيْنَ النُّشُوْرِ نُشُوْرُ

तर्जमा : (1).....ह़ालते जहालत मौत आने से क़ब्ल ही जाहिलों के लिये मौत है और इन के अज्साम क़ब्रों में जाने से पहले ही मिस्ले क़ब्र हैं।

(2).....ऐसा शख़्स जिस की वाबस्तगी इल्म के साथ न हो वोह मय्यित की त़रह़ है और बरोज़े क़ियामत (जो कि अहले इल्म के लिये इन्आ़मो इकराम का दिन है) ऐसे शख़्स के लिये कोई ह़िस्सा नहीं।

एक शाइ़र कहता है :

اَخُو الْعِلْمِ حَيٌّ خَالِدًا بَعْدَ مَوْتِهٖ وَاَوْصَالُهٗ تَحْتَ التُّرَابِ رَمِيْمُ

وَذُو الْجَهْلِ مَيِّتٌ وَّهُوَ يَمْشِىْ عَلَى الثَّرٰى يُظَنُّ مِنَ الْاَحْيَاءِ وَهُوَ عَدِيْمُ

तर्जमा : (1).....इल्म से वाबस्ता हर फ़र्द ज़िन्दा रहने वाला है और अपनी मौत के बा'द भी वोह हमेशा ज़िन्दा रहेगा अगर्चे उस की हड्डियां ब ज़ाहिर मिट्टी तले फ़ना हो जाएं।

(2).....एक जाहिल ज़मीन पर चलते फिरते भी मुर्दा है वोह ज़िन्दों में शुमार होने के बा वुजूद मा'दूम है।

एक और शाइ़र कहता है :

حَيَاةُ الْقَلْبِ عِلْمٌ فَاغْتَنِمْهُ وَمَوْتُ الْقَلْبِ جَهْلٌ فَاجْتَنِبْهُ

www.dawateislami.net

तर्जमा : ह़याते क़ल्ब तो इ़ल्म ही पर मुन्ह़सिर है लिहाज़ा इ़ल्म को ह़ासिल कर । जहालत मौते क़ल्ब है लिहाज़ा इस से इजतिनाब कर ।

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना बुरहानुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं :

ذَاالْعِلْمِ اَعْلٰى رُتْبَةً فِى الْمَرَاتِبِ ۔۔۔ وَمِنْ دُوْنِهٖ عِزُّ الْعُلٰى فِى الْمَوَاكِبِ

فَذُو الْعِلْمِ يَبْقٰى عِزُّهٗ مُتَضَاعِفًا ۔۔۔ وَذُو الْجَهْلِ بَعْدَ الْمَوْتِ تَحْتَ التَّيَارِبِ

فَهَيْهَاتَ لَا يَرْجُوْ مَدَاهُ مَنِ ارْتَقٰى ۔۔۔ رُقِىَّ وَلِىِّ الْمُلْكِ وَالِى الْكَتَائِبِ

سَاُمْلِىْ عَلَيْكُمْ بَعْضَ مَا فِيْهِ فَاسْمَعُوْا ۔۔۔ فَبِىْ حَصَرٌ عَنْ ذِكْرِ كُلِّ الْمَنَاقِبِ

هُوَ النُّوْرُ كُلُّ النُّوْرِ يَهْدِىْ عَنِ الْعَمٰى ۔۔۔ وَذُو الْجَهْلِ مَرَّ الدَّهْرِ بَيْنَ الْغَيَاهِبِ

هُوَ الذِّرْوَةُ الشَّمَّاءُ تَحْمِىْ مَنِ الْتَجَا ۔۔۔ اِلَيْهَا وَيَمْشِىْ آمِنًا فِى النَّوَائِبِ

بِهٖ يَنْتَجِىْ وَالنَّاسُ فِىْ غَفَلَاتِهِمْ ۔۔۔ بِهٖ يَرْتَجِىْ وَالرُّوْحُ بَيْنَ التَّرَائِبِ

بِهٖ يَشْفَعُ الْاِنْسَانُ مَنْ رَّاحَ عَاصِيًا ۔۔۔ اِلٰى دَرْكِ النِّيْرَانِ شَرِّ الْعَوَاقِبِ

فَمَنْ رَامَهٗ رَامَ الْمَآرِبَ كُلَّهَا ۔۔۔ وَمَنْ حَازَهٗ قَدْ حَازَ كُلَّ الْمَطَالِبِ

هُوَ الْمَنْصَبُ الْعَالِىْ فَيَا صَاحِبَ الْحِجَا ۔۔۔ اِذَا نِلْتَهٗ هَوِّنْ بِفَوْتِ الْمَنَاصِبِ

فَاِنْ فَاتَكَ الدُّنْيَا وَطِيْبُ نَعِيْمِهَا ۔۔۔ فَغَمِّضْ فَاِنَّ الْعِلْمَ خَيْرُ الْمَوَاهِبِ

तर्जमा : (1).....अहले इ़ल्म का रुत्बा तमाम मरातिब में अरफ़ओ़ आ'ला है । इस के इ़लावा दीगर मरातिब रियासत या किसी जमाअ़त की सरदारी की त़रह़ आ़रिज़ी हैं ।

(2).....अहले इ़ल्म की इ़ज़्ज़त व शोहरत मौत के बा'द भी बढ़ती रहती है जब कि जाहिल की शानो शौकत मौत के बा'द ख़ाक में दफ़्न हो कर फ़ना हो जाती है ।

(3).....हरगिज़ अ़ज़मते इ़ल्म की इन्तिहा को वोह शख़्स जो मुल्क का हुक्मरान और क़ाइदे लश्कर भी हो न पहुंच सकेगा ।

www.dawateislami.net

(4).....मैं तुम्हें इल्म के चन्द फ़ज़ाइल लिखवाता हूं लिहाज़ा इन्हें ग़ौर से सुनो कि इल्म के तमाम फ़ज़ाइलो मनाक़िब बयान करने से मैं आ़जिज़ व क़ासिर हूं।

(5).....इल्म तो एक नूर है और हर नूर अंधेरों में राह दिखाता है जब कि जाहिल उ़म्र भर जहालत के अंधेरों में रहता है।

(6).....इल्म एक ऐसी बुलन्द पाया चोटी है जो हर उस शख़्स को पनाह देती है जो इस से पनाह त़लब करे। इल्म से मुत्तसिफ़ शख़्स हर क़िस्म के ह़ादिसात व ख़त़रात में बे ख़ौफ़ो ख़त़र फिरता रहता है।

(7).....जब लोग ग़फ़्लत में पड़े होते हैं तो बन्दा इल्म के ज़रीए़ ही नजात ह़ासिल करता है। ह़ालते नज़्अ़ में जब कि रूह़ सीने की हड्डियों तक आ पहुंचती है बन्दा इल्म की बदौलत मग़्फ़िरत की उम्मीद रखता है।

(8).....इल्म ही की बदौलत इन्सान ऐसे गुनहगार की शफ़ाअ़त करेगा जो गुनाह करते हुवे दुन्या से गया और जहन्नम के निचले त़बक़े और बुरे अन्जाम तक पहुंच चुका हो।

(9).....जिस ने इल्म को त़लब किया गोया उस ने तमाम तर अग़राज़ो मक़ासिद को त़लब कर लिया पस जिस ने इल्म को जम्अ़ किया तो गोया उस ने तमाम मत़ालिब व मक़ासिद को जम्अ़ कर लिया।

(10).....ऐ साह़िबे अ़क़्ल ! इल्म तो एक बुलन्द पाया मन्सब है जब तू इस मन्सब को पा लेगा तो किसी और मन्सब के न पाने का ग़म न होगा।

(11).....अगर दुन्या और इस की आसाइशें तुझ से छूट जाएं तो कोई बात नहीं इन से आंखें फेर ले कि तेरे पास इल्म है जो कि तमाम ने'मतों में बेहतरीन है।

www.dawateislami.net

एक और शाइर कहता है :

اِذَامَـا اعْتَـزَّ ذُوْعِلْـمٍ بِـعِلْـمٍ   فَعِلْمُ الْفِقْـهِ اَوْلٰـى بِاعْتِـزَازِ

فَكَمْ طِيْبٍ يَّفُوْحُ وَلَا كَمِسْكٍ   وَكَـمْ طَيْـرٍ يَّطِيْـرُ وَلَا كَبَـازِى

तर्जमा : (1).....जब अहले इल्म किसी इल्म के ज़रीए इज़्ज़त हासिल करें तो फिर इल्मे फ़िक़्ह बेहतरीन सामाने इज़्ज़त है।

(2).....यूं तो सारी ख़ुश्बूएं महकती हैं मगर मुश्क की त़रह़ कोई ख़ुश्बू नहीं महक सकती। उड़ते तो सारे ही परन्दे हैं मगर बाज़ की त़रह़ कोई और नहीं उड़ता।

एक और शाइर कहता है :

اَلْفِقْـهُ اَنْفَسُ شَيْءٍ اَنْتَ ذَاخِرُهٗ   مَـنْ يَّدْرُسِ الْعِلْمَ لَمْ تَدْرُسْ مَفَاخِرُهٗ

فَاكْسِبْ لِنَفْسِكَ مَاأَصْبَحْتَ تَجْهَلُهٗ   فَـأَوَّلُ الْـعِـلْـمِ اِقْبَـالٌ وَّآخِـرُهٗ

तर्जमा : (1).....इल्म बड़ी नफ़ीस चीज़ है इसे तुम जम्अ़ कर लो क्यूंकि जो इल्म ह़ासिल कर लेता है उस के मफ़ाख़िर और अस्बाबे शराफ़त मिटते नहीं।

(2).....जब तुम किसी चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ न जानते हो तो अपने लिये उस की मा'लूमात ज़रूर ह़ासिल करो बेशक इल्म का अव्वल व आख़िर सआ़दत ही सआ़दत है।

लज़्ज़ते इल्म पर जो कुछ लिखा गया एक आ़क़िल को तह़सीले इल्म की त़रफ़ रग़बत दिलाने के लिये काफ़ी है।

बलग़म कम करने के अस्बाब

﴾1﴿.....फ़ाज़िल रुतूबतें और बलग़म इन्सान के अन्दर सुस्ती पैदा करती हैं और तक़्लीले त़आ़म बलग़म को कम करने का मुजर्रब नुस्ख़ा है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ 70 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस

www.dawateislami.net

बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि कसरते निस्यान कसरते बलग़म से पैदा होता है और कसरते बलग़म ज़ियादा पानी पीने की वज्ह से होता है और पानी के ब कसरत पिये जाने की वज्ह कसरते त़आ़म है।

﴾2﴿.....सूखी रोटी खाने से भी बलग़म में कमी वाक़ेअ़ होती है।

﴾3﴿.....नहार मुंह किश्मिश खाना भी बलग़म को कम करने के लिये मुफ़ीद चीज़ है।

﴾4﴿.....मिस्वाक करना भी बलग़म को दूर करता, ह़ाफ़िज़ा और फ़साह़त को बढ़ाता है। क्यूंकि मिस्वाक करना बहुत ही प्यारी सुन्नत है और इस से नमाज़ व तिलावते क़ुरआन का सवाब बढ़ा दिया जाता है।

﴾5﴿.....क़ै भी फ़ाज़िल रुत़ूबात और बलग़म में कमी का बाइ़स बनती है।

जो शख़्स कम खाने की आ़दत बनाना चाहता है उसे चाहिये कि कम खाने के फ़वाइद पेशे नज़र रखे। सिह़्ह़तमन्द रहना, इफ़्फ़त से मुत्तसिफ़ होना और ईसार के मवाक़ओं का मयस्सर आना कम खाने के फ़वाइद में से चन्द एक हैं।

فَعَارٌ ثُمَّ عَارٌ ثُمَّ عَارٌ شَقَاءُ الْمَرْءِ مِنْ اَجَلِ الطَّعَامِ

तर्जमा : शर्म ! शर्म ! शर्म ! बन्दे की बद बख़्ती सिर्फ़ खाने की वज्ह से है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

ثَلَاثَةٌ نَفَرٌ يُبْغِضُهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْ غَيْرِ جُرْمٍ اَلْاَكُوْلُ وَالْبَخِيْلُ وَالْمُتَكَبِّر

"या'नी तीन अफ़राद ऐसे हैं कि अगर वोह मज़ीद गुनाहों का इर्तिकाब न भी करें तो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को पसन्द नहीं फ़रमाता : (1) ज़ियादा खाने वाला (2) बख़ील और (3) मुतकब्बिर।"

www.dawateislami.net

बन्दे को कम खाने के फ़वाइद पर नज़र रखने के साथ साथ ज़ियादा खाने के नुक़्सानात पर भी नज़र रखनी चाहिये। इन नुक़्सानात में मुख़्तलिफ़ अमराज़ का सामना और त़बीअ़त का बोझल पन क़ाबिले ज़िक्र हैं। कहा जाता है : اَلْبِطْنَةُ تُذْهِبُ الْفِطْنَةَ "या'नी पेट भर कर खाना ह़ाज़िर दिमाग़ी को कम कर देता है।"

ह़कीम जालीनूस से ह़िकायत है उन्हों ने कहा कि "अनार में कसीर मनाफ़ेअ़ हैं जब कि मछली में बहुत ज़ियादा नुक़्सानात हैं मगर थोड़ी सी मछली खा लेना ढेरों अनार खाने से बेहतर है।"

नीज़ ज़ियादा खाने के नुक़्सानात में से एक बड़ी ख़राबी इतलाफ़े माल है और शिकम सेरी के बा वुजूद खाना तो सरासर नुक़्सान का बाइ़स है और ऐसा बन्दा आख़िरत में इ़क़ाब ही का मुस्तह़िक़ है। नीज़ ज़ियादा खाने वाला लोगों में नापसन्द किया जाता है।

खाने में कमी करने के लिये येह बातें क़ाबिले ज़िक्र हैं कि चर्बीदार और रोग़नी अश्या का इस्ति'माल रखा जाए। लज़ीज़ व नफ़ीस खानों को पहले खाया जाए। भूके आदमी के साथ खाना न खाया जाए। येह बात भी याद रहे कि जब ज़ियादा खाना किसी ग़रज़े सह़ीह़ के लिये हो तो ज़ियादा खाने में कोई ह़रज भी नहीं मसलन बन्दा ज़ियादा खा कर इतनी क़ुव्वत पैदा करना चाहता है कि नमाज़, रोज़ा और आ'माले शाक़्क़ा को अह़सन त़रीक़े से अदा कर सके तो यक़ीनन ज़ियादा खाने में कोई ह़रज नहीं।

www.dawateislami.net

सबक़ को शुरूअ़ करने के त़रीक़े, सबक़ की तरतीब और इस की मिक़्दार का बयान

उस्ताज़ शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना बुरहानुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن सबक़ बुध ही के रोज़ शुरूअ़ फ़रमाया करते थे और इस बात पर एक ह़दीस रिवायत कर के इस पर इस्तिद्लाल फ़रमाया करते थे कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَامِنْ شَیْءٍ بُدِئَ فِی یَوْمِ الْاَرْبَعَاءِ اِلَّا وَقَدْتَم "या'नी कोई ऐसा अ़मल नहीं जिस की इब्तिदा बुध से हुई हो और वोह पायए तक्मील को न पहुंचा हो।"(1)

सबक़ शुरूअ़ करने का येही त़र्ज़े अ़मल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का था और आप इस ह़दीस को अपने उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ क़वामुद्दीन अह़मद बिन अ़ब्दुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد से रिवायत करते हैं और मैं ने चन्द बावुसूक़ लोगों से सुना है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू यूसुफ़ हम्दानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی हर नेक काम को बुध के रोज़ पर मौक़ूफ़ कर दिया करते थे। बुध को कुछ ख़ुसूसिय्यत यूं भी ह़ासिल है कि बुध का दिन वोह दिन है जिस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नूर को पैदा फ़रमाया और यूं येह दिन कुफ़्फ़ार के ह़क़ में मन्ह़ूस और मोमिनीन के ह़क़ में मुबारक साबित होता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ क़ाज़ी उ़मर बिन अबू बक्र ज़रन्जी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی से ह़िकायत बयान करते हैं कि इब्तिदाई त़लबा के लिये सबक़ की मिक़्दार इतनी हो कि जिसे ब आसानी दो मरतबा इआ़दा करने से याद कर सकें।

1 .....کشف الخفاء،الحدیث:۲۱۸۹،ج۲،ص۱۶۳.

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ दरजा ब दरजा हर रोज़ एक कलिमे का इज़ाफ़ा करता रहे यहां तक कि अगर सबक़ त़वील और ज़ियादा हो जाए तो दो मरतबा इआ़दा से याद हो सके। बहर ह़ाल सबक़ आहिस्ता आहिस्ता दरजा ब दरजा बढ़ाता चला जाए। ब सूरते दीगर अगर इब्तिदा ही में सबक़ ज़ियादा कर लिया और उसे समझाने के लिये उस सबक़ को दस मरतबा दोहराना पड़ा तो फिर आख़िर तक वोह इस का आ़दी हो जाएगा और येह आ़दत फिर आसानी से नहीं छूटेगी। कहा जाता है कि اَلسَّبْقُ حَرْفٌ وَالتَّكْرَارُ اَلْفٌ "या'नी सबक़ एक ह़र्फ़ हो और तकरार एक हज़ार बार होनी चाहिये।"

त़ालिबे इल्म के लिये मुनासिब येह है कि वोह सबक़ की इब्तिदा उस चीज़ से करे जो उस की फ़ह्म के क़रीब तर हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम शरफ़ुद्दीन अ़क़ीली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाया करते थे कि मेरे नज़दीक दुरुस्त येही है जो हमारे मशाइख़ करते थे कि वोह इब्तिदाई त़ालिब के लिये मबसूत़ कुतुब से अख़्ज़ कर्दा मुख़्तसर मवाद का इन्तिख़ाब फ़रमाते थे क्यूंकि येह मवाद समझने और याद करने के लिये ज़ियादा मौज़ूं रहता है और येह त़रीक़ा परेशानी से बचाने वाला है और ज़ियादा तर लोगों में येही राइज है।

त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि उस्ताज़ से सबक़ ह़ासिल करे और बार बार इआ़दा करने के बा'द उस को लिख कर क़ैद कर ले कि इस त़रह़ करना बहुत ज़ियादा फ़ाएदे मन्द है।

त़ालिबे इल्म को कोई भी ऐसी चीज़ नहीं लिखनी चाहिये जो उस ने समझी न हो क्यूंकि इस त़रह़ लिख लेना त़बीअ़त की परेशानी और ज़ह़ानत को खो देने और ज़ियाए वक़्त का मूजिब होगा।

त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह अपने उस्ताज़ ही से सबक़ समझने की कोशिश करे या ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र और कसरते तकरार से सबक़ को समझने की कोशिश करे जब सबक़ कम होगा

www.dawateislami.net

और तकरार व तअम्मुल ज़ियादा होगा तो सबक़ से मुतअ़ल्लिक़ फ़हम व इदराक भी अच्छी त़रह़ ह़ासिल होगा। कहा जाता है कि

حِفْظُ حَرْفَيْنِ خَيْرٌمِّنْ سَمَاعِ وِقْرَيْنِ وَفَهْمُ حَرْفَيْنِ خَيْرٌمِّنْ حِفْظِ وِقْرَيْنِ

"या'नी दो ज़ख़ीरे किताबों के सुन लेने से बेहतर दो ह़र्फ़ याद कर लेना है और दो ज़ख़ीरे किताबों के याद कर लेने से बेहतर दो ह़र्फ़ समझ लेना है।"

जब त़ालिबे इल्म सबक़ के समझने में सुस्ती से काम लेता है और एक दो मरतबा भी समझने की कोशिश नहीं करता तो अब येह उस की आ़दत बन जाती है और उसे आसान तर कलाम भी समझ में नहीं आता लिहाज़ा त़ालिबे इल्म को चाहिये कि सबक़ को समझने में सुस्ती न करे बल्कि मेह़नत से काम ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करता और गिड़ गिड़ाता रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर दुआ करने वाले की दुआ क़बूल करता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उम्मीदें वाबस्ता रखे तो वोह मालिके बह़रोबर उसे मायूस नहीं फ़रमाता।

इमामे अजल्ल ह़ज़रते सय्यिदुना क़वामुद्दीन इब्राहीम बिन इस्माईल सग़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ख़लील बिन अह़मद सजज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल अश्आ़र हमें सुनाए :

اُخْدُمِ الْعِلْمَ خِدْمَةَالْمُسْتَفِيْدِ وَأَدِمْ دَرْسَهٗ بِعَقْلٍ حَمِيْدِ
وَاِذَامَاحَفِظْتَ شَيْئًااَعِدْهُ ثُمَّ أَكِّدْهُ غَايَةَالتَّاكِيْدِ
ثُمَّ عَلِّقْهُ كَيْ تَعُوْدَاِلَيْهِ وَاِلٰى دَرْسِهٖ عَلَى التَّابِيْدِ
وَاِذَامَاأَمِنْتَ مِنْهُ فَوَاتًا فَانْتَدِبْ بَعْدَهٗ لِشَيْءٍجَدِيْدِ
مَعَ تَكْرَارِمَاتَقَدَّمَ مِنْهُ اِعْتِنَاءً بِشَأْنِ هٰذَا الْمَزِيْدِ

www.dawateislami.net

ذَاكِرِالنَّاسَ بِالْعُلُوْمِ لِتَحْيَا لَا تَكُنْ مِّنْ اُولِى النُّهٰى بِبَعِيْدِ

اِنْ كَتَمْتَ الْعُلُوْمَ اُنْسِيْتَ حَتّٰى لَاتَرٰى غَيْرَ جَاهِلٍ وَّبَلِيْدِ

ثُمَّ اُلْجِمْتَ فِى الْقِيَامَةِ نَارًا وَتَلَهَّبْتَ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ

तर्जमा : (1).....इल्म की इस त़रह़ ख़िदमत करो कि जिस त़रह़ इस से फ़ाएदा ह़ासिल करने वाला ख़ुद मेह़नत से काम लेता है अपने अस्बाक़ को अ़क़्ले ह़मीद की मदद से हमेशा हमेशा पढ़ते रहो।

(2).....और जब कभी किसी चीज़ को याद करो तो उस को ख़ूब दोहराओ फिर उस को जिस क़दर पुख़्ता कर सकते हो कर लो।

(3).....फिर उस को नोट कर लो ताकि तुम हमेशा अपने दर्स को पा सको।

(4).....और जब तू इस सबक़ के फ़ौत हो जाने से बे ख़ौफ़ हो जाए तो नई शै की तह़्सील की त़रफ़ जल्दी कर।

(5).....साथ साथ जो गुज़र चुका उस का भी तकरार होना चाहिये मज़ीद हिम्मत का एहतिमाम करते हुवे।

(6).....और लोगों से इल्मी मुज़ाकरात जारी रखो ताकि उ़लूम ज़िन्दा रहें और कभी भी ज़ी फ़ह्म लोगों से दूर न रहो।

(7).....अगर तू ने उ़लूम को छुपाया तो याद रख कि तू उसे भूल जाएगा फिर तू जाहिल और कुंद ज़ेह्न के सिवा कुछ न समझा जाएगा।

(8).....फिर ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन तुम्हें आग की लगाम पहनाई जाए और तुम शदीद अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाओ।

त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वोह मुज़ाकरा, मुनाज़रा और इल्मी मुक़ाबला करता रहे पस मुनासिब येह है कि इन उमूर को ग़ौरो फ़िक्र और तअम्मुल के साथ अन्जाम दे और ग़ुस्सा और हंगामा आराई से इजतिनाब करे क्यूंकि येह मुनाज़रा व मुज़ाकरा तो एक त़रह़

www.dawateislami.net

इल्मी मुशावरत है और मुशावरत तो राहे सवाब ह़ासिल करने के लिये होती है और राहे सवाब सिर्फ़ इन्साफ़ और ग़ौरो फ़िक्र ही से ह़ासिल हो सकती है न कि ग़ुस्सा और हंगामा आराई के ज़रीए। अगर मुनाज़रा करते वक़्त किसी की निय्यत येह हो कि मद्दे मुक़ाबिल को ज़ेर किया जाए तो उस के लिये मुनाज़रा करना जाइज़ नहीं मुनाज़रा सिर्फ़ इज़्हारे ह़क़ के लिये जाइज़ है। मुनाज़रे में ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात करना या ह़ीला वग़ैरा करना जाइज़ नहीं मगर जब मद्दे मुक़ाबिल त़ालिबे ह़क़ न हो बल्कि सरकश हो तो उस वक़्त जाइज़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन यह़्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बारे में आता है कि जब उन के सामने कोई मुश्किल सुवाल पेश किया जाता और उन्हें जवाब मा'लूम न होता तो यूं फ़रमाते : مَاالْزَمْتَهُ لَازِمٌ وَّاَنَافِيْهِ نَاظِرٌ وَّفَوْقَ كُلِّ ذِیْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ "या'नी तू ने जो कुछ वारिद किया वोह वाक़ेई लाज़िम है मैं इस में नज़र करूंगा बेशक हर जानने वाले के ऊपर जानने वाला है।"

मुनाज़रा और मुत़ारह़ा (इल्मी मुक़ाबला) सिर्फ़ तकरार करने के मुक़ाबले में ज़ियादा फ़ाएदे मन्द है क्यूंकि इस में तकरार के साथ साथ मा'लूमात में भी इज़ाफ़ा होता है। कहा जाता है कि مُطَارَحَةُ سَاعَةٍ خَيْرٌ مِّنْ تَكْرَارِ شَهْرٍ "या'नी एक घड़ी इल्मी मुक़ाबला करना एक माह की तकरार से बेहतर है।"

लेकिन येह उस वक़्त है जब मुनाज़रा किसी मुन्सिफ़ और सलीमुत्त़ब्अ़ आदमी के साथ हो और ख़बरदार किसी ज़िल्लत पसन्द और ग़ैर मुस्तक़ीमुत्त़ब्अ़ शख़्स के साथ मुज़ाकरा नहीं करना चाहिये क्यूंकि त़बीअ़त असर को क़बूल करती है और ख़स्लतें मुतअ़द्दी होती हैं और सोह़बत एक दिन ज़रूर रंग ले आती है।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد का वोह शे'र जिसे हम ने मा क़ब्ल ज़िक्र किया था बहुत ज़ियादा फ़वाइदो समरात का ह़ामिल है। एक शाइ़र कहता है :

اَلْعِلْمُ مِنْ شَرْطِهٖ لِمَنْ خَدَمَهٗ اَنْ يَّجْعَلَ النَّاسَ كُلَّهُمْ خَدَمَهٗ

तर्जमा : इल्म की शराइत़ में येह बात शामिल है कि जो इल्म की ख़िदमत करेगा एक दिन तमाम लोग भी उस के ख़ादिम होंगे।

त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि हर वक़्त इल्मी बारीकियों में सोच बिचार करने को अपनी आ़दत बनाए रखे कि बेशक बारीकियां सोच बिचार ही से समझ में आएंगी।

इसी वज्ह से किसी ने कहा है कि تَأَمَّلْ تُدْرِكْ "या'नी सोच व बिचार किया करो ख़ुद ही समझ जाओगे।"

और गुफ़्तगू से पहले तो लाज़िमी त़ौर पर ग़ौर कर लेना चाहिये ताकि कलाम बा मक़्सद हो क्यूंकि गुफ़्तगू की मिसाल तीर की त़रह़ है इस लिये चाहिये कि मुंह से अल्फ़ाज़ निकालने से पहले सोच व बिचार कर लिया जाए ताकि बोले गए अल्फ़ाज़ बा मक़्सद साबित हों। साह़िबे उसूले फ़िक़्ह फ़रमाते हैं कि "एक फ़क़ीह और मुनाज़िर के लिये तमाम चीज़ों की अस्ल येह है कि वोह सोच समझ कर कलाम करे।" किसी ने यूं भी कहा है कि رَأْسُ الْعَقْلِ اَنْ يَّكُوْنَ الْكَلَامُ بِالتَّثَبُّتِ وَالتَّأَمُّلِ "या'नी अ़क़्ल के लिये अस्ल येह है कि बन्दे का कलाम सोच समझ और पुख़्तगी के साथ हो।"

एक शाइ़र कहता है :

اُوْصِيْكَ فِيْ نَظْمِ الْكَلَامِ بِخَمْسَةٍ اِنْ كُنْتَ لِلْمُوْصِي الشَّفِيْقِ مُطِيْعًا

لَا تُغْفِلَنْ سَبَبَ الْكَلَامِ وَوَقْتَهٗ وَالْكَيْفَ وَالْكَمَّ وَالْمَكَانَ جَمِيْعًا

www.dawateislami.net

तर्जमा : (1).....अगर तू शफ़ीक़ नासेह़ की बात माने तो मैं तुझे त़र्ज़े गुफ़्तगू से मुतअ़ल्लिक़ पांच चीज़ें वसिय्यत करता हूं।

(2).....पस कभी भी इन से ग़फ़्लत न करना वोह येह कि कलाम करने से पहले ज़रूरत का लिह़ाज़, वक़्ते गुफ़्तगू का ख़याल, त़र्ज़े गुफ़्तगू, मिक़्दारे गुफ़्तगू और मकान या'नी मुक़तज़ा ह़ाल को पेशे नज़र रखना।

त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि हमा वक़्त किसी न किसी से इस्तिफ़ादा करता रहे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि اَلْحِكْمَةُ ضَالَّةُ الْمُؤْمِنِ اَيْنَمَا وَجَدَهَا اَخَذَهَا "या'नी इल्मो ह़िक्मत मोमिन की गुमशुदा मीरास है इसे जहां पाए ह़ासिल कर ले।"(1)

किसी ने यूं कहा है कि : خُذْمَاصَفَاوَدَعْ مَاكَدُرَ "या'नी अच्छाइयों को थामे रख और गन्दगियों से किनारा कर।"

ख़ुद मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम फ़ख़रुद्दीन काशानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى से सुना वोह फ़रमाते थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की एक लौंडी अमानत के त़ौर पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد के पास थी एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से पूछा कि "अभी तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की फ़िक़्ह में से कुछ याद है।" लौंडी कहने लगी कि "कुछ और तो याद नहीं सिर्फ़ इतना याद है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि : سَهْمُ الدَّوْرِسَاقِطٌ या'नी ह़िस्सए दौरां मो'तबर नहीं।"

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه، الحدیث: ٢٦٩٦، ج٤، ص٣١٤۔
فردوس الاخبار، الحدیث: ٢٥٩٢، ج١، ص٣٥٢.

www.dawateislami.net

पस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد ने इस मस्अले को याद कर लिया क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद इस मस्अले में उलझे हुवे थे और लौंडी की इस बात से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सारे इश्काल दूर हो गए। तो इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि इस्तिफ़ादा हर किसी से किया जा सकता है।

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया कि "आप ने इतना इ़ल्म कैसे ह़ासिल कर लिया ?" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : مَا اسْتَنْكَفْتُ مِنَ الْاِسْتِفَادَةِ وَمَا بَخِلْتُ بِالْاِفَادَةِ "या'नी मैं ने सीखने में आ़र महसूस की न दूसरों को फ़ाएदा पहुंचाने में बुख़्ल किया।"

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से पूछा गया कि "आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इतना इ़ल्म कैसे ह़ासिल किया ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : بِلِسَانٍ سَئُوْلٍ وَّقَلْبٍ عَقُوْلٍ "या'नी बहुत ज़ियादा सुवाल करने वाली ज़बान और बेदार दिल के ज़रीए।"

पहले ज़माने में त़ालिबे इ़ल्म को कसरते सुवाल की वज्ह से مَا تَقُوْل के नाम से पुकारा जाता था क्यूंकि त़ालिबे इ़ल्मों की आ़दत थी वोह कसरत से : مَا تَقُوْلُ فِی هٰذِهِ الْمَسْئَلَةِ "या'नी आप इस मस्अले के बारे में क्या फ़रमाते हैं ?" कहा करते थे।"

ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم इस वज्ह से बहुत बड़े फ़क़ीह बने कि जब वोह कपड़े बेचा करते थे तो उस वक़्त भी अपनी दुकान में ब कसरत इ़ल्मी मुबाह़से व मुनाज़रे फ़रमाया करते थे। इस बात से मा'लूम हुवा कि तह़सीले इ़ल्मो फ़िक़्ह का कारोबार के साथ जम्अ़ होना मुमकिन है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़फ़्स कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر की आ़दत थी कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब कस्बे मुआ़श के लिये निकलते

www.dawateislami.net

थे तो कस्ब के साथ साथ तकरार भी फ़रमाया करते थे। अगर त़ालिबे इल्म को अपने अहलो इयाल की ज़रूरिय्यात को पूरा करने के लिये काम करना पड़े तो उसे चाहिये कि वोह काम काज भी करे और साथ साथ तकरार भी करता जाए और इल्मी मुज़ाकरा भी करता रहे इस में हरगिज़ सुस्ती न करे। इल्मो फ़िक़्ह सीखने के तर्क पर एक सालिमुल बदन और सह़ीहुल अ़क़्ल का कोई उ़ज़्र क़बूल नहीं किया जा सकता क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ज़ियादा तो कोई फ़क़ीर न होगा फिर भी तंगदस्ती और फ़क़्र इन्हें तह़सीले इल्म से न रोक सकी।

जिस शख़्स के पास बेश बहा माल हो तो येह पाकीज़ा माल उस मर्द के ह़क़ में क्या ही अच्छा है जो उसे इल्म के रास्ते में ख़र्च करता है। एक आ़लिम साहि़ब से पूछा गया कि "आप ने इतना इल्म कैसे ह़ासिल किया?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "एक ग़नी बाप की वज्ह से।" क्यूंकि वोह अपने ग़ना के सबब से अहले इल्म के साथ हुस्ने सुलूक रखते थे। लिहाज़ा उन का येह अ़मल इल्म में ज़ियादती का सबब बना। इस की वज्ह येह है कि अ़क़्ल व इल्म की ने'मत पर येह अ़मल इज़्हारे शुक्र था और शुक्र तो ज़ियादती ही का सबब हुवा करता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का फ़रमान है कि "बेशक मैं ने इल्म को ह़म्द व शुक्र के सबब ही ह़ासिल किया है। वोह इस त़रह़ कि जब भी मैं कोई इल्मी बात समझ लेता और उस की तह तक पहुंच जाता हूं तो इस के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه ज़रूर कहता हूं। पस मेरा इल्म बढ़ता चला गया।" लिहाज़ा त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह अपनी ज़बान, दीगर आ'ज़ा और माल के ज़रीए़ इज़्हारे तशक्कुर करता रहे और इल्मो फ़हम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़तिय्या

www.dawateislami.net

समझे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हिदायत की दुआ करता रहे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर दुआ व गिर्या व ज़ारी को अपना मा'मूल बनाए रखे। बेशक जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हिदायत त़लब करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर हिदायत देता है। अहले ह़क़ (जो कि अहले सुन्नत व जमाअ़त ही हैं) ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जो कि दर ह़क़ीक़त हिदायत देने वाला और गुमराही से बचाने वाला है हिदायत त़लब की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अ़त़ा फ़रमाई और उन्हें गुमराही से महफ़ूज़ फ़रमा दिया जब कि गुमराह फ़िर्क़े अपनी राए व अ़क़्ल के घमन्ड में मुब्तला रहे उन्हों ने ह़क़ को एक मख़्लूक़े आ़जिज़ या'नी अ़क़्ल के ज़रीए तलाश करना चाहा लिहाज़ा गुमराह हो गए।

अ़क़्ल इस वज्ह से आ़जिज़ है कि अ़क़्ल तमाम अश्या का इदराक नहीं कर सकती जैसा कि किसी की निगाह तमाम अश्या को नहीं देख सकती। पस अ़क़्ल के ज़रीए ह़क़ को त़लब करने पर ह़क़ उन से मख़्फ़ी रहा और जब वोह लोग मा'रिफ़ते ह़क़ से आ़जिज़ हो गए तो ख़ुद भी गुमराह हुवे और दूसरों को भी गुमराह किया।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ عَرَفَ رَبَّهٗ "या'नी जो अपने आप को पहचान ले वोह रब عَزَّوَجَلَّ को भी पहचान लेता है।"(1)

मत़लब येह है कि जब बन्दा ख़ुद को पहचान लेता है तो रब عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त उसे ख़ुद ब ख़ुद ह़ासिल हो जाती है। लिहाज़ा बन्दे को कभी भी अपने आप पर और अपनी अ़क़्ल पर ए'तिमाद नहीं करना चाहिये बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही पर तवक्कुल करना चाहिये और उसी से ह़क़ त़लब करना चाहिये क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

1 .....كشف الخفاء،الحديث: ٢٥٣٠، ج٢، ص٢٣٤.

www.dawateislami.net

وَمَنۡ یَّتَوَکَّلۡ عَلَی اللّٰہِ فَھُوَ حَسۡبُہٗ ؕ (پ۲۸،الطلاق:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो* ***अल्लाह*** *पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।*

और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ उसे सीधी राह दिखाता है। अगर कोई मालदार है तो उसे बुख़्ल से हरगिज़ काम नहीं लेना चाहिये बल्कि हमेशा बुख़्ल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगनी चाहिये।

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَیُّ دَاءٍ اَدْوَأُ مِنَ الْبُخْلِ ''या'नी बुख़्ल से बढ़ कर और कौन सी बीमारी नुक़्सान देह है !''[1]

हज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुल अइम्मा हल्वानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के वालिद बहुत मुफ़्लिस और तंगदस्त थे और मिठाई बना कर बेचा करते थे उन की आदत थी कि अक्सरो बेशतर फ़ुक़हाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام को मिठाइयां वग़ैरा भेजते रहते थे और उन से अ़र्ज़ करते कि बस मेरे बेटे के लिये दुआ़ फ़रमाया करें। उन की सख़ावत, हुस्ने अ़क़ीदत और गिर्या व ज़ारी का नतीजा येह निकला कि उन के बेटे या'नी हज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुल अइम्मा हल्वानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने इल्म के आ'ला मदारिज को तै किया और वोह अपने वक़्त के माया नाज़ आ़लिम साबित हुवे। नीज़ मालदार हज़रात को चाहिये कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام को किताबें ख़रीद कर दें। नई किताबों की इशाअ़त करवाएं कि येह सब कुछ इल्म व फ़िक़्ह की इशाअ़त के लिये निहायत मुआ़विन साबित होगा।

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में आता है कि आप इतने मालदार थे कि 300 अफ़राद आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के माल के हिसाबो किताब पर मामूर थे लेकिन इन्हों ने अपना सारा माल

[1]......المعجم الکبیر،الحدیث:۱۶۳،۱۶۴،ج۱۹،ص۸۱.

www.dawateislami.net

इल्म व फ़िक़्ह की तरवीजो इशाअ़त के लिये ख़र्च कर दिया ह़त्ता कि इन के पास कपड़ों का कोई उ़म्दा जोड़ा भी बाक़ी न रहा।

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन्हें निहायत फटे पुराने कपड़ों में देखा तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन के लिये एक उ़म्दा जोड़ा भिजवा दिया लेकिन आप ने उसे क़बूल करने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि "कुछ लोगों को येह ने'मतें पहले दे दी गईं मगर हमें येह ने'मतें आख़िरत में मिलेंगी।" बा वुजूद येह कि तोह़्फ़ा क़बूल करना सुन्नत है मगर फिर भी आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे क़बूल न किया। इस की एक वज्ह येह भी हो सकती है कि इस में तज़लीले नफ़्स का पहलू निकलता था जो कि नाजाइज़ है क्यूंकि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَیْسَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ اَنْ یُّذِلَّ نَفْسَہٗ "या'नी मोमिन के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपने नफ़्स को ज़िल्लत में डाले।"(1)

मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ फ़ख़रुल इस्लाम अरसाबन्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने ज़मीन पर पड़े हुवे तरबूज़ के छिल्कों को जम्अ़ फ़रमाया और उन्हें धो कर तनावुल फ़रमा लिया। क़रीब एक लौंडी खड़ी येह सब कुछ देख रही थी उस ने जा कर येह सारा माजरा अपने आक़ा को सुनाया आक़ा ने येह सुनते ही उन के लिये खाना तय्यार करने का हुक्म दिया और उन्हें अपने हां खाने पर त़लब किया ताकि उन की ख़िदमत की जा सके। लेकिन आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी इ़ज़्ज़ते नफ़्स की वज्ह से दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर दिया।

लिहाज़ा एक त़ालिबे इल्म को भी ग़ैरत मन्द होना चाहिये और अपनी इ़ज़्ज़ते नफ़्स की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये और लोगों के माल पर नज़रे त़म्अ़ नहीं रखनी चाहिये।

---

1 .....جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی النھی عن سب الریاح، الحدیث: ۲۲۶۱، ج٤، ص۱۱۲.

www.dawateislami.net

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِيَّاكَ وَالطَّمْعَ فَاِنَّهٗ فَقْرٌ حَاضِرٌ "या'नी लालच से बचो (कि तुम फ़क़्र से बचने के लिये त़म्अ़ करते हो मगर) त़म्अ़ बज़ाते ख़ुद फ़क़्रे ह़ाज़िर है।"(1)

लिहाज़ा जिस के पास मालो अस्बाब हों उसे बुख़्ल से काम नहीं लेना चाहिये बल्कि उसे इस माल को अपने ऊपर और दूसरों पर ख़र्च करते रहना चाहिये।

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلنَّاسُ مِنْ خَوْفِ الْفَقْرِ فِى فَقْرٍ "या'नी लोग मोह़ताजी का ख़ौफ़ करते करते मोह़ताज हो गए।"

पहले ज़माने में त़लबा का येह त़रीक़ए कार था कि पहले कोई काम सीखते और इस के बा'द तह़सीले इ़ल्म की त़रफ़ मुतवज्जेह होते थे ताकि लोगों के माल की त़रफ़ ह़िर्स पैदा न हो। वैसे भी ह़िक्मत व दानाई की एक बात येह भी है कि जो दीगर लोगों के माल से अमीर बनना चाहता है वोह बजाए अमीर बनने के मुफ़्लिस व फ़क़ीर हो जाता है। अगर कोई आ़लिम लालची होगा तो न वोह इ़ल्म की इ़ज़्ज़तो आबरू का पास रख सकता है और न ही वोह कोई ह़क़ बात कह सकता है। इसी वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ता'लीमे उम्मत के लिये त़म्अ़ से पनाह मांगा करते थे और यूं दुआ़ किया करते थे : اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ طَمَعٍ يُّدْنِىْ اِلٰى طَبَعٍ "या'नी मैं उस ह़िर्स से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं जो ऐ़बदार कर दे।"(2)

1 .....المعجم الاوسط،الحديث:٧٧٥٣،ج٥،ص٤٠٣.

2 .....المسنداللامام احمدبن حنبل،حديث معاذبن جبل،الحديث:٢٢٠٨٢،ج٨،ص٢٣٧.

www.dawateislami.net

एक मुसलमान के लिये लाज़िमी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी और से उम्मीद न रखे और न ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी से डरे। इस बात का फ़ैसला कि इन्सान सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से उम्मीद रखता है और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से डरता है, तब होगा कि जब येह देखा जाए कि येह शख़्स हद्दे शरअ़ से तजावुज़ करता है या नहीं ? वोह इस त़रह़ कि बन्दा अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी मख़्लूक़ के डर से करता है तो फिर यक़ीनन ग़ैरुल्लाह से डरता है और अगर येह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी मख़्लूक़ के डर से नहीं करता और हद्दे शरअ़ का भी लिहाज़ रखता है तो तब जा कर येह साबित होगा कि येह बन्दा ग़ैरुल्लाह से नहीं सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है। और इसी पर क़ियास करते हुवे रजा का मुआ़मला है।

एक त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह तकरार करने की ता'दाद और मिक़्दारे सबक़ को मुतअ़य्यन कर ले क्यूंकि क़ल्ब में उ़लूम उस वक़्त तक रासिख़ नहीं हो सकते जब तक अस्बाक़ का अच्छी त़रह़ तकरार न कर लिया जाए।

एक त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह गुज़श्ता सबक़ का दिन में पांच बार तकरार करे जब कि परसों का सबक़ चार बार तकरार करे और तरसों का सबक़ तीन मरतबा और इस से पहले वाले सबक़ का दो मरतबा और गुज़श्ता छटे रोज़ का सबक़ एक बार रोज़ाना ज़रूर तकरार करे। येह त़रीक़ए कार इल्म को मह़फ़ूज़ रखने का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

एक त़ालिबे इल्म को दिल ही दिल में तकरार करने की आ़दत नहीं डालनी चाहिये बल्कि सबक़ पढ़ते वक़्त और तकरार करते वक़्त चुस्ती व तवानाई से काम लेना चाहिये लेकिन येह भी न हो कि इतनी

www.dawateislami.net

ज़ोर ज़ोर से सबक़ पढ़ा जाए या तकरार की जाए कि बन्दा जल्द ही थक जाए और सबक़ याद करना छोड़ दे बल्कि (ह़दीसे मुबारका) خَيْرُ الْاُمُوْرِ اَوْسَطُهَا [1] के तह़्त मियाना रवी से काम लेना चाहिये।

ह़िकायत बयान की जाती है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के साथ इल्मी मुज़ाकरा फ़रमाया करते थे तो ख़ूब चुस्ती और तवानाई का मुज़ाहरा फ़रमाते थे और ख़ूब हश्शाश बश्शाश नज़र आते। एक मरतबा उन के दामाद भी उन के मुज़ाकरे में मौजूद थे। वोह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देख कर फ़रमाने लगे कि "मैं ह़ैरान हूं कि येह पांच दिन से भूके हैं लेकिन इस के बा वुजूद इतने हश्शाश बश्शाश नज़र आ रहे हैं!"

एक त़ालिबे इल्म को तह़्सीले इल्म के दौरान कभी रुख़्सत व नाग़ा भी नहीं करना चाहिये क्यूंकि येह उस के लिये बहुत नुक़्सान देह है।

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाया करते थे कि मैं अपने तमाम रुफ़क़ा पर सिर्फ़ इस लिये फ़ौक़िय्यत ले गया कि मैं ने तह़्सीले इल्म के दौरान कभी छुट्टी नहीं की।

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्बीजानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى का येह वाक़िआ़ भी बयान किया जाता है कि उस ज़माने में जब वोह त़ालिबे इल्म थे और तह़्सीले इल्म में मसरूफ़ थे एक मरतबा मुल्क में इन्क़िलाब आ जाने की वज्ह से शो'बए इल्म में बारह साल तक ता'त़िल रहा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जब येह देखा तो एक त़ालिबे इल्म इस्लामी भाई को ले कर एक ख़ुफ़्या जगह चले गए जहां येह लोग तह़्सीले इल्म को मुमकिन बना सकें और 12 साल तक येह

1 .....المصنف لابن ابی شیبه، کتاب الزهد، مطرف بن الشخیر، الحدیث: ۱۳، ج۸، ص۲٤٦.

www.dawateislami.net

लोग आपस में मिल जुल कर पढ़ते रहे यहां तक कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के येह इस्लामी भाई शवाफ़ेअ़ के शैख़ुल इस्लाम कहलाए। येह ख़ुद भी मज़हबन शाफ़ेई थे।

फ़ख़रुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का फ़रमान है कि "फ़िक़्ह सीखने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह फ़िक़्ह की एक किताब हमेशा के लिये ह़िफ़्ज़ कर ले ताकि फ़िक़्ह के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात का ह़ासिल करना उस के लिये आसान हो जाए।"

अहम्मिय्यते तवक्कुल का बयान

एक त़ालिबे इल्म को तह़सीले इल्म के दौरान तवक्कुल अ़लल्लाह इख़्तियार करना बहुत ज़रूरी है। उसे रिज़्क़ के मुआ़मले में फ़िक्रो ग़म से बिल्कुल काम नहीं लेना चाहिये और न ही दिली त़ौर पर उस के मुतअ़ल्लिक़ सोच बिचार करना चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन जुबैदी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ تَفَقَّهَ فِی دِیْنِ اللّٰهِ كَفَاهُ اللّٰهُ تَعَالٰی هَمَّهٗ وَرَزَقَهٗ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِب "या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन के लिये फ़िक़्ह सीखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ज़रूरिय्यात का कफ़ील हो जाता है और उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ फ़राहम करता है जिस का येह गुमान तक नहीं रखता।"(1)

वोह शख़्स कि जिस का दिल हर वक़्त रिज़्क़, ख़ूराक और लिबास की फ़िक्र ही में लगा रहता है ऐसा शख़्स मकारिमे अख़्लाक़ और बुलन्द पाया उमूर के लिये बहुत ही कम वक़्त निकाल सकता है। एक शाइ़र ऐसे शख़्स के बारे में तन्क़ीद करते हुवे कहता है कि :

1 .....جامع بیان العلم،باب جامع فی فضل العلم،الحدیث:۱۹۸،ص٦٦.

www.dawateislami.net

دَعِ الْمَكَارِمَ لَا تَرْحَلْ لِبُغْيَتِهَا وَاقْعُدْفَاِنَّكَ اَنْتَ الطَّاعِمُ الْكَاسِى

तर्जमा : मकारिमे अख़्लाक़ को छोड़ कि इन के लिये सफ़र करने की क्या ज़रूरत है ! बस ! बैठ जा कि तेरा काम तो सिर्फ़ खाना और पहनना है।

एक मरतबा एक शख़्स ने मन्सूर ह़ल्लाज से कहा कि "मुझे कोई नसीह़त कीजिये।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "याद रखो ! तुम्हारा नफ़्स एक ऐसी चीज़ है कि अगर तुम ने इसे नेक कामों में मश्ग़ूल न रखा तो येह तुम्हें अपनी ख़्वाहिशात के ह़ुसूल में मश्ग़ूल कर देगा।" लिहाज़ा हर किसी को चाहिये कि अपने नफ़्स को कारे ख़ैर में मसरूफ़ रखे ताकि वोह उसे ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया में न फंसा सके। पस एक अ़क़्लमन्द को दुन्या के बारे में फ़िक्रमन्द नहीं होना चाहिये क्यूंकि फ़िक्रो ग़म न तो किसी मुसीबत को टाल सकते हैं और न ही कोई नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं बल्कि फ़िक्रो ग़म करना दिलो दिमाग़ और बदन के लिये बहुत नुक़्सान देह और नेक आ'माल में ख़लल पैदा करने वाला है। बन्दे को चाहिये कि दुन्या का फ़िक्रो ग़म करने के बजाए अपनी आख़िरत की फ़िक्र करे कि येह फ़िक्र बहुत फ़ाएदे मन्द है। और जहां तक इस ह़दीसे पाक का तअ़ल्लुक़ है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ مِنَ الذُّنُوْبِ ذُنُوْبًا لَا يُكَفِّرُهَا اِلَّا هَمُّ الْمَعِيْشَةِ "या'नी बेशक कुछ गुनाह ऐसे होते हैं कि जिन का कफ़्फ़ारा सिर्फ़ फ़िक्रे मुआ़श ही है।"(1)

तो इस ह़दीस में वोह फ़िक्रे मुआ़श मुराद है जो कि आ'माले ख़ैर में मुख़िल न हो और न ही ऐसी फ़िक्र हो जो दिल को इतना मश्ग़ूल कर दे कि नमाज़ में ह़ुज़ूरे क़ल्ब न हो सके। लिहाज़ा ऐसी फ़िक्रे मुआ़श यक़ीनन फ़िक्रे आख़िरत है।

1 .....المعجم الاوسط،الحديث:١٠٢،ج١،ص٤٢.

www.dawateislami.net

नीज़ एक ता़लिबे इ़ल्म के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह जितना मुमकिन हो दुन्यावी मुआ़मलात से दूर रहे कि इसी वज्ह से पहले के उ़लमा तह़सीले इ़ल्म के लिये सफ़र इख़्तियार किया करते थे।

जब एक ता़लिबे इ़ल्म **राहे इ़ल्म** में सफ़र इख़्तियार करे तो फिर इस राह में आने वाली हर तक्लीफ़ को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करना चाहिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सफ़रे इ़ल्म ही की तकालीफ़ के बारे में फ़रमाते हैं :

لَقَدْ لَقِیْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿۶۲﴾ (پ۱۵،الکھف:۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा।*

आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी ज़िन्दगी में और बहुत से सफ़र किये मगर किसी सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ इज़्हारे मशक़्क़त नहीं फ़रमाया बल्कि सफ़रे इ़ल्म ही के मुतअ़ल्लिक़ इज़्हारे मशक़्क़त हुवा कि मा'लूम हो जाए **राहे इ़ल्म** तकालीफ़ से ख़ाली नहीं। चूंकि इ़ल्म एक अ़ज़ीम चीज़ है और अक्सर उ़लमा के नज़्दीक जिहाद करने से भी अफ़्ज़ल है और अज्रो सवाब का क़ाइदा भी तो येही है कि जो काम जितना ज़ियादा मुश्किल होगा उस का सवाब उसी क़दर ज़ियादा होगा। जो शख़्स राहे इ़ल्मे दीन में पहुंचने वाली तकालीफ़ को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करता है तो फिर वोह एक ऐसी लज़्ज़त पा लेता है जो दुन्या भर की लज़्ज़तों से ज़ियादा लज़ीज़ होती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الصَّمَد जब सारी रात जागते और किसी मुश्किल मस्अले को ह़ल करने में कामयाब हो जाते तो फ़रमाते कि "शहज़ादों को भला येह लज़्ज़त कहां मह़सूस हो सकती है !"

एक ता़लिबे इ़ल्म के लिये निहायत ज़रूरी है कि वोह त़लबे इ़ल्म के सिवा दीगर अश्या की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न दे और इ़ल्मे

www.dawateislami.net

फ़िक़्ह सीखने से ए'राज़ न करे । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं कि तह़सीले इल्म का ज़माना तो मह्द से ले कर लह्द तक है। अगर कोई बद नसीब इल्म से घड़ी भर के लिये दूर होना चाहता है तो उसे डरना चाहिये कि कहीं वक़्त उस से मुंह न मोड़ ले क्यूंकि त़लबे इल्म में कच्चा इरादा समर ख़ैज़ नहीं होता।

एक फ़क़ीह, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मौत के वक़्त इन की इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवे उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर जां कनी की कैफ़िय्यत त़ारी थी । फिर भी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अहम्मिय्यते इल्म जताने के लिये उन से पूछा कि "रमिये जिमार सुवार हो कर करना अफ़्ज़ल है या पैदल ?" जब उन से कोई जवाब न बन पड़ा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ुद ही इस का जवाब दिया। लिहाज़ा एक फ़क़ीह के लिये ज़रूरी है कि वोह तमाम वक़्त तह़सीले फ़िक़्ह में मश्ग़ूल रहे तब ही कहीं जा कर उस को लज़्ज़ते इल्म मह़सूस होगी।

किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد को ख़्वाब में देख कर पूछा : كَيْفَ كُنْتَ فِي حَالِ النَّزْعِ "या'नी आप ने ह़ालते नज़्अ़ को कैसा पाया ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया कि "मैं उस वक़्त मुकातब ग़ुलाम के मुतअ़ल्लिक़ फ़िक्रो तअम्मुल में खोया हुवा था मुझे तो पता ही नहीं चला कि मेरी रूह़ कब निकली !"

कहा जाता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد ने अपनी उ़म्र के आख़िरी वक़्त में फ़रमाया कि "मुझे मुकातब ग़ुलाम के मसाइल ने इस क़दर मश्ग़ूल रखा कि मुझ से उस दिन के लिये कोई तय्यारी नहीं हो सकी ।" बहर ह़ाल येह तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد की आ़जिज़ी थी (मगर इन वाक़िआ़त से आप की इल्मी मसरूफ़ियात का अन्दाज़ा ब ख़ूबी लगाया जा सकता है।)

www.dawateislami.net

तह़सीले इल्म के मौजूं औक़ात का बयान

कहा जाता है कि وَقْتُ التَّعَلُّمِ مِنَ الْمَهْدِاِلَى اللَّحْدِ "या'नी इल्म सीखने की मुद्दत तो महद से ले कर लह़द तक है।"

तह़सीले इल्म के लिये बेहतरीन वक़्त इब्तिदाई जवानी, वक़्ते सह़र और मग़रिब व इशा के दरमियान का वक़्त है। लेकिन येह बात तो अफ़्ज़लिय्यत की थी मगर एक त़ालिब को तो हर वक़्त तह़सीले इल्म में मुस्तग़रक़ रहना चाहिये। अगर एक चीज़ से उक्ता जाए तो दूसरी चीज़ की तह़सील में मश्ग़ूल हो जाए कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बारे में आता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब उ़मूमी गुफ़्तगू से उक्ता जाते तो शो'रा के दीवान मंगवा कर उन्हें पढ़ने लग जाते।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد हमेशा शब बेदारी फ़रमाया करते थे और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास मुख़्तलिफ़ क़िस्म की किताबें रखी होती थीं। जब एक फ़न पढ़ते पढ़ते थक जाते तो दूसरे फ़न के मुत़ालए़ में लग जाते थे।[1]

शफ़क़त व नसीह़त की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत का बयान

एक त़ालिबे इल्म को निहायत मुशफ़िक़ होना चाहिये और लोगों से ह़सद करने के बजाए उन्हें नसीह़त करनी चाहिये क्यूंकि ह़सद करना किसी को कोई फ़ाएदा नहीं पहुंचा सकता बल्कि हमेशा नुक़्सान ही पहुंचाता है। शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं कि "अक्सर एक आ़लिम का बेटा भी आ़लिम

---

1 .....एक रिवायत में यूं भी आया है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने पास पानी रखा करते थे जब नींद का ग़लबा होने लगता तो पानी के छींटों से नींद दूर करते और फ़रमाते कि "नींद गर्मी से है लिहाज़ा इसे ठन्डे पानी से दूर करो"।

www.dawateislami.net

ही बनता है। इस की वज्ह येह होती है कि एक आ़लिम की येह सोच हुवा करती है कि उस के शागिर्द भी उ़लमा बनें। पस दूसरों से हुस्ने ए'तिक़ाद और शफ़्क़त करने की बरकत से ख़ुद उस का लड़का भी एक दिन ज़रूर आ़लिम बनता है।''

मन्क़ूल है कि सद्रे अजल्ल ह़ज़रते सय्यिदुना बुरहानुल अइम्मा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दीगर त़लबा से फ़राग़त के बा'द अपने दोनों बेटों सद्रे शहीद ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िसामुद्दीन और सद्रे सईद ह़ज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन عَلَيْهِمَا رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن को पढ़ाने के लिये दोपहर का वक़्त मुक़र्रर किया हुवा था एक दिन इन दोनों ने शिक्वा किया कि ''दोपहर के वक़्त त़बीअ़त जल्द ही उक्ता जाती है और थकावट हो जाती है लिहाज़ा आप पहले हमें पढ़ा दिया करें।'' येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''येह त़लबा जो कि मुसाफ़िर भी हैं दुन्या के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों से मेरे पास इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये आए हैं लिहाज़ा पहले इन्हें पढ़ाना ज़रूरी है।'' पस दीगर त़लबा पर शफ़्क़त के बाइ़स इन के दोनों लड़कों ने वोह मक़ाम ह़ासिल किया कि येह दोनों अपने ज़माने के बेशतर फ़ुक़हा पर फ़ौक़िय्यत ले गए।

एक त़ालिबे इ़ल्म को लड़ाई झगड़े से भी गुरेज़ करना चाहिये क्यूंकि झगड़ा और फ़साद वक़्त को ज़ाएअ़ कर के रख देता है। एक दाना का क़ौल है कि : اَلْمُحْسِنُ سَيُجْزَى بِاِحْسَانِهٖ وَالْمُسِيْءُ سَتَكْفِيْهِ مَسَاوِيْهِ ''या'नी भलाई करने वाले को एक न एक दिन एह़सान का बदला ज़रूर मिलेगा जब कि बुराई करने वाले को तो जज़ा में उस की बुराइयां ही काफ़ी हैं।''

रुक्नुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र उ़र्फ़ मुफ़्तिये ख़वाहर ज़ादा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि सुल्त़ानुश्शरीआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं कि :

www.dawateislami.net

لَاتَجْزِ اِنْسَانًا عَلٰى سُوْءِ فِعْلِهٖ سَيَكْفِيْهِ مَافِيْهِ وَمَاهُوَ فَاعِلُهٗ

तर्जमा : तुझे किसी इन्सान को उस के बुरे अ़मल की सज़ा देने की ज़रूरत नहीं बल्कि उस के बुरे करतूत ही उस के लिये काफ़ी हैं।

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं कि जिस के दिल में दुश्मन को ज़ेर करने का तूफ़ान बरपा हो उसे चाहिये कि मज़कूरा शे'र को बार बार पढ़े :

एक शाइ़र कहता है :

اِذَاشِئْتَ اَنْ تُلْقِىَ عَدُوَّكَ رَاغِمًا وَتَقْتُلَهٗ غَمًّا وَّتَحْرِقَهٗ هَمًّا

فَرُمْ لِلْعُلَا وَازْدَدْمِنَ الْعِلْمِ اِنَّهٗ مَنِ ازْدَادَعِلْمًازَادَحَاسِدُهٗ غَمًّا

तर्जमा : (1).....अगर तुम येह चाहते हो कि अपने दुश्मन की नाक ख़ाक में मिला दो और उसे रंजो ग़म की आग में जला मारो।

(2).....तो फिर तुम्हें चाहिये कि बुलन्दियों पर नज़र रखते हुवे तह़सीले इ़ल्म में आगे से आगे निकल जाओ क्यूंकि जो इ़ल्मो फ़ज़्ल में आ'ला मक़ाम ह़ासिल कर लेता है उस के ह़ासिदीन ख़ुद ही जल कर राख हो जाते हैं।

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इ़ल्म ! तुम्हें चाहिये कि अपने काम में लगे रहो और अपने दुश्मन को ज़ेर करने की फ़िक्रें छोड़ दो कि जब तुम अपने काम में ध्यान दोगे और आ'ला मक़ाम ह़ासिल कर लोगे तो तुम्हारा दुश्मन ख़ुद ही ज़ेर हो जाएगा और तुम्हें ख़्वाह म ख़्वाह की दुश्मनी मोल लेने से बचना चाहिये वरना येह दुश्मनी तुम्हें ज़लील कर के रख देगी और तुम्हारे क़ीमती औक़ात भी ज़ाएअ़ कर देगी। तुम्हें तो सब्रो तह़म्मुल से काम लेना चाहिये ख़ुसूसन अह़मक़ लोगों की बातों पर ज़रूर तह़म्मुल का मुज़ाहरा करना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَاالصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का फ़रमान है कि :

www.dawateislami.net

اِحْتَمِلُوْا مِنَ السَّفِیْهِ وَاحِدَةً کَیْ تَرْبَحُوْا عَشْرًا "या'नी अह़मक़ की बातों पर एक बार सब्रो तह़म्मुल इख़्तियार करो ताकि दस गुना ज़ियादा सवाब पा सको ।"

एक शाइ़र कहता है कि :

بَلَوْتُ النَّاسَ قَرْنًا بَعْدَقَرْنٍ فَلَمْ اَرَغَیْرَخَتَّالٍ وَّقَالِیْ

وَلَمْ اَرَفِی الْخُطُوْبِ اَشَدَّوَقْعًا وَاَصْعَبَ مِنْ مُّعَادَاةِ الرِّجَالِ

وَذُقْتُ مَرَارَةَ الْاَشْیَاءِ طُرًّا فَمَاشَیْءٌ اَمَرَّمِنَ السُّؤَالِ

तर्जमा : (1).....मैं ने सदियों पीछे तक लोगों को खंगाल मारा लेकिन उन को मुतकब्बिर और कीना परवर के इ़लावा कुछ न पाया ।

(2).....मैं ने बड़े बड़े कामों में सब से ज़ियादा वुक़ूअ़ पज़ीर, दुश्वार गुज़ार और तक्लीफ़ देह काम लोगों की दुश्मनी से ज़ियादा कोई और न पाया ।

(3).....मैं ने बहुत सी कड़वी अश्या को चखा और इस नतीजे पर पहुंचा कि किसी के आगे सुवाल करने से ज़ियादा कोई और चीज़ तल्ख़ नहीं ।

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इ़ल्म ! ख़बरदार कभी भी मुसलमानों के मुतअ़ल्लिक़ बद गुमानी मत रखना क्यूंकि बद गुमानी से अ़दावत पैदा होती है और येह एक ह़राम फ़े'ल है । सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ظُنُّوْا بِالْمُؤْمِنِیْنَ خَیْرًا "या'नी मुसलमानों से अच्छा गुमान रखो ।"(1)

गन्दी ज़ेहनिय्यत और बद निय्यती से बद गुमानी पैदा होती है । जैसा कि अबू त़य्यिब ने कहा :

اِذَاسَاءَ فِعْلُ الْمَرْءِ سَاءَتْ ظُنُوْنُهٗ وَصَدَّقَ مَایَعْتَادُهٗ مِنْ تَوَهُّمِ

وَعَادٰی مُحِبِّیْهِ بِقَوْلِ عُدَاتِهٖ وَاَصْبَحَ فِیْ لَیْلٍ مِّنَ الشَّکِّ مُظْلِمِ

(1)......المعجم الکبیر،الحدیث:۲۳۹،ج۲۳،ص۱۵۶.

www.dawateislami.net

तर्जमा : (1).....जब बन्दा बुरे आ'माल करता है तो उस के ख़यालात भी गन्दे हो जाते हैं ह़त्ता कि वोह ज़ेह्न में आने वाले औहाम को भी सच गरदानने लगता है।

(2).....येह शख़्स दुश्मनों की बदौलत अपनों का भी दुश्मन हो जाता है और उस के रोशन दिन भी शको शुबुहात की तारीकियों में बसर होते हैं।

एक और शाइ़र कहता है :

تَنَحَّ عَنِ الْقَبِيْحِ وَلَا تُرِدْهُ وَمَنْ أَوْلَيْتَهُ حَسَنًا فَزِدْهُ

سَتُكْفَى مِنْ عَدُوِّكَ كُلَّ كَيْدٍ اِذَا كَادَالْعَدُوُّ فَلَا تُكِدْهُ

तर्जमा : (1).....हर वक़्त बुराइयों में लगे रहने के बजाए उन से किनारा कशी इख़्तियार करो और जिन से भलाई का इरादा करो तो फिर उस के साथ ख़ूब भलाई करो।

(2).....तुम अपने दुश्मन की हर क़िस्म की मक्कारियों से नजात पा जाओगे बशर्ते कि जब तुम्हारा दुश्मन मक्कारी से काम ले तो तुम उस के साथ मक्कारी से पेश न आओ।

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़त्ह़ बुस्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं :

ذُوالْعَقْلِ لَايَسْلَمُ مِنْ جَاهِلٍ يَسُوْمُهُ ظُلْمًاوَّاِعْنَاتَا

فَلْيَخْتَرِ السِّلْمَ عَلٰى حَرْبِهٖ وَلْيَلْزَمِ الْاِنْصَاتَ اِنْ صَاتَا

तर्जमा : (1).....एक ज़ी अ़क़्ल किसी जाहिल के शर से महफ़ूज़ नहीं रह सकता बल्कि जाहिल उस पर ज़ुल्मो ज़ियादती के मन्सूबे बनाता रहता है।

(2).....एक अच्छे इन्सान को तो लड़ाई झगड़े के बजाए सुल्ह़ व सफ़ाई को इख़्तियार करना चाहिये और उसे दुश्मन की ललकार पर भी सुकूनत ही से काम लेना चाहिये।

www.dawateislami.net

त़रीक़ए इस्तिफ़ादा का बयान

एक त़ालिबे इल्म को हर वक़्त मसरूफ़े अ़मल रहना चाहिये ताकि वोह इल्मो फ़ज़्ल में ख़ूब कमाल ह़ासिल कर सके। इल्म से ह़क़ीक़ी इस्तिफ़ादा करने का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि त़ालिबे इल्म के पास हर वक़्त क़लम व दवात होनी चाहिये ताकि जो भी फ़ाएदे मन्द बात सुने उसे फ़ौरन लिख ले। कहा जाता है कि مَنْ حَفِظَ فَرَّ وَمَنْ كَتَبَ شَيْئًا قَرَّ "या'नी जिस ने सिर्फ़ याद करने पर इन्हिसार किया तो अ़न क़रीब वोह शै ज़ेह्न से निकल जाएगी और जो शख़्स लिख लेता है तो अब वोह चीज़ क़रार पकड़ लेती है।"

कहा जाता है कि "इल्म तो वोही है जो अहले इल्म की ज़बानों से सुन कर ह़ासिल किया गया हो क्यूंकि वोह इल्म उन की ज़िन्दगी का निचोड़ होता है। वोह इस त़रह़ कि वोह जो कुछ सुनते हैं उस में से अह़सन और उ़म्दा मह़फ़ूज़ कर लेते हैं और वोह जो बातें मह़फ़ूज़ किये हुवे हैं वोह सब उ़म्दा और बेहतर ही होतीं हैं जिसे वोह बयान करते हैं।"

मैं ने शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अदीब मुख़्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को फ़रमाते सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को इल्मो ह़िक्मत की बातें सिखा रहे हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने जो कुछ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को सिखाया वोह मुझे भी सिखा दीजिये।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तेरे पास क़लमदान है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास क़लमदान

www.dawateislami.net

तो नहीं है।" तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ हिलाल बिन यसार ! क़लमदान को अपने से जुदा मत करो क्यूंकि क़लमदान और इसे रखने वाला, दोनों के लिये क़ियामत तक ख़ैर ही ख़ैर है।"

सद्रे शहीद ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िसामुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن को नसीह़त करते हुवे फ़रमाया कि "रोज़ाना कुछ न कुछ इल्मो ह़िक्मत की बातें याद कर लिया करो कि एक दिन बढ़ कर येह सब कुछ एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा बन जाएगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़साम बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में आता है कि "उन्हों ने एक मरतबा एक क़लम एक दीनार के बदले ख़रीदा ताकि मुफ़ीद बातें सुन कर लिख सकें।"

ऐ अ़ज़ीज़ त़ालिबे इल्म ! ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है और इल्म का समुन्दर बहुत वसीअ़ है। लिहाज़ा एक त़ालिबे इल्म को चाहिये कि वोह अपने औक़ात बिल्कुल ज़ाएअ़ न करे बल्कि अपने फ़ारिग़ औक़ात और अपनी रातों को ग़नीमत जानते हुवे उन से फ़ाएदा उठाए। ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : اَللَّيْلُ طَوِيْلٌ فَلَا تُقَصِّرْهُ بِمَنَامِكَ وَالنَّهَارُ مُضِيْءٌ فَلَا تُكَدِّرْهُ بِآثَامِكَ "या'नी त़वील रातों को सो सो कर ज़ाएअ़ मत करो और रोशन दिन को अपने गुनाहों के मैल से मैला मत बनाओ।"

एक त़ालिबे इल्म को चाहिये कि बुज़ुर्गों की सोह़बत को ग़नीमत समझे और उन से इस्तिफ़ादा करता रहे क्यूंकि जो चीज़ छूट जाए वोह फिर ह़ासिल नहीं होती। जैसा कि हमारे उस्ताज़े मोह़तरम साह़िबे हिदाया शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना बुरहानुद्दीन

www.dawateislami.net

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن आ़जिज़न इसी बात की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाते हैं कि "मैं ने बहुत से बुज़ुर्गों का ज़माना पाया मगर अफ़्सोस कि मैं उन से इस्तिफ़ादा न कर सका।"

इस्तिफ़ादए ख़ैर के फ़ौत होने पर मैं ने भी येह शे'र लिखा है :

لَھَفِی عَلٰی فَوْتِ التَّلَاقِیْ لَھُفًا مَا کُلُّ مَافَاتَ وَیَفْنٰی وِیُلْفٰی

तर्जमा : अफ़्सोस ! बुज़ुर्गों की सोह़बत के छूट जाने पर सद अफ़्सोस ! हर वोह चीज़ जो ख़त्म हो जाए वोह फिर नहीं मिलती।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि "जब किसी काम में लग जाओ तो फिर उस में ऐसे मगन हो जाओ कि बस हर वक़्त उसी के हुसूल में कोशां रहो। दुन्या व आख़िरत की रुस्वाई के लिये इल्मे दीन से ए'राज़ करना ही काफ़ी है। लिहाज़ा दिन रात इस बात से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगनी चाहिये।

एक त़ालिबे इल्म को राहे इल्मे दीन में आने वाले मसाइब और ज़िल्लतों को भी ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करना चाहिये। ख़ुशामद व चापलूसी बेशक एक मज़मूम चीज़ है। लेकिन अगर त़लबे इल्म के लिये ख़ुशामद से काम लेना पड़े तो कोई ह़रज नहीं कि बा'ज़ औक़ात त़ालिबे इल्म को अपने असातिज़ा व शुरका की ख़ुशामद भी करनी पड़ती है।

कहा जाता है कि :

اَلْعِلْمُ عِزٌّ لَاذُلَّ فِیْہِ وَلَایُدْرَکُ اِلَّابِذُلٍّ لَاعِزَّفِیْہِ

तर्जमा : इल्म एक ऐसी इ़ज़्ज़त है कि जिस में कोई ज़िल्लत नहीं और हर इ़ज़्ज़त ज़िल्लत उठाने के बा'द ही मिलती है।

www.dawateislami.net

एक शाइर कहता है :

أَرَى لَکَ نَفْسًا تَشْتَهِی أَنْ تُعِزَّهَا فَلَسْتَ تَنَالُ الْعِزَّ حَتّٰی تُذِلَّهَا

तर्जमा : मैं देखता हूं कि तेरा एक नफ़्स है तेरी ख़्वाहिश होती है कि तू उसे बा इज़्ज़त रखे मगर तू उस वक़्त तक इज़्ज़त हासिल नहीं कर सकता जब तक तू अपने नफ़्स को ज़लील न करे।

दौराने ता'लीम अहम्मिय्यते परहेज़गारी का बयान

बा'ज़ बुज़ुर्ग رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن इस मौज़ूअ़ पर रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से एक ह़दीस नक़्ल करते हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ لَمْ يَتَوَرَّعْ فِی تَعَلُّمِهٖ اِبْتَلَاهُ اللّٰهُ تَعَالٰی بِاَحَدِ ثَلَاثَةِ اَشْيَاءَ اِمَّا اَنْ يُّمِيْتَهٗ فِیْ شَبَابِهٖ اَوْ يُوْقِعَهٗ فِی الرَّسَاتِيْقِ اَوْ يَبْتَلِيَهٗ بِخِدْمَةِ السُّلْطَانِ

"या'नी जो त़ालिबे इल्मी के ज़माने में परहेज़गारी इख़्तियार नहीं करता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तीन अश्या में से किसी एक में मुब्तला फ़रमा देता है या तो उसे जवानी में मौत देता है या फिर वोह बा वुजूद इल्म होने के क़रिया ब क़रिया मारा मारा फिरता है या फिर वोह सारी उ़म्र हुक्मरानों की ग़ुलामी करता रहता है।"

अल ग़रज़ त़ालिबे इल्म जितना ज़ियादा परहेज़गार होता है उस का इल्म भी उसी क़दर नफ़्अ़ बख़्श होता है और उसी क़दर उस के लिये इल्म का ह़ुसूल आसान हो जाता है और उस इल्म के समरात व फ़वाइद भी ख़ूब ज़ाहिर होते हैं। एक त़ालिबे इल्म के लिये सब से बड़ी परहेज़गारी की बात तो येह है कि उसे कसरते त़आ़म, कसरते मनाम और कसरते कलाम से इजतिनाब करना चाहिये। नीज़ एक त़ालिबे इल्म को अगर मुमकिन हो तो ग़ैर मुफ़ीद और बाज़ारी खाने

www.dawateislami.net

से भी परहेज़ करना चाहिये क्यूंकि बाज़ारी खाना इन्सान को ख़ियानत व गन्दगी के क़रीब और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से दूर कर देता है। इस की वज्ह येह है कि बाज़ार के खानों पर ग़ुरबा और फ़ुक़रा की नज़रें भी पड़तीं हैं और वोह अपनी ग़ुरबत व इफ़्लास की बिना पर जब उस खाने को नहीं ख़रीद सकते तो वोह दिल आज़ुर्दा हो जाते हैं और यूं उस खाने से बरकत उठ जाती है।

मन्क़ूल है कि इमामे जलील ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दौराने ता'लीम कभी भी बाज़ार से खाना नहीं खाया उन के वालिद साह़िब गाऊं में रहा करते थे और वोह हर जुमुआ़ को उन के लिये खाना तय्यार कर के ले आते थे। एक मरतबा जब वोह खाना तय्यार कर के ले कर आए तो उन्हों ने उन के कमरे में बाज़ार की रोटी रखी देखी। येह देखते ही ग़ुस्से से लाल-पीले हो गए और अपने लड़के से बात तक नहीं की। साह़िबज़ादे ने मा'ज़िरत करते हुवे अ़र्ज़ की, कि "येह रोटी बाज़ार से मैं ख़रीद कर नहीं लाया हूं बल्कि मेरा रफ़ीक़ मेरी रिज़ामन्दी के बिग़ैर ख़रीद कर लाया था।" उन के वालिद साह़िब ने येह सुन कर उन को डांटते हुवे फ़रमाया : "अगर तुम्हारे अन्दर तक़्वा व परहेज़गारी की सिफ़त होती तो तुम्हारे दोस्त को भी येह जुरअत कभी न होती।" येह आ़लम होता है हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के तक़्वे का तभी तो येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या हर दम इ़ल्म की नश्रो इशाअ़त में मसरूफ़े अ़मल रहे। इन की इन्ही काविशों की वज्ह से इन का नाम क़ियामत तक बाक़ी रहेगा।

एक फ़क़ीह ज़ाहिद ने एक मरतबा एक त़ालिबे इ़ल्म को वसिय्यत करते हुवे फ़रमाया कि "तुझ पर लाज़िम है कि ग़ीबत से बचते रहो और बातूनी त़लबा के साथ बैठने से परहेज़ करो

www.dawateislami.net

क्यूंकि जो फ़ुज़ूल कलाम ज़ियादा करता है वोह यक़ीनन तेरी उ़म्र को बरबाद और तेरे औक़ात को ज़ाएअ़ कर देगा।''

नीज़ परहेज़गारी के कामों में से एक येह भी है कि झगड़ालू, इ़स्यां शिआ़र और बेकार अफ़राद की सोह़बत से बचा जाए और नेक लोगों की सोह़बत को इख़्तियार किया जाए कि सोह़बत एक दिन ज़रूर रंग लाती है। इसी त़रह़ एक त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि हमेशा क़िब्ला रू बैठे और हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर सख़्ती से अ़मल करे। लोगों की दुआ़ओं को ग़नीमत समझे और मज़लूम की बद दुआ़ से हमेशा अपने आप को बचाए।

मन्क़ूल है कि दो त़ालिबे इ़ल्म, त़लबे इ़ल्म के लिये परदेस गए। दो साल तक दोनों हम सबक़ रहे। दो साल के बा'द जब वोह अपने शहर वापस लौटे तो उन में से एक तो फ़क़ीह बन चुका था जब कि दूसरा इ़ल्मो कमाल से ख़ाली था। उस शहर के उ़लमा और फ़ुक़हा ने इस बारे में ख़ूब ग़ौरो ख़ौ़ज़ किया और उन्हों ने उन दोनों के ह़ुसूले इ़ल्म के त़रीक़ए कार, अन्दाज़े तकरार और बैठने के अत़वार वग़ैरा के बारे में तह़क़ीक़ की तो उन्हें पता चला कि वोह शख़्स जो फ़क़ीह बन कर आया था उस का मा'मूल था कि वोह दौराने तकरार क़िब्ला रू हो कर बैठा करता था जब कि वोह शख़्स जो इ़ल्मो कमाल से आ़री था वोह क़िब्ले की त़रफ़ पीठ कर के बैठा करता था। इस के बा'द तमाम फ़ुक़हा और उ़लमा इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुवे कि येह शख़्स इस्तिक़्बाले क़िब्ला की बरकत से फ़क़ीह बना क्यूंकि बैठते वक़्त क़िब्ला रू हो कर बैठना सुन्नत है। नीज़ येह भी हो सकता है कि येह मुसलमानों की दुआ़ओं का असर हो कि कोई भी शहर मुत्तक़ी और परहेज़गार

www.dawateislami.net

लोगों से ख़ाली नहीं होता, हो सकता है कि इन नेक बन्दों में से किसी ने उस त़ालिबे इल्म के लिये दुआ की हो । लिहाज़ा एक त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि आदाब व सुनन के बारे में सुस्ती से काम न ले क्यूंकि जो शख़्स आदाब में सुस्ती करता है सुन्नतों से महरूम हो जाता है । जो सुन्नतों के मुआमले में सुस्ती से काम लेता है अन्देशा है कि वोह फ़राइज़ से महरूम हो जाए और जो बद नसीब फ़राइज़ में सुस्ती करता है वोह आख़िरत में महरूम रह जाता है। इस लिये एक त़ालिबे इल्म को चाहिये कि कसरत से नवाफ़िल पढ़ा करे और नमाज़ पढ़ते वक़्त ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का लिहाज़ रखे क्यूंकि येह चीज़ें उस के लिये तह़सीले इल्म में मुआ़विन साबित होंगी ।

शैख़े जलील ह़ज़रते सय्यिदुना नजमुद्दीन उ़मर बिन मुह़म्मद नस्फ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی अपने अश्आ़र में फ़रमाते हैं :

كُنْ لِّلْاَوَامِرِ وَالنَّوَاهِی حَافِظًا وَعَلَی الصَّلَاةِ مُوَاظِبًا وَّمُحَافِظًا

وَاطْلُبْ عُلُوْمَ الشَّرْعِ وَاجْهَدْ وَاسْتَعِنْ بِالطَّيِّبَاتِ تَصِرْ فَقِيْهًا حَافِظًا

وَاسْأَلِ الْهَكَ حِفْظَ حِفْظِكَ رَاغِبًا فِیْ فَضْلِهٖ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا

तर्जमा : (1).....अवामिर व नवाही के पाबन्द हो जाओ नमाज़ की पाबन्दी और ह़िफ़ाज़त करो ।

(2).....इल्मे दीन को ख़ूब मेह़नत व लगन से ह़ासिल करो इस सिलसिले में नेक आ'माल से मदद भी लेते रहो ताकि तुम एक बड़े फ़क़ीह बन सको ।

(3).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल चाहते हुवे उस से अपनी कुव्वते ह़ाफ़िज़ा की ह़िफ़ाज़त का सुवाल करते रहो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर ह़िफ़ाज़त फ़रमाने वाला है ।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना शैख़ नजमुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ही के येह अश्आ़र भी हैं :

اَطِيْعُوْا وَجِدُّوْا وَلَا تَكْسَلُوْا وَاَنْتُمْ اِلٰى رَبِّكُمْ تَرْجِعُوْنَ

وَلَا تَهْجَعُوْا فَخِيَارُ الْوَرٰى قَلِيْلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ

तर्जमा : (1)...फ़रमां बरदार रहो और मेहनत करते रहो, सुस्ती से काम मत लो, कि तुम्हें एक दिन अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ज़रूर लौटना है।

(2)...रातों को सोना छोड़ दो, मख़्लूक़ में से बेहतर वोह है जो रातों को बहुत कम सोता है।

एक त़ालिबे इल्म को चाहिये कि हर वक़्त किताबें अपने साथ रखे ताकि वक़्ते फ़ुरसत उन का मुत़ालआ़ किया जा सके। किसी दाना का क़ौल है :

مَنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ دَفْتَرٌ فِىْ كُمِّهٖ لَمْ تَثْبُتِ الْحِكْمَةُ فِىْ قَلْبِهٖ

तर्जमा : जिस की बग़ल में हर वक़्त किताब न हो उस के क़ल्ब में ह़िक्मत व दानाई रासिख़ नहीं हो सकती।

मुनासिब येह है कि कापी भी पास रखे जो मुफ़ीद बात सुने लिख ले और साथ में क़लमदान भी रखे ताकि सुनी हुई ख़ास बातें लिखने में दिक़्क़त न हो जैसा कि ऊपर ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़दीस में गुज़रा।

कुव्वते ह़ाफ़िज़ा को बढ़ाने वाली अश्या का बयान

मेहनत व पाबन्दी करना, कम खाना, नमाज़े तहज्जुद अदा करना और कुरआने पाक की तिलावत करना ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ करने के अस्बाब में सरे फ़ेहरिस्त हैं। कहा गया है कि "कुरआने पाक को देख कर पढ़ने से ज़ियादा कोई और चीज़ कुव्वते ह़ाफ़िज़ा को तेज़ नहीं करती।" वैसे भी कुरआने पाक देख कर पढ़ना ही अफ़्ज़ल है।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन ह़कीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْم ने अपने एक रफ़ीक़ को ख़्वाब में देख कर पूछा कि "तुम ने सब से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श किस चीज़ को पाया।" तो उन्हों ने फ़रमाया कि "कुरआने पाक को देख कर पढ़ना।"

त़ालिबे इल्म को चाहिये कि जब किताब उठाए तो येह वज़ीफ़ा पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ وَلَااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُوَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ الْعَزِيْزِعَدَدَكُلِّ حَرْفٍ كُتِبَ وَيُكْتَبُ اَبَدَالْآبِدِيْنَ وَدَهْرَالدَّاهِرِيْنَ

हर नमाज़ के बा'द येह वज़ीफ़ा पढ़ना चाहिये।

آمَنْتُ بِاللّٰهِ الْوَاحِدِالْاَحَدِالْحَقِّ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَكَفَرْتُ بِمَاسِوَاهُ

त़ालिबे इल्म को चाहिये कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करे कि बेशक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रह़मतुल्लिल आ़लमीन हैं।

एक शाइ़र (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي) फ़रमाते हैं :

شَكَوْتُ اِلٰى وَكِيْعٍ سُوْءَ حِفْظِى فَاَرْشَدَنِىْ اِلٰى تَرْكِ الْمَعَاصِى

فَاِنَّ الْحِفْظَ فَضْلٌ مِّنَ اِلٰهِى وَفَضْلُ اللّٰهِ لَايُهْدٰى لِعَاصِى

तर्जमा : (1).....मैं ने अपने उस्ताज़ सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَدِيْع से ज़ो'फ़े ह़ाफ़िज़ा की शिकायत की तो उन्हों ने मुझे गुनाहों से इजतिनाब करने की हिदायत की।

(2).....बेशक कुव्वते ह़ाफ़िज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक फ़ज़्ल है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़ज़्ल (कुव्वते ह़ाफ़िज़ा) गुनाहों का आ़दी नहीं पा सकता।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ मिस्वाक करना, शहद का इस्ति'माल रखना, गूंद ब मअ़ शकर इस्ति'माल करना, नहार मुंह 21 दाने किश्मिश खाना भी ह़ाफ़िज़े को क़वी करता और इन्सान को बहुत से अमराज़ से शिफ़ा देता है। नीज़ इन चीज़ों का खाना भी ह़ाफ़िज़े को क़वी करता है जो बलग़म और दीगर रुत़ूबात को कम करतीं हैं।

वोह चीज़ें जो निस्यान पैदा करती हैं उन में कसरत से गुनाह करना, दुन्यावी उमूर में हर वक़्त मग़मूम व मुतफ़क्किर रहना, ग़ैर ज़रूरी चीज़ों में मश्ग़ूलिय्यत रखना, दुन्या से मह़ब्बत रखना, बलग़म पैदा करने वाली अश्या का इस्ति'माल करना ख़ास त़ौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

हम पहले भी ज़िक्र कर चुके हैं कि त़ालिबे इल्म के लिये मुनासिब नहीं है कि वोह दुन्यावी उमूर के बारे में फ़िक्रो ग़म करे क्यूंकि दुन्यावी उमूर की फ़िक्र करना सरासर नुक़्सान देह है और इस का कोई फ़ाएदा नहीं क्यूंकि फ़िक्रे दुन्या दिल की सियाही का मूजिब होती है। जब कि फ़िक्रे आख़िरत तो नूरे क़ल्ब का बाइस होती है और इस नूर का असर नमाज़ में ज़ाहिर होता है कि दुन्या का ग़म उसे ख़ैर से मन्अ़ कर रहा होता है जब कि आख़िरत की फ़िक्र उसे कारे ख़ैर की त़रफ़ उभार रही होती है। येह भी याद रहे कि नमाज़ ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ अदा करना और तह़सीले इल्म में लगे रहना फ़िक्रो ग़म को दूर कर देता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना नस्र बिन ह़सन मुरग़ीनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی अपने क़सीदे में फ़रमाते हैं :

اِعْتَنِ نَصْرَبْنَ حَسَن بِكُلِّ عِلْمٍ يُّخْتَزَن

ذَاكَ الَّذِیْ يَنْفِی الْحَزَن وَغَيْرُهُ لَا يُؤْتَمَن

www.dawateislami.net

तर्जमा : (1).....ऐ नस्र बिन ह़सन हर ऐसे इल्म को सीखने का एहतिमाम करो जो कि महफ़ूज़ किया जा सके।

(2).....येही वोह अ़मल है जो फ़िक्रो ग़म को दूर करता है, इस के इ़लावा दीगर कामों का कोई ए'तिबार नहीं।

इमामे अजल्ल ह़ज़रते सय्यिदुना नजमुद्दीन उ़मर बिन मुह़म्मद नस्फ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने एक मरतबा अपनी उम्मे वलद लौंडी से फ़रमाया :

سَلَامٌ عَلٰى مَنْ تَيَّمَتْنِىْ بِطَرْفِهَا وَلَمْعَةِ خَدَّ يْهَا وَلَمْحَةِ طَرْفِهَا

سَبَتْنِىْ وَاَصْبَتْنِىْ فَتَاةٌ مَلِيْحَةٌ تَحَيَّرَتِ الْاَوْهَامُ فِى كُنْهِ وَصْفِهَا

فَقُلْتُ ذَرِيْنِىْ وَاعْذُرِيْنِىْ فَاِنَّنِى شُغِفْتُ بِتَحْصِيْلِ الْعُلُوْمِ وَكَشْفِهَا

وَلِىْ فِى طِلَابِ الْعِلْمِ وَالْفَضْلِ وَالتُّقٰى غِنًى عَنْ غِنَاءِ الْغَانِيَاتِ وَعَرْفِهَا

तर्जमा : (1).....सलाम उस पर कि जिस के रुख़्सारों की शादाबी और निगाहों की वजाहत ने मुझे गिरवीदा बना लिया है।

(2).....एक ख़ूब सूरत माहजबीं ने मुझे अपने इ़श्क़ में गिरिफ़्तार कर लिया है कि जिस के औसाफ़ की ह़क़ीक़त देख कर अ़क़्लें भी ह़ैरान हैं।

(3).....लेकिन मैं ने उस से कह दिया कि मुझे छोड़ दे और अपनी मह़ब्बत से मुझे आज़ाद कर दे क्यूंकि मैं अब इ़ल्म ह़ासिल करने और इस के ग़वामिज़ को इ़यां करने में मगन हूं।

(4).....इक्तिसाबे इ़ल्मो फ़ज़्ल और तक़्वा ने मुझे ह़सीनो जमील औ़रतों के नग़्मों और मस्ह़ूर कुन ख़ुश्बूओं से बे नियाज़ कर दिया है।

इ़ल्म को भूल जाने के अस्बाब में से चन्द येह हैं

तर धन्या खाना, खट्टे सेब खाना, फांसी चढ़े की त़रफ़ देखना, क़ब्र की तख़्तियां पढ़ना, ऊंटों की क़ित़ार के दरमियान से गुज़रना,

www.dawateislami.net

ज़िन्दा जूओं को यूंही ज़मीन पर छोड़ देना और गुद्दी पर पछने लगवाना येह तमाम बातें निस्यान पैदा करती हैं।

रिज़्क़ को ह़ासिल करने और रोकने और इसे बढ़ाने और घटाने वाली अश्या का बयान

रिज़्क़ में तंगी लाने वाले अस्बाब

एक त़ालिब के लिये ख़ूराक भी ज़रूरी चीज़ है। नीज़ उन चीज़ों की मा'रिफ़त भी ज़रूरी है जो रिज़्क़ की ज़ियादती और उ़म्र व सिह़्ह़त में इज़ाफ़े का मूजिब हों ताकि वोह अपने मक़ासिद के ह़ुसूल की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे। उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस मौज़ूअ़ पर बड़ी बड़ी और ज़ख़ीम कुतुब तह़रीर की हैं लेकिन मैं उन में से बा'ज़ बातों को यहां नक़्ल करता हूं।

ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا يَرُدُّ الْقَدَرَ اِلَّا الدُّعَاءُ وَلَا يَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ اِلَّا الْبِرُّ فَاِنَّ الرَّجُلَ لَيُحْرَمُ الرِّزْقَ بِالذَّنْبِ يُصِيْبُهٗ

"या'नी दुआ से तक़्दीर पलट जाती है और नेकियों से उ़म्र में इज़ाफ़ा होता है। बेशक बन्दा गुनाह की वज्ह से उस रिज़्क़ से भी मह़रूम हो जाता है जो उसे पहुंचना होता है।"(1)

इस ह़दीसे पाक से साबित हुवा कि गुनाहों का इर्तिकाब करना रिज़्क़ की मह़रूमी का सबब बनता है। ख़ुसूसन झूट जैसा गुनाह कि झूट बोलना फ़क़्र व मोह़ताजी को पैदा करता है।

1 .....المستدرك للحاكم، كتاب الدعاء والتكبير، باب: لا يرد القدر.....الخ، الحديث: ١٨٥٧، ج٢، ص١٦٢.

www.dawateislami.net

इस के बारे में तो ह़दीस शरीफ़ भी वारिद है। इसी त़रह़ सुब्ह़ के वक़्त सोना भी रिज़्क़ से मह़रूमी का सबब बनता है और कसरते नुव्वम की आ़दत भी फ़क़्र व मोह़ताजी को पैदा करती है। नीज़ कसरते नुव्वम से जहालत भी पैदा होती है।

एक शाइ़र कहता है :

سُرُوْرُالنَّاسِ فِی لُبْسِ اللِّبَاسِ وَجَمْعُ الْعِلْمِ فِی تَرْکِ النُّعَاسِ

أَلَیْسَ مِنَ الْخُسْرَانِ اَنَّ لَیَالِیًا تَمُرُّبِلَانَفْعٍ وَّتُحْسَبُ مِنْ عُمْرِی

तर्जमा : (1).....लोगों का सुरूर तो नए नए लिबास पहनने में है मगर इ़ल्म नींद को तर्क कर के ही ह़ासिल किया जा सकता है।

(2).....क्या बद बख़्ती की बात नहीं कि रातें बिग़ैर नफ़्अ़ गुज़र जाएं, ह़ालांकि इन का शुमार उ़म्र में हो रहा है।

एक और शाइ़र कहता है :

قُمِ اللَّیْلَ یَاهٰذَالَعَلَّکَ تَرْشُدُ اِلٰی کَمْ تَنَامُ اللَّیْلَ وَالْعُمْرُیَنْفُدُ

तर्जमा : ऐ त़ालिबे इ़ल्म ! रातों को उठ शायद कि तुझे हिदायत मिले तुम रात को कितना सोते हो ह़ालांकि तुम्हारी उ़म्र ख़त्म होती जा रही है।

रिज़्क़ में कमी करने वाले अस्बाब में येह अफ़्आ़ल भी शामिल हैं

नंगे सोना, बेह़याई से पेशाब करना, पहलू के बल टेक लगा कर खाना, दस्तरख़्वान पर गिरे हुवे रोटी के टुकड़े वग़ैरा उठाने में सुस्ती करना, प्याज़ और लहसन के छिलके जलाना, घर में रूमाल से झाड़ू देना, रात को झाड़ू देना, कूड़ा घर ही में छोड़ देना, मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के आगे चलना, मां बाप को उन के नाम से पुकारना,

www.dawateislami.net

किसी भी गिरी पड़ी चीज़ से दांतों का ख़िलाल करना, हाथों को गारे या मिट्टी से धोना, चौखट पर बैठना, दरवाज़े के एक हिस्से से टेक लगा कर खड़े होना, बैतुल ख़ला में वुज़ू करना, बदन ही पर कपड़े वग़ैरा सी लेना, चेहरे को लिबास ही से ख़ुश्क कर लेना, घर में मकड़ी के जालों को लगा रहने देना, नमाज़ में सुस्ती करना, नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद से निकलने में जल्दी करना, सुब्ह सवेरे बाज़ार जाना, देर गए बाज़ार से आना, फ़क़ीरों की मांगी हुई रोटियां ख़रीदना, अपनी औलाद के लिये बद दुआ करना, खाने के बरतन को साफ़ न करना और चराग़ को फूंक मार कर बुझाना येह तमाम चीज़ें फ़क्र व मोहताजी पैदा करती हैं। येह सारी बातें मुख़्तलिफ़ अहादीस से माख़ूज़ हैं।

इसी त़रह़ चन्द उमूर और भी हैं जो फ़क्र व मोहताजी का सबब बनते हैं। जैसे टूटे हुवे क़लम को फिर दोबारा बांध कर लिखना, टूटे हुवे कंघे का इस्ति'माल करना, वालिदैन के लिये दुआए ख़ैर को छोड़ देना, इमामा बैठ कर बांधना, शलवार खड़े हो कर पहनना, कन्जूसी करना, सुस्ती व काहिली करना और नेक आ'माल में टाल मटोल करना।

रिज़्क़ में इज़ाफ़ा करने वाले अस्बाब

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِسْتَنْزِلُوا الرِّزْقَ بِالصَّدَقَةِ "या'नी सदक़ात की कसरत से रिज़्क़ त़लब करो।"(1)

अ़लस्सुब्ह बेदार होना ने'मतों में इज़ाफ़े का बाइस बनता है। ख़ुसूसन इस से रिज़्क़ में इज़ाफ़ा होता है। इसी त़रह़ ख़ुश ख़ती रिज़्क़ की कुंजियों में से एक कुंजी है और ख़न्दा पेशानी व ख़ुश कलामी भी रिज़्क़ को बढ़ाती है।

1 .....الكامل فى ضعفاء الرجال،حبيب بن ابى حبيب،ج٣،ص٣٢٦.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बारे में आता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : घर और बरतनों को साफ़ सुथरा रखना मूजिबे ग़ना है। नीज़ रिज़्क़ की वुस्अ़त का क़वी तरीन ज़रीआ़ येह है कि इन्सान नमाज़ को ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, ता'दीले अरकान का लिह़ाज़ करते हुवे और तमाम वाजिबात और सुननो आदाब की पूरी त़रह़ रिआ़यत करते हुवे अदा करे।

हुसूले रिज़्क़ के लिये नमाज़े चाश्त पढ़ना बेह़द मुफ़ीद और मुजर्रब है। इसी त़रह़ **सूरए वाक़िआ़** को ख़ुसूसन रात में पढ़ना नीज़ सूरए मुल्क, सूरए मुज़्ज़म्मिल, सूरए लैल और सूरए अलम नश्रह़ की तिलावत करते रहना भी फ़राख़िये रिज़्क़ का सबब है।

इसी त़रह़ मस्जिद में अज़ान से पहले पहुंचना, हमेशा बा वुज़ू रहना, सुन्नते फ़ज्र और वित्र को घर पर अदा करना और वित्र के बा'द कोई दुन्यावी कलाम न करना, औ़रतों के पास ज़रूरत से ज़ियादा न बैठना, ग़ैर मुफ़ीद और लग़्व कलाम से इजतिनाब करना रिज़्क़ में इज़ाफ़े का मूजिब होता है। जैसा कि किसी ने कहा है कि مَنِ اشْتَغَلَ بِمَالَایَعْنِیْہِ یَفُوْتُہٗ مَایَعْنِیْہِ "या'नी जो ग़ैर ज़रूरी कामों में मश्ग़ूल हो जाए उस से ज़रूरी काम तक छूट जाते हैं।"

किसी का क़ौल है कि "जब तुम किसी शख़्स को बहुत ज़ियादा बोलते देखो तो फिर उस के मजनून होने का भी यक़ीन कर लो।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : اِذَاتَمَّ الْعَقْلُ نَقَصَ الْکَلَامُ "या'नी जब अ़क़्ल कामिल हो जाती है तो इन्सान का कलाम भी मुख़्तसर हो जाता है।"

www.dawateislami.net

ख़ुद मैं ने इस मौज़ूअ़ पर कहा है :

اِذَاتَمَّ عَقْلُ الْمَرْءِ قَلَّ كَلَامُهٗ وَأَيْقِنْ بِحُمْقِ الْمَرْءِ اِنْ كَانَ مُكْثِرًا

तर्जमा : जब अ़क़्ल कामिल हो जाती है तो बन्दे की गुफ़्तगू भी कम हो जाती है और जब किसी बातूनी को देखो तो फिर उस की ह़माक़त का यक़ीन कर लो।

एक और शाइ़र कहता है :

اَلنُّطْقُ زَيْنٌ وَّالسُّكُوْتُ سَلَامَةٌ فَاِذَانَطَقْتَ فَلَا تَكُنْ مِّكْثَارًا

مَااِنْ نَّدِمْتُ عَلٰى سُكُوْتِيْ مَرَّةً وَلَقَدْنَدِمْتُ عَلَى الْكَلَامِ مِرَارًا

तर्जमा : (1).....बोलना ज़ीनत है और ख़ामोशी सलामती लिहाज़ा जब बोलने का इरादा करो तो फिर ज़रूरत से ज़ियादा कलाम मत करो।

(2).....मैं ने कभी ख़ामोशी पर नदामत नहीं उठाई लेकिन बोलने पर मुझे बारहा नदामत उठानी पड़ी।

वोह वज़ाइफ़ जो रिज़्क़ को बढ़ाते हैं उन में से चन्द एक येह हैं

﴿1﴾.....रोज़ाना सुब्हे सादिक़ के वक़्त नमाज़े फ़ज्र से क़ब्ल येह कलिमात 100 बार पढ़ना :

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ،سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ،اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

﴿2﴾.....हर रोज़ सुब्हो शाम 100, 100 मरतबा येह कलिमात पढ़ना :

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ

www.dawateislami.net

﴿3﴾.....रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े मग़रिब के बा'द इन कलिमात को 33, 33 मरतबा पढ़ना :

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ،سُبْحَانَ اللّٰهِ،لَااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ

﴿4﴾.....नमाज़े फ़ज्र के बा'द 40 बार इस्तिग़फ़ार करना।

﴿5﴾.....इन कलिमात की कसरत करना :

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

﴿6﴾.....सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कसरत करना।

﴿7﴾.....जुमुआ के दिन सत्तर मरतबा इन कलिमात को पढ़ना :

اَللّٰهُمَّ اَغْنِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاکْفِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ

﴿8﴾.....इन कलिमात को हर रोज़ सुब्हो शाम पढ़ना :

اَنْتَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ،اَنْتَ اللّٰهُ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ،اَنْتَ اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، اَنْتَ اللّٰهُ خَالِقُ الْخَيْرِ وَالشَّرِّ،اَنْتَ اللّٰهُ خَالِقُ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ،عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، عَالِمُ السِّرِّ وَاَخْفٰى،اَنْتَ اللّٰهُ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ،اَنْتَ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ،وَاِلَيْهِ يَعُوْدُ كُلُّ شَیْءٍ،اَنْتَ اللّٰهُ دَيَّانُ يَوْمِ الدِّيْنِ لَمْ تَزَلْ وَلَا تَزَالُ،اَنْتَ اللّٰهُ لَااِلٰهَ اِلَّااَنْتَ، اَنْتَ اللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ،اَنْتَ اللّٰهُ لَااِلٰهَ اِلَّااَنْتَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ،اَنْتَ اللّٰهُ لَااِلٰهَ اِلَّااَنْتَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ،لَااِلٰهَ اِلَّااَنْتَ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ،لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَافِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَالْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

www.dawateislami.net

उम्र में इज़ाफ़ा करने वाले अस्बाब

वोह चीज़ें जो उम्र में ज़ियादती का सबब बनती हैं येह हैं :

नेकी करना, मुसलमानों को ईज़ा न देना, बुज़ुर्गों का अदबो एह़तिराम करना, सिलए रेह़्मी करना, हर रोज़ सुब्ह़ो शाम इन कलिमात को 3-3 बार पढ़ना :

سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْ ءَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا،وَزِنَةَ الْعَرْشِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ

وَلَااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُمِلْ ءَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ الْعَرْشِ.

बिला ज़रूरत हरे भरे दरख़्तों को काटने से एह़तिराज़ करना, वुज़ू को कामिल त़रीक़े से सुननो आदाब का लिह़ाज़ रखते हुवे करना, नमाज़ को ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से पढ़ना, एक ही एह़राम से ह़ज व उ़मरह अदा करना या'नी ह़ज्जे क़िरान करना, अपनी सिह़्ह़त का ख़याल रखना। येह तमाम बातें उ़म्र में ज़ियादती का सबब बनती हैं।

त़ालिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कुछ न कुछ इल्मे तिब्ब भी पढ़े कम अज़ कम उन अह़ादीस का ज़रूर मुत़ालआ़ करना चाहिये जो तिब्ब के बारे में वारिद हुईं जिन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम अबुल अ़ब्बास मुस्तग़फ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِي ने अपनी किताब तिब्बे नबवी में जम्अ़ किया है। يَجِدْهُ مَنْ يَّطْلُبُهٗ या'नी जो इसे तलाश करेगा वोह इसे ज़रूर पा लेगा।

وَالْحَمْدُلِلّٰهِ عَلَى التَّمَامِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍاَفْضَلِ الرُّسُلِ الْكِرَامِ

وَآلِهٖ وَصَحْبِهِ الْاَيِمَّةِ الْاَعْلَامِ عَلٰى مَمَرِّالدُّهُوْرِوَتَعَاقُبِ الْاَيَّامِ

(آمین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	مکتبة المدینة ١٤٣٠ھ
ترجمۂ قرآن کنزالایمان	اعلیحضرت امام احمد رضا خان رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی ١٣٤٠ھ	مکتبة المدینة ١٤٣٠ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل لبخاری رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی٢٥٦ھ	دارالکتب العلمیة ١٤١٩ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمة اللّٰہ علیہمتوفّٰی ٢٦١ھ	دارابن حزم بیروت١٤١٩ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمة اللّٰہ علیہمتوفّٰی ٢٧٩ھ	دارالفکربیروت١٤١٤ھ
سنن ابن ماجه	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجه رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی٢٧٣ھ	دارالمعرفة ١٤٢٠ھ
المسند	امام احمد بن حنبل رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٢٤١ھ	دارالفکربیروت١٤١٤ھ
المصنف	امام عبداللّٰہ بن محمدابی شیبه رحمة اللّٰہ علیہمتوفّٰی ٢٣٥ھ	دار الفکر بیروت١٤١٤ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٣٦٠ھ	داراحیاء التراث١٤٢٢ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٣٦٠ھ	دارا لکتب العلمیة ١٤٢٠ھ
فردوس الاخبار	أبوشجاع شیرویه بن شهردارالدیلمی رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی٥٠٩ھ	دارالفکربیروت١٤١٨ھ
کشف الخفاء	امام شیخ اسماعیل بن محمد رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی ١١٦٢ھ	دارا لکتب العلمیة١٤٢٢ھ
حلیة الاولیاء	امام حافظ ابو نعیم اصفهانی رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٤٣٠ھ	دارالکتب العلمیه١٤١٨ھ
تاریخ بغداد	حافظ ابوبکراحمدبن علی خطیب بغدادی رحمة اللّٰہ علیہمتوفّٰی٤٦٣ھ	دارالکتب العلمیه١٤١٧ھ
المقاصد الحسنه	علامه شیخ محمد عبدالرحمن سخاوی رحمة اللّٰہ علیہمتوفّٰی ٩٠٢ھ	دارالکتاب العربی١٤٢٥ھ
المستدرك	امام محمد بن عبد اللّٰہ حاکم رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی٤٠٥ھ	دارالمعرفة ١٤١٨ھ
کنزالعمال	علامه علی متقی بن حسام الدین هندی رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی٩٧٥ھ	دارالکتب العلمیه١٤١٩ھ
الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمدعبداللّٰہ بن عدی جرجانی رحمة اللّٰہ علیہمتوفّٰی٣٦٥ھ	دارالکتب العلمیه١٤١٨ھ
جامع بیان العلم وفضله	امام ابوعمریوسف بن عبداللّٰہ بن عبدالبرقرطبی مالکی رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی٤٦٣ھ	دارالکتب العلمیه١٤٢٨ھ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत

(उर्दू कुतुब)

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَدُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़काम (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़तो त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

(अ़रबी कुतुब)

17 ता 21 .....(جَدُّ الْمُمْتَارعَلٰى رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس)

(कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650, 483)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى (कुल सफ़ह़ात : 458)

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)

25... اَلزُّمْزُمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़ह़ात : 93)

26..... اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِى (कुल सफ़ह़ात : 46)

www.dawateislami.net

27.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़हात : 77) 28.....اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़हात : 70)

29.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़हात : 60)

30.....जद्दुल मुमतार जिल्द 6, 7 (कुल सफ़हात : 722, 723)

शो'बए तराजिमे कुतुब

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़हात : 896)

02.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرِفِىْ حُكْمِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِ) (कुल सफ़हात : 112)

03.....सायए अर्श किस किस को मिलेगा.....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِى الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 28)

04.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़हात : 142)

05.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِى الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़हात : 54)

06.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِىْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़हात : 743)

07.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَاالْاِمَامِ اَعْظَمعَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़हात : 46)

08.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 853)

09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 1012)

10.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّورعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़हात : 144)

11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़हात : 85)

12.....राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़हात : 102)

13.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम हिस्सए अव्वल) (कुल सफ़हात : 412)

14.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम, हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 413)

15.....इह्याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़हात : 641)

16.....हिकायतें और नसीहतें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़हात : 649)

17.....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़हात : 122)

18.....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़हात : 122)

19.....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 102)

20.....आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़हात : 300)

21.....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِى الدِّيْن) (कुल सफ़हात : 63)

www.dawateislami.net

22....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़हात : 36)

23....बेटे को नसीहत (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़हात : 64)

24....اَلدَّعْوَة اِلَى الْفِكْر (कुल सफ़हात : 148)

25....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़हात : 98)

26....इस्लाहे आ'माल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِيْقَةُالنَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़हात : 866)

27....आशिक़ाने हदीस की हिकायात (اَلرِّحْلَة فِى طَلَبِ الْحَدِيْث) (कुल सफ़हात : 105)

28....इह्याउल उ़लूम जिल्द अव्वल (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 1124)

29..... अल्लाह वालों की बातें जिल्द 2 (कुल सफ़हात : 217)

30..... क़ूतुल क़ुलूब जिल्द अव्वल (कुल सफ़हात : 826)

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشية ضياء الاصباح (कुल सफ़हात : 241)

02....الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية (कुल सफ़हात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه (कुल सफ़हात : 325)

04....اصول الشاشى مع احسن الحواشى (कुल सफ़हात : 299)

05....نورالايضاح مع حاشيةالنورو الضياء (कुल सफ़हात : 392)

06....شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد (कुल सफ़हात : 384)

07....الفرح الكامل على شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 158)

08....عناية النحو فى شرح هداية النحو (कुल सफ़हात : 280)

09....صرف بهائى مع حاشية صرف بنائى (कुल सफ़हात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़हात : 241)

11....مقدمةالشيخ مع التحفةالمرضية (कुल सफ़हात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (कुल सफ़हात : 175)

13....نحو ميرمع حاشية نحو منير (कुल सफ़हात : 203)

14....تلخيص اصول الشاشى (कुल सफ़हात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़हात : 288)

16....نصاب اصولِ حديث (कुल सफ़हात : 95)

17....نصاب التجويد (कुल सफ़हात : 79)

18....المحادثة العربية (कुल सफ़हात : 101)

19....تعريفاتِ نحوية (कुल सफ़हात : 45)

www.dawateislami.net

20....خاصیات ابواب (कुल सफ़हात : 141) 21....شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़हात : 343) 23....نصاب المنطق (कुल सफ़हात : 168)

24....انوار الحدیث (कुल सफ़हात : 466) 25....نصاب الادب (कुल सफ़हात : 184)

26....تفسیر الجلالین مع حاشیۃانوار الحرمین (कुल सफ़हात : 364)

शो'बए तख़रीज

01....सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 ता 6, कुल सफ़हात : 1360)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़हात : 1304)

04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1332)

05....अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)

06....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 244)

07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात 312)

08....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142) 09....अच्छे माह़ोल की बरकतें (कुल सफ़हात : 56)

10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679 11....इल्मुल कुरआन (कुल सफ़हात : 244)

12....सवानह़े करबला (कुल सफ़हात : 192) 13....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)

14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64) 15....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़हात : 246)

16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170) 17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)

18 ता 24....फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से) 25.... ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)

26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249) 27....जहन्नम के ख़तरात (कुल सफ़हात : 207)

28....करामाते सहाबा (कुल सफ़हात : 346) 29....अख़्लाकुस्सालिहीन (कुल सफ़हात : 78)

30....सीरते मुस्तफ़ा (कुल सफ़हात : 875) 31....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़हात : 133)

32....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ (कुल सफ़हात : 59)

33....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़हात : 470)

34....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़हात : 49)

35....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़हात : 16)

36...फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़हात : 20)

www.dawateislami.net

शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा

01....ह़ज़रते त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 56)
02....ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 72)
03....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 89)
04....ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 60)
05....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 132)
06....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 720)
07....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 864)
08....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द दुवुम (कुल सफ़ह़ात : 855)

शो'बए इस्लाही कुतुब

01....ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)
02....तकब्बुर (कुल सफ़ह़ात : 97)
03....40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 87)
04....बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57) 05....क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़ह़ात : 115)
06....नूर का खिलोना (कुल सफ़ह़ात : 32) 07....आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 49)
08.... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164) 09....इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें? (कुल सफ़ह़ात : 32)
10....रियाकारी (कुल सफ़ह़ात : 170) 11....क़ैमे ज़िन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 262)
12....ज़र्र के अह़काम (कुल सफ़ह़ात : 48) 13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़ह़ात : 150) 15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)
16....तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़ह़ात : 187) 17....कामयाब त़ालिबे इल्म कौन? (कुल सफ़ह़ात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32) 19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)
20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96) 21....फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़ह़ात : 215) 23...नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़ह़ात : 160) 25....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश(कुल सफ़ह़ात : 200) 27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

www.dawateislami.net

28....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े (कुल सफ़ह़ात : 696) 29....फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

30.... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़ह़ात : 408) 31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

33....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

34....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 590)

35....ह़ज व उ़मरह का मुख़्तसर त़रीक़ा (कुल सफ़ह़ात : 48)

36....जल्दबाज़ी के नुक़्सानात (कुल सफ़ह़ात : 168)

37....ह़सद (कुल सफ़ह़ात : 97)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....क़सम के अह़काम 02....जल्दबाज़ी 03....फ़ैज़ाने इस्लाम

04....फ़ैज़ाने दुआ (ग़ार के क़ैदी) 05....बुख़्ल

﴾शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴿

01....सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़ह़ात : 49)

02....मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़ह़ात : 48)

03....इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें, ह़िस्सा दुवुम) (कुल सफ़ह़ात : 32)

04....25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 33)

05....दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

06....वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इ़लाज (कुल सफ़ह़ात : 48)

07....कफ़न की सलामती (कुल सफ़ह़ात : 33)

08....आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

09....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िक्मत (कुल सफ़ह़ात : 48)

10....क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

11....पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़ह़ात : 48)

12....गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़ह़ात : 55)

13....दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

www.dawateislami.net

14....गुमशुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)

15....मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)

16....जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)

17....मैं हयादार कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)

18....ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)

19....मुख़ालफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)

20....मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)

21....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त (1) (कुल सफ़हात : 49)

22....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त (2) (कुल सफ़हात : 48)

23....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़हात : 86)

24...तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त 4) (कुल सफ़हात : 49)

25....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त 5) (कुल सफ़हात : 102)

26...हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें (तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त 6) (कुल सफ़हात : 47)

27....मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)

28....बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)

29....अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

30....हैरेइंची की तौबा (कुल सफ़हात : 32) 31....नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)

32....मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32) 33....ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)

34....फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़हात : 32) 35....सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)

36....क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24) 37....फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)

38....ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा (कुल सफ़हात : 32) 39....मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

40....क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)

www.dawateislami.net

41....सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)

42....क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)

43....म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)

44....नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32) 45....आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)

46....वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32) 47....बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)

48....इग़्वाशुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32) 49....मैं नेक कैसे बना? (कुल सफ़हात : 32)

50....शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना? (कुल सफ़हात : 32)

51....बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

52....ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)

53....नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

54...मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया? (कुल सफ़हात : 32)

55....चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)

56....नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

57....सीनेमा घर का शैदाई (कुल सफ़हात : 32)

58....गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब, क़िस्त पन्जुम (कुल सफ़हात : 23)

59....डान्सर ना'त ख़्वान बन गया (कुल सफ़हात : 32)

60....गुलूकार कैसे सुधरा? (कुल सफ़हात : 32)

61....नशे बाज़ की इस्लाह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)

62....काले बिच्छू का ख़ौफ़ (कुल सफ़हात : 32)

63...ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा? (कुल सफ़हात : 32)

64....अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्ची (कुल सफ़हात : 32)

65....बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)

66....चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....अजनबी का तोह़फ़ा 02....जेल का गवय्या

www.dawateislami.net

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133027

MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❀ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❀ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❀ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❀ ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net